गुल्लीवर की यात्राये

भाग १



इंडियन प्रेस, किशोर सीरीज

गुलीवर की यात्राएँ

भाग १

जोन आथन स्वीफ्ट के Gulliver's Travels का

हिन्दी अनुवाद

अनुवादक

शिव कान्त अग्निहोत्री

संपादक

डा० नवलविहारी मिश्र, बी० एस-सी०

एम० बी० बी० एस०

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, (पब्लिकेशन्स) प्राइवेट लि०

इलाहाबाद

१९६१

प्रकाशक

बी० एन० माथुर

इंडियन प्रेस, (पब्लिकेशन्स) प्राइवेट लिमिटेड

इलाहाबाद

गुलीवर की यात्राएँ

लिलिपुत की समुद्री यात्रा

(१)

मेरे पिता की एक छोटी रियासत नार्टिघमशायर में थी। मैं अपने पाँच भाइयों में तीसरा था। पिता ने मुझे चौदह वर्ष की अवस्था में कैम्ब्रिज के इमैनुअल कालेज में भेजा। वहाँ मैं तीन वर्ष तक रहा और गम्भीर अध्ययन प्रारम्भ किया। परन्तु सामान्य स्थिति एवं न्यून साधनों के कारण मेरा अध्ययन असम्भव सा प्रतीत होने लगा। बाध्य होकर मुझे लन्दन के प्रख्यात शल्य-चिकित्सक श्री जेम्स वेटस के पास उम्मीदवार होकर रहना पड़ा। चार वर्ष तक मैं वहाँ रहा। इसी काल में मेरे पिता कभी-कभी कुछ धन, मेरे पास भेज देते थे। इसे मैं नाविक विद्या तथा गणित के अध्ययन में व्यय करता था। यह विषय पर्यटन के लिए आवश्यक होते हैं। मुझे यह विश्वास था कि मेरे भाग्य में यही बदा है। मैं श्री वेटस के पास से अपने पिता के पास चला आया। पिता चाचा व अन्य सम्बधियों की सहायता से मुझे चालीस पौंड वार्षिक लीडेन में रहकर निर्वाह के लिए देने का वचन दिया गया। यहाँ मैंने दो वर्ष सात माह तक चिकित्सा-शास्त्र का अध्ययन किया, क्योंकि लम्बी यात्राओं में यह अत्यन्त उपयोगी होती है।

लीडेन की वापसी के पश्चात् शीघ्र ही मेरे शुभचिन्तक आचार्य श्री वेटस ने शल्य-चिकित्सक के रूप में मेरी सिफारिश स्वालों नामक जहाज के कप्तान अब्राहम पेनेल कमांडर से कर दी। कमांडर के साथ मैं तीन वर्ष छः महीने तक रहा, और लेवेन्ट तथा अन्य प्रदेशों की एक या दो यात्राएँ उसके साथ कीं। जब मैं वापस लौटा तो लन्दन में बसने का निर्णय किया। इसके लिए श्री वेटस ने मुझे प्रेरणा दी थी और उन्होंने कई रोगियों से मेरी सिफारिश तथा प्रशंसा भी की। ओल्ड ज्यूरी के एक छोटे से मकान का एक भाग मैंने किराये पर ले लिया। लोगों के परामर्श से मैंने अपनी स्थिति सुधारने के उद्देश्य से न्यूगेट स्ट्रीट के मोजे के व्यापारी श्री एडमंड वर्टन की दूसरी पुत्री श्रीमती वर्टन से विवाह कर लिया और दहेज में मुझे चार सौ पौंड प्राप्त हुए।

परन्तु दो वर्ष पश्चात् मेरे शुभचिंतक आचार्य श्री वेटस की मृत्यु और सहायकों की कमी होने के कारण मेरे व्यापार में मंदी आ गई। बात यह थी कि मैं अपने पेशे में उन अनुचित उपायों का आश्रय लेने से इनकार करता था, जो अन्य डाक्टर करते थे। अतः मैंने अपनी स्त्री तथा अन्य शुभचिन्तकों से परामर्श लेकर पुनः समुद्री यात्रा करना निश्चित किया। दो जहाजों में शल्य-चिकित्सक रहकर मैंने छः वर्ष तक ईस्ट और वेस्ट इंडीज की कई समुद्री यात्राएँ कीं। फलस्वरूप मेरी आर्थिक स्थिति में उन्नति हुई। मैं

अपने अवकाश के समय में प्राचीन और अर्वाचीन युग के श्रेष्ठ लेखकों की रचनाओं का अध्ययन करता था। मेरे पास सदैव ही पुस्तकों का अच्छा संग्रह रहता था। जब मैं समुद्रतट पर उतरता तो वहाँ के निवासियों के रीति-रिवाज, स्वभाव तथा आचार-विचारों का निरीक्षण करता और वहाँ की भाषा सीखता था। जहाँ तक मुझे याद है, इस अनुभवों से मुझे अत्यन्त सुविधा मिली।

अन्तिम समुद्री यात्रा मेरे लिए अशुभ सिद्ध हुई। अब मैं समुद्र से थक और ऊब चुका था। इसी लिए मैंने घर पर अपनी स्त्री तथा परिवार के साथ रहने का विचार किया। मैं ओल्ड ज्वेरी से फेटेरलेन चला आया तथा वहाँ से बेपिग इस आशा में आया कि मुझे नाविकों में काम मिल जायेगा। परन्तु कोई लाभ न हुआ। तीन वर्ष तक मैं इस आशा में रहा कि स्थिति में सुधार होगा। तत्पश्चात् मैंने एन्टीलोप नामक जहाज के स्वामी कैप्टेन विलियम पियार्ड का लाभकारी प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। वे साउथ सीज (दक्षिणी सागर) की ओर यात्रा कर रहे थे। हमने ब्रिस्टल से, ४ मई सन् १६९९ ई० को अपनी यात्रा प्रारम्भ की। हम लोगों की यह समुद्री यात्रा पहले बहुत सफल रही।

किन्हीं कारणों से यह उचित न होगा कि मैं पाठकों को अपनी इन समुद्री यात्राओं के साहसिक कार्यों के विवरणों को बतला कर उन्हें कष्ट दूँ। इतना कहना ही पर्याप्त होगा कि यहाँ से ईस्ट इंडीज की समुद्री यात्रा में, भयानक तूफान

में हम लोगों की वानडी-मेन्स-लैण्ड के उत्तर-पश्चिम में ढकेल दिया। जब यन्त्रों द्वारा गणना की गई तो देखा गया कि हम लोग ३० डिग्री दो मिनट अक्षांश दक्षिण में हैं। हम नाविकों में से बारह व्यक्ति अत्यन्त श्रम तथा दूषित भोजन के कारण मर गये। शेष व्यक्ति अत्यन्त निर्बल थे। इस प्रदेश में, नवम्बर में ही वसन्त ऋतु होती है, इसी मास की पाँच तारीख थी। कोहरे से आच्छादित वातावरण में नाविकों ने जहाज से पचास कदम की दूरी पर एक चट्टान को देखा। हवा इतनी जोर से चल रही थी कि हम लोग सीधे उसी से टकरा कर बिखर गये। नाविकों में से छः व्यक्तियों ने चट्टान तथा डूबते हुए जहाज से मुक्ति पाने के लिए एक नाव उतारी, उसी में मैं भी था। जहाज पर ही हम लोग थकावट से चूर हो चुके थे। नाव को भी, हममें जब तक शक्ति रही खेते रहे। तथा प्रायः तीन लीग की दूरी तय की। परन्तु इसके बाद हम लोगों ने अपने को लहरों की दया पर छोड़ दिया। आध घण्टे में ही एकाएक उत्तर की ओर से एक तूफान आया और नाव उलट गई। हममें कुछ तो चट्टान से टकराकर समुद्र में जा पड़े थे। कुछ डूबते जहाज में फँस गये थे। हम लोग नाव में छः व्यक्ति थे। मैं नहीं बता सकता कि मेरे सिवाय अन्य लोगों का क्या हुआ। भाग्य जिधर ले गया, उधर मैं तैरता रहा। लहरें तथा वायु के झोंके मुझे इधर-उधर फेंकते रहे। मैं अक्सर अपने पैरों से थाह लेता था। परन्तु धरातल का कोई पता न था। जब मैं पूर्णतया थक गया और इस योग्य

न रहा कि लहरों और वायु से युद्ध करूँ तो अकस्मात् मुझे थाह मिल गई। इस समय तूफान काफी शान्त हो गया था। ढाल इतनी कम थी कि किनारा पाने में मुझे केवल एक ही मील तक पानी में पैदल चलना पड़ा। उस समय मेरे अनुमान से रात के आठ बजे थे। फिर आधा मील तक मैं और आगे गया। परन्तु वहाँ मुझे आदमी और मकान का चिह्न तक न मिला। यह भी हो सकता है कि मैं अधिक निर्बलता के कारण उन्हें देख न पाया हूँ। मैं बहुत थक चुका था। जहाज बिछुड़ने से पहले मैंने आधी पाइन्ट शराब पी ली थी। ऋतु भी काफी गर्म थी। इसलिए मुझे नींद बुरी तरह सताने लगी। मैं छोटी और नरम घास पर लेट गया। जहाँ तक मुझे याद है मैं अपने जीवन में उतनी गहरी नींद कभी नहीं सोया था। नौ घन्टे बाद जब मैं जगा तो दिन निकल आया था। मैंने उठने का प्रयत्न किया परन्तु हिल तक न पाया। मैं अपनी पीठ के बल लेटा था। मेरे हाथ-पैर, हर तरफ से जमीन पर कस कर बाँध दिये गये थे। मेरे घने और लम्बे बाल भी उसी भाँति बँधे हुए थे। बगल से लेकर जाँघ तक सारे शरीर पर मैंने छोटी-छोटी पट्टियाँ-सी बँधी पाईं। मैं केवल ऊपर की ओर देख सकता था। सूर्य गरम होने लगा था। उसकी रोशनी मेरी आँखों को परेशान कर रही थी। मैंने अपनी ओर एक कोलाहल-सा सुना। परन्तु जिस दशा में मैं लेटा था, आकाश के अतिरिक्त कुछ न देख सकता था। मुझे आभास हुआ कि कोई जीवधारी

मेरे बायें पैर पर रेंग रहा है। धीरे-धीरे मेरी छाती की ओर वह बढ़ रहा है, और लगभग मेरी ठुड्डी के पास आ गया है। अधिक से अधिक मैं जितना अपनी आँखें नीचे की ओर घुमा सकता था उतना घुमाकर, देखने पर मैंने छः इंच का एक मनुष्य देखा। वह हाथ में धनुष और पीठ पर तरकस कसे हुए था। इसी बीच में उसी तरह के चालीस और व्यक्ति उस पहले वाले व्यक्ति के पीछे दिखाई पड़े। मैं अत्यन्त अचम्भे में था। और इतनी जोर से चिल्लाया कि वे लोग डर कर पीछे की ओर भागे। बाद में मुझे बताया गया कि उनमें से बहुतों को मेरे ऊपर से जमीन पर कूदने में चोटें आई थीं। फिर भी वे सब शीघ्र ही लौट पड़े। उनमें से एक ने मेरे चेहरे को अच्छी तरह से देखने के लिए अपने हाथ ऊपर उठाये हुए आने का प्रयत्न किया। तेज और साफ आवाज में वह "हेकना देगुल" कहकर चिल्लाया। अन्य व्यक्तियों ने भी कई बार वही शब्द दुहराये। परन्तु मैं तब तक यह न समझ पाया कि इसका क्या तात्पर्य था। अत्यन्त व्यग्रता के साथ, जिसे पाठक स्वयं अनुभव कर सकते हैं मैं लेटा रहा। मेरा बायाँ हाथ पतली रस्सियों द्वारा खूँटियों से बँधा हुआ था। एक झटका देने से भाग्यवश वे उखड़ गईं और मेरा हाथ छूट गया। सिर उठाने का प्रयत्न करने पर मुझे इस बात का पता चला कि किस रीति से उन्होंने मुझे बाँध रक्खा था। मैंने झटके से सिर उठाया, जिससे मुझे असह्य पीड़ा हुई। क्योंकि मेरे बाल भी डोरियों द्वारा खूँटियों से बँधे हुए थे। फिर भी मैं इस योग्य

हो गया कि अपने सर को दो इंच घुमा सकता था। परन्तु वे जीवधारी फिर दौड़ पड़े। इससे पूर्व कि मैं उन्हें पकड़ सकूँ, वहाँ अत्यन्त तेज और जोर का चीत्कार हुआ। कुछ देर बाद जब वातावरण शान्त हुआ तो मैंने एक व्यक्ति को जोर से "टोलगोफोनेक" चिल्लाते हुए सुना। फौरन ही मुझे आभास हुआ कि सैकड़ों तीर मेरे बायें हाथ के ऊपर छोड़े गये हों। जो कि सुइयों की भाँति चुभ रहे थे। जिस प्रकार हम लोग योरप में बमों की वर्षा करते हैं उसी प्रकार आकाश से गोलियों की बौछार भी हुई। मेरा अनुमान है उनमें से बहुत-सी गोलियाँ मेरे शरीर पर अवश्य लगी होंगी। परन्तु मुझे उनका आभास न हुआ। कुछ गोलियाँ मेरे शरीर पर भी गिरीं। परन्तु शीघ्र ही मैंने बायें हाथ से चेहरा ढक लिया। गोलियों की यह बौछार जब कुछ समाप्त हुई तो मैं दुःख और पीड़ा से कराह रहा था। जब मैंने अपना शरीर मुक्त करने के लिए फिर प्रयत्न किया तो उन लोगों ने दुबारा पहले से अधिक तीव्र शस्त्रों की वर्षा की। कुछ लोगों ने भालों द्वारा मुझे जमीन पर लिटाये रखने का प्रयत्न किया। सौभाग्यवश मैं चमड़े का कोट पहने था। जिसमें शस्त्र भिद न सकते थे। मैंने शान्त लेटे रहने में ही बुद्धिमत्ता समझी, और रात तक इसी तरह पड़े रहने का निश्चय किया। मेरा बायाँ हाथ तो ढीला था ही। इसीलिए रात में मैं अपने को सरलता से मुक्त कर सकता था। रही वहाँ के निवासियों की बात तो मुझे विश्वास था कि उन लोगों की बड़ी से बड़ी फौज के विरुद्ध मैं स्वयं ही काफी था। यदि वे सब

इसी आकृति क हों जैसा कि मैंने उन्हें देखा था। परन्तु भाग्य ने इसके विपरीत सिद्ध किया। जब लोगों ने देखा कि मैं शान्त हूँ तो उन्होंने फिर कोई तीर नहीं चलाया। उनके कोलाहल के द्वारा मुझे ज्ञात हुआ कि उनकी संख्या बढ़ रही है। दाहिने कान की ओर मुझे खटपट की आवाज, एक घण्टे से सुनाई पड़ रही थी। जब मैंने अपना सर उधर घुमाया, जितना कि मुझे खूँटी और डोर ने घुमाने दिया तो मैंने देखा कि जमीन से साढ़े चार फुट ऊँचा एक चबूतरा बनाया गया है। चार आदमी इस पर खड़े हो सकते थे। ऊपर चढ़ने के लिए सीढ़ियाँ बनाई गई थीं। इसी पर से एक मनुष्य ने जो कि उनका अफसर मालूम होता था मेरे सामने एक लम्बा भाषण दिया जिसका कि एक शब्द भी मेरी समझ में न आया। परन्तु मुझे यह बात बता देनी चाहिए कि भाषण देने से पूर्व उस मुख्य मनुष्य ने तीन बार जोर से "लेग्तो दे हुलसान" चिल्ला कर पुकारा। प्रयुक्त शब्द और पहले प्रयोग किये गये शब्द कई बार दुहराये गये और बाद में मुझसे इनकी व्याख्या की गई। तदुपरान्त तत्काल ही पचास व्यक्ति आये। उन्होंने वह डोरी काट दी जिससे कि मेरे सर का बायाँ भाग बँधा था। इससे मुझे दाहिनी ओर सर घुमाने तथा व्याख्यानदाता और उपस्थित भीड़ की ओर देखने की स्वतंत्रता प्राप्त हुई। वह व्यक्ति अधेड़ अवस्था का प्रतीत होता था। अपने तीनों सेवकों से वह लम्बा मालूम होता था। एक छोकरा तो उसके लटकते हुए वस्त्र को उठाये था। वह मेरी बीच की उँगली से कुछ ही

लम्बा था। दो अन्य सेवक सरदार के दोनों ओर सहायता के लिए खड़े थे। उसने भाषणकला के सभी अंगों का अभिनय किया। कई बार तो उसने मुझे चेतावनी-सी दी। कभी-कभी तो वह आशा, करुणा और दया के भाव प्रदर्शित करता था। मैं बहुत भूखा था। जहाज से बिछुड़ने से पहले मुझे कुछ कौर खाने का अवसर मिला था। पर किया क्या जाय ? यह तो स्पष्ट है कि उनकी भाषा और आचार विचार बिलकुल भिन्न थे। यह सोचकर कि शायद यह लोग सूर्यपूजक हों; मैंने दोनों हाथ उठाकर सूर्य की ओर जोड़े और यह प्रकट करने का प्रयत्न किया कि मैं सूर्य को साक्षी देकर अपनी दशा का ठीक-ठीक वर्णन कर रहा हूँ। सभ्यता के विरुद्ध मैंने कई बार मुँह में उँगली डाली और विनय के साथ बहुत भूखे होने की ओर संकेत किया। हर्गो ने मुझे भली भाँति पहचान लिया था। (बाद में मुझे मालूम हुआ कि बड़े-सरदार को यह लोग "हर्गो" के नाम से पुकारते हैं।) चबूतरे से नीचे उतरकर उसने आज्ञा दी कि मेरे चारों ओर सीढ़ियाँ लगाई जायँ। मेरी बुद्धिमत्ता का परिचय पाकर राजा ने सौ से अधिक लोगों को मेरे पास भेजा। वे गोश्त से भरी हुई टोकरियों को लिए हुए मेरे मुँह की ओर आ रहे थे। गोश्त कई जानवरों का था। परन्तु मैं स्वाद से उसे पहचान न सका। भेड़ के मांस की भाँति पैर, कंधों और कूल्हों का गोश्त मेरे सामने लाया गया। मांस अच्छी तरह से पकाया हुआ था परन्तु गौरिया के अण्डों से भी छोटा था।

गोश्त के तीन-चार टुकड़े, दो तीन रोटियों के साथ मैं एक कौर में लेता था। रोटियाँ कारतूस की टिकलियों के बराबर थी। उन लोगों ने अत्यन्त आश्चर्य के साथ मुझे जल्दी-जल्दी खाते देखा। मेरी भूख और शरीर को देखकर वे सब चकित हो रहे थे। इसके बाद इशारे से मैंने पानी माँगा। मेरी भूख को देखकर उन लोगों ने समझ लिया होगा कि थोड़े पेय से काम नहीं चलेगा। बड़ी मेहनत से शराब का एक बहुत बड़ा पीपा मेरे हाथ की ओर उन्होंने लुढ़काया। और हाथ से पीटकर उसका सिरा बताया। एक घूँट में ही मैं उसे पी गया। पीपा का पानी पाव भर से अधिक न था। उसका स्वाद बरगंडी की शराब की तरह बहुत अच्छा था। इसी तरह का एक और पीपा वे मेरे पास लाये जिसे मैं उसी तरह पी गया। मैंने इशारे से और माँगा परन्तु अब उनके पास और था नहीं। जादूगरी देखकर, मारे खुशी के वे लोग मेरी छाती पर नाचने लगे। आत्मविभोर होकर उन लोगों ने—"हे किना दे गुल" चिल्लाकर अपनी प्रसन्नता प्रगट की। इशारे से उन लोगों ने दोनों पीपों को नीचे फेंक देने के लिए मुझे संकेत किया। परन्तु ऐसा करने से पूर्व "पोर्च मेवलाह" चिल्लाकर लोगों को चेतावनी दे दी गई। जब दोनों बरतनों को हवा में उड़ते पाया तो फिर वे "हेकिना दे गुल" चिल्लाने लगे। कभी-कभी मेरे मन में आता था कि शरीर पर घूमते हुए सैकड़ों आदमियों को जमीन पर पटक दूँ। परन्तु उनके वीरों की मार और अपने वादे को सोचकर जल्दी ही मैंने यह विचार त्याग दिया। उनके शानदार अतिथि-

सत्कार के आगे मैं नतमस्तक हो गया। मुझ दानव जैसे भीम-काय शरीरवाले मनुष्य को देखकर भी उन छोटे-छोटे आदमियों के साहस को देखकर मैं दंग रह गया। अत्यन्त साहसी और वीर होने के कारण ही वे लोग मेरे शरीर पर घूमते थे; और वह भी तब जबकि मेरा एक हाथ बिलकुल आजाद था।

थोड़ी देर के बाद बारह सेवकों के साथ राजा का भेजा हुआ सरदार आया। यह मेरे बायें पैर से चढ़कर मेरे चेहरे के पास आया। मेरी आँखों के सामने वह अपना परिचय-पत्र लाया जिसमें राज्य की मुहर लगी हुई थी। दस मिनट तक शांत भाव से उँगली उठा कर वह किसी प्रस्ताव के बारे में बोलता रहा। बाद में मुझे मालूम हुआ कि वह उँगली उठाकर राजधानी की ओर संकेत कर रहा था। जो यहाँ से आधे मील की दूरी पर थी। वहाँ राजा ने अपने मंत्रियों के परामर्श से मुझे ले जाने का निश्चय किया था। थोड़े से शब्दों में मैंने उन्हें उत्तर दिया। परन्तु उसे वह समझ न पाया था। अपने खुले हुए हाथ को तथा दूसरे हाथ को जो कि बँधा था, शरीर पर रखकर मैंने आजादी के लिए सरदार से प्रार्थना की। वह मेरी बात अच्छी तरह समझ गया। सर हिलाकर उसने बताया कि कैदी की भाँति मुझे ले जाया जायेगा। इसके अलावा मुझे यह भी समझाया कि मेरे साथ अच्छा व्योहार होगा और बढ़िया गोश्त व शराब दी जावेगी।

एक बार फिर मन में आया कि बंधन-मुक्त हो जाऊँ। परन्तु उनकी बढ़ती हुई संख्या और तीरों की बौछार के भय से साहस न हुआ। चेहरे तथा हाथों पर लगे तीरों के घावों और बर्छों के फफोलों की याद आ गई। मैंने इशारे से बताया कि वे जैसा चाहें करें। इस पर सरदार अपने सेवकों के साथ प्रसन्नतापूर्वक लौट गया। कुछ देर के बाद कोलाहल सुनाई पड़ा। जिसमें "पेटलोम सेलान" के नारे लग रहे थे। मुझे मालूम पड़ा कि बाईं ओर कुछ लोग रस्सियाँ ढीली कर रहे हैं। जिससे मैं दाहिनी ओर घूम सकता था। इसके पूर्व उन लोगों ने मेरे दोनों हाथों और चेहरे पर एक प्रकार का सुगन्धित लेप लगा दिया। जिससे तीरों का दर्द-बिलकुल दूर हो गया। इन सब बातों, और पेट भर भोजन करने के बाद मुझे चैतन्यता आ गई। अब मुझे नींद सताने लगी थी। मैं करीब आठ घण्टे सोया। बाद में मुझे मालूम हुआ कि राजा की आज्ञानुसार डाक्टरों ने शराब में नींद की दवा मिला दी थी।

मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे ही समुद्र से बचकर मैंने इस द्वीप में पैर रक्खा वैसे ही राजा को मेरा पता लग गया था। और मेरे खाने-पीने की व्यवस्था कर दी थी। मुझे राजधानी ले जाने के लिए एक गाड़ी बनाये जाने का प्रबन्ध भी कर दिया गया था।

इन लोगों की उपर्युक्त योजना बड़ी साहसपूर्ण थी। मुझे यह विश्वास है कि योरप का कोई भी राजा ऐसे अवसर

पर इस पथ का अनुसरण न करेगा। मेरे विचार से उनका यह व्यवहार अत्यन्त बुद्धिमानी और उदारता का था। मान लीजिये कि वे लोग सोते समय मुझे भालों और तीरों से मारने लगते। पहले, तीरों की चुभन में ही मैं गुस्से में उनकी रस्सियों को तोड़ डालता तो उनकी क्या दशा होती? सरलता से ही मैं बन्धनमुक्त हो सकता था, फिर वे बेचारे मेरा सामना किस प्रकार कर सकते थे। उनके साथ यदि मेरे सम्बन्ध बिगड़ते तो वे लोग मुझसे किसी भी प्रकार की दया की आशा नहीं कर सकते थे।

यहाँ के आदमी कुशल गणितज्ञ भी हैं। यहाँ मशीनों में भी काफी प्रगति हुई है। यहाँ का राजा साहित्य का प्रसिद्ध संरक्षक है। इसके पास पेड़ों तथा भारी चीजों को हटाने के लिए पहियेदार गाड़ियाँ हैं। अक्सर यह नौ-नौ फिट के जहाज जंगलों में बनवाता है। फिर इन्हीं गाड़ियों पर लाद कर, तीन-चार सौ गज दूर समुद्र में पहुँचवा देता है। पाँच सौ बढ़ई और इंजीनियर आदेश मिलते ही उनके हिसाब से सबसे विशालकाय गाड़ी बनाने का काम करने लगे। जमीन से तीन इंच ऊपर उठी हुई सात फिट लम्बी और चार फिट चौड़ी लकड़ी की गाड़ी बनाई गई। इसमें बाईस पहिये लगे थे। जिन पर वह गाड़ी लगाई गई थी। सबसे बड़ी तथा मुख्य कठिनाई मुझको उठाकर इस गाड़ी पर रखने की थी। एक-एक फिट के अस्सी खम्भे इस काम के लिए गाड़े गए। मजबूत रस्सियों को हुक से बाँध दिया गया, कारीगरों ने

हुक मेरे हाथ, पैर, गर्दन और शरीर पर बँधी हुई रस्सियों में फँसा दिये थे। इन रस्सियों को खींचने के लिए नौ सौ अत्यन्त शक्तिशाली व्यक्ति बुलाये गये। खम्भों पर गिर्रियाँ लगाई गई थीं। तीन घण्टे में मैं उठाकर गाड़ी में बाँध दिया गया। यह सब बातें मुझे बाद में बतलाई गई थीं क्योंकि मैं गहरी नींद में सो रहा था। यह सब उसी दवा का प्रभाव था जो शराब में मिलाकर मुझे पिलाई गई थी। राजा के पंद्रह सौ बड़े-बड़े घोड़े मुझे आधे मील दूर राजधानी की ओर खींच ले गये। प्रत्येक घोड़ा साढ़े चार इंच ऊँचा था।

यात्रा के आरम्भ होने के चार घण्टे बाद मैं एक मनोरंजक दुर्घटना के कारण जग गया था। गाड़ी की कोई खराबी दूर करने के लिए उसे एक स्थान पर रोका गया था। दो तीन जवान देशवासी यह देखने आये थे कि मैं सोते समय कैसा लगता हूँ। वे लोग गाड़ी पर चढ़कर धीरे से मेरे चेहरे की तरफ आये। उनमें से एक ने मेरे नथुने में भाले की नोक डाल दी जिससे मुझे तिनके सी गुदगुदी मालूम हुई। मुझे बड़ी जोर से छींक आ गई। चुपके से वे लोग भाग गये। तीन हफ्ते के बाद इस प्रकार एकाएक जग जाने का यह कारण मुझे ज्ञात हुआ था।

बाकी दिन भर हम लोग यात्रा करते रहे। रात में आराम करते थे। मेरे दोनों ओर एक हजार सिपाही तैनात थे। आधे लोग हाथ में मशालें लिये थे। शेष भालों तथा तीरों से सज्जित थे। यदि मैं जरा भी हिलूँ तो वे मुझे

मार देने के लिए सदैव तत्पर रहते थे। दूसरे दिन सूर्योदय के पश्चात् यात्रा पुनः प्रारंभ हुई। दोपहर को हम मुख्य द्वार पर पहुँचे जो नगर से दो सौ गज की दूरी पर था। राजा अपने दरबारियों के साथ मुझसे मिलने आया था। परन्तु बड़े-बड़े सरदारों ने भय के कारण उसको मेरे शरीर पर चढ़ने न दिया।

एक पुराने मंदिर के पास आकर गाड़ी रुक गई। सारे साम्राज्य में वह मंदिर बड़ा था। कई वर्ष पहले इसमें एक वीभत्स हत्या की गई थी। इस कारण देशवासी इस मंदिर को भ्रष्ट मानते थे। सारा साज व सामान यहाँ से हटा लिया गया था। अब यह धार्मिक स्थान सार्वजनिक प्रयोग में आता था। इसी मंदिर में मुझे ठहराने का निश्चय किया गया था। उत्तर की ओर चार फिट ऊँचा तथा दो फिट चौड़ा फाटक था। मैं आसानी के साथ इसमें रेंगकर जा सकता था। जमीन से छः इंच की दूरी पर मंदिर के चारों ओर छोटी-छोटी खिड़कियाँ थीं। लुहार इक्यानवें जंजीरें बनाकर ले आया। ये जंजीरें योरपीय महिला की घड़ियों की चैन के समान थीं। छत्तीस तालों द्वारा ये मेरे बायें पैर में बाँधी गई थीं।

मंदिर के सामने, पाँच फिट ऊँची एक मीनार सड़क के उस पार, बीस फिट की दूरी पर स्थित थी। राजा अपने दरबार के मुख्य सामन्तों के साथ मुझे देखने के लिए मीनार पर चढ़ा। यह मुझे बाद में बतलाया गया था। क्योंकि मैं

उन्हें देख न सका था। मेरे आ जाने की खबर पाकर हजारों देशवासी देखने आये थे। पहरेदारों द्वारा मना किये जाने पर भी कई हजार लोग सीढ़ियों के सहारे मेरे शरीर पर चढ़े। परन्तु शीघ्र ही घोषणा कर दी गई कि जो व्यक्ति ऐसा करेगा उसे मृत्युदण्ड दिया जावेगा। जब कारीगरों को यह मालूम हुआ कि मेरे लिए भागना संभव नहीं है तो उन्होंने मेरे सब बन्धन काट दिये। अत्यन्त दुखी और निराश होकर मैं उठ खड़ा हुआ। जीवन में कभी भी मुझे इतना दुख और निराशा न हुई थी। वर्णन नहीं किया जा सकता कि मेरे उठकर चलने पर उन लोगों ने कितना शोर मचाया और उन्हें अत्यंत आश्चर्य हुआ। जिस जंजीर से मेरा बायाँ पैर बँधा था वह दो गज लम्बी थी। इसके द्वारा केवल मुझे आगे-पीछे टहलने की ही स्वतंत्रता नहीं मिली, वरन् मंदिर के अंदर फाटक से चार इंच तक रेंगने और पूरी तरह लेटने की सुविधा भी प्राप्त हो गई।

---

(२)

खड़े होने पर जो मनोहर दृश्य मुझे दिखाई पड़ा उसे मैं कभी नहीं भूल सकता। चारों ओर का प्रदेश विस्तृत उपवन की भाँति था। चालीस फिट के घिरे हुए खेत, फूलों की क्यारियों के समान शोभा दे रहे थे। इन खेतों के बीच में, आधे स्टेंग* की उँचाई के लम्बे वृक्ष वहाँ की शोभा और

*साढ़े सोलह फिट के खम्भे के लिए, पहले यह शब्द प्रयोग में लाया जाता था।

बढ़ा रहे थे। सबसे बड़ा वृक्ष मेरे अनुमान से सात फिट से ऊँचा नहीं था। नाटक के चित्र के समान मैंने बाईं ओर के शहर को देखा।

मैं शीघ्र ही स्वच्छ वायु के लिए बाहर निकल आया। मीनार से उतरने के बाद राजा घोड़े पर चढ़ा हुआ मेरी ओर बढ़ रहा था। राजा का यह कार्य अत्यंत खतरनाक था और उसे इसके लिए भारी कीमत चुकानी पड़ती। पर्वत के समान मेरे शरीर को देखकर घोड़ा एकदम पिछले पैरों पर खड़ा हो गया। यद्यपि घोड़े को अच्छी शिक्षा मिली थी, फिर भी ऐसा दृश्य उसने कभी नहीं देखा था। चतुर घुड़सवार होने के कारण, राजा घोड़े पर डटा रहा। थोड़ी ही देर में उसके सेवकों ने दौड़कर लगाम पकड़ ली और राजा नीचे उतर आया। जब वह कुछ स्वस्थ हुआ तो श्रद्धा के साथ उसने मुझे देखा परन्तु जंजीरों के पास न आया। उसने अपने रसोइयों और खानसामों को हुक्म दिया कि मुझे पेट भर भोज्य पदार्थ दिये जायँ। जब तक मैं उन लोगों तक पहुँचूं वे स्वयं ही गाड़ियों पर लदा हुआ सामान लेकर आ पहुँचे। गोश्त की बीस तथा शराब की दस गाड़ियाँ मैंने मिन्टों में खाली कर दीं। गोश्त की एक गाड़ी मेरे दो-चार कौर को ही होती थी। शराब मिट्टी की बनी बोतलों में गाड़ी पर रखी थी। मैं उसे एक ही घूंट में पी डालता था। इसी तरह मैंने सब खाना खा डाला।

रानी, राजकुमारों, राजकुमारियों तथा सम्भ्रान्त महि-

२

लाओं के साथ, कुछ दूरी पर कुरसियों के ऊपर बैठी थी। परन्तु घोड़ेवाली दुर्घटना के कारण डरकर वे सब राजा के निकट आ गई थीं। अब मैं राजा के ही बारे में बतलाऊँगा। वह मेरे नारतून* से कुछ ही अधिक चौड़ा और लम्बा था। इसी आकार के कारण वह दरबारियों में श्रद्धा और आदर का पात्र बना था। उसके अवयव सुन्दर तथा मर्दाने थे। सुन्दर ओंठ तथा नोकीली नाक आस्ट्रिया के लोगों की भाँति थी। उसका रूप-रंग अत्यन्त सुन्दर था। मुखाकृति शानदार थी। उसके हाथ तथा शरीर अत्यन्त मनोहर थे। वह चाल से ही राजा मालूम पड़ता था। उस समय वह युवावस्था को पार कर उन्तिसवें वर्ष में प्रवेश कर रहा था। इस काल में सात वर्ष तो उसने आनंद के साथ राज्य किया। साधारणतया वह विजयी रहा। उसको भली भाँति देखने के लिए मैं लेट गया। मेरा मुँह उसके सामने हो गया। मुझसे तीन गज की ही दूरी पर वह खड़ा था। राजा का वर्णन करने में मुझे धोखा नहीं हो सकता क्योंकि कई बार मैंने उसे निकट से देखा है। उसके वस्त्र एशिया तथा योरप की भाँति अत्यन्त साधारण तथा सादे थे। परन्तु उसके सिर पर एक सोने का मुकुट था जिसमें जवाहरात जड़े थे। मुकुट की चोटी सुन्दर पंखे द्वारा सुसज्जित थी। मेरे खुल जाने पर अपनी रक्षा के लिए वह हाथ में खुली तलवार लिए था। वह करीब तीन इंच लम्बी थी। उसकी म्यान

*उसका आकार हमारे अँगूठे से कुछ ही बड़ा होगा।

और मूँठ सोने की बनी थी तथा उस पर हीरे जड़े थे। राजा का स्वर तेज और अत्यन्त स्पष्ट था। उसका उच्चारण शुद्ध था। खड़े होने पर भी मैं उसे साफ सुन सकता था। सभी महिलाओं तथा दरबारियों की वेश-भूषा अत्यन्त सुन्दर और शानदार थी। इन लोगों के वस्त्र इतने सुन्दर थे कि इनके खड़े होने की जगह पर मानो, सोने-चाँदी से कढ़ा हुआ सुन्दर पेटीकोट बिछा हो।

राजा कभी-कभी मुझसे बात भी करते थे। मैं उन्हें उत्तर देता था परन्तु हम दोनों में से कोई भी उसे समझ न पाता था। वहाँ पर कई पुरोहित तथा वकील उपस्थित थे। इन लोगों को मैंने उनके वस्त्रों तथा व्योहार से पहचान लिया था। इन्हें राजाज्ञा मिली थी कि वे मुझसे बातें करें। मैंने डच, लेटिन, फ्रेंच, स्पैनिश, इटैलियन तथा और भी अनेक मिश्रित भाषाओं का प्रयोग किया परन्तु कोई लाभ न हुआ। दो घंटे बाद सभा विसर्जित हुई और मुझे सख्त पहरे के अंदर छोड़ दिया गया। यह पहरा मुझे उपद्रवी तथा असंगत लोगों के समूह से बचाने के लिए बैठाया गया था। वे लोग मेरे पास आने के लिए अधीर और व्याकुल हो रहे थे। कुछ लोगों ने तो मेरे ऊपर तीर छोड़ने की भी धृष्टता की। उस समय मेरी बाईं आँख बाल-बाल बच गई। परन्तु पहरेदार सैनिकों ने उन लोगों के छः नेताओं को पकड़ने की आज्ञा दी। उन्हें बाँधकर मेरे हवाले कर देने के अतिरिक्त कोई दंड उन्हें पसंद न आया। आज्ञानुसार कुछ सैनिकों

ने उन्हें बाँधकर भालों की नोकों द्वारा मेरे पास ढकेल दिया। मैंने उन सबको अपने दाहिने हाथ पर रक्खा। पाँच को तो मैंने अपने कोट की जेब में रख लिया। छठे के लिए मैंने ऐसी मुद्रा बनाई कि मानो मैं उसे जीवित ही खा जाऊँगा। बड़े जोर से वे लोग चीखे। सैनिक अफसर तथा अन्य अधिकारी मेरे चाकू निकाल लेने से अत्यन्त भयभीत हो गये।

परन्तु शीघ्र ही मैंने उनको भयमुक्त कर दिया। दया करके तत्काल ही मैंने उसके बंधन चाकू से काट दिये और धीरे से उठाकर उसे भूमि पर रख दिया। वह फौरन भाग गया। इसी भाँति मैंने अन्य नेताओं को भी एक-एक करके जेब से निकाला और छोड़ दिया। मैंने देखा कि सिपाहियों तथा अन्य लोगों को मेरी इस कोमलता तथा दयालुता पर अत्यन्त हर्ष हुआ। यह बात आगे चलकर, न्यायालय में मेरे लिए अत्यन्त लाभदायक सिद्ध हुई। कठिनाई से रात को मैं अपने मकान में पहुँच पाया। मैं जमीन पर लेट गया। दो सप्ताह तक मैं इसी भाँति दिन काटता रहा। इस बीच राजा ने मेरे लिए एक बिस्तर तैयार किये जाने की आज्ञा दी। साधारण नाप के छः सौ बिस्तरे गाड़ियों में रखकर लाये गये। एक सौ पचास बिस्तरे एक में सिले गये और मेरी लम्बाई-चौड़ाई के नाप का एक बिस्तर बनाया गया। इस तरह की चार तहें ऊपर-नीचे रक्खी गईं। जिससे कड़े पत्थर की फर्श से मेरी कुछ रक्षा हुई। इसी हिसाब से मुझे

चादर, कम्बल तथा ओढ़ने का सामान प्रदान किया गया जो मेरे जैसे मुसीबतों के अभ्यासी व्यक्ति के लिए बहुत था।

जैसे ही मेरे पहुँचने की खबर सारे साम्राज्य में फैली, धनवान, आलसी तथा उत्सुक जनता आश्चर्यजनक संख्या में मुझे देखने आने लगी। गाँव के गाँव खाली हो गये। यदि महाराजा ने अपनी कई घोषणाओं द्वारा प्रतिबन्ध न लगा दिया होता तो घरेलू उद्योग-धन्धों तथा खेती की बहुत हानि होती। राजाज्ञा के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को जो मुझे देख चुका है तुरंत लौट जाना आवश्यक था। न्यायालय से प्रमाण-पत्र लेकर ही कोई व्यक्ति मेरे घर से पचास गज के अंदर आ सकता था। इससे फीस के रूप में राजमंत्री को काफी धन प्राप्त हुआ।

इसी काल में राजा अपने मंत्रियों से परिषदों में परामर्श करता था कि मेरे साथ किस प्रकार का व्यवहार किया जाय। मुझे बाद में, अपने एक अनन्य मित्र के द्वारा पता चला कि न्यायालय के सामने मेरे बारे में बहुत सी कठिनाइयाँ हैं। मेरा मित्र सज्जन और प्रतिभाशाली व्यक्ति था और प्रत्येक रहस्य का ज्ञान रखता था। उसे भय था कि मेरे ऊपर कोई आपत्ति आ सकती है। मेरी अत्यधिक खुराक होने के कारण उन्हें अकाल का भय था। कभी वे सोचते थे कि जहरीले तीरों द्वारा बेधकर अथवा भूखों रखकर मुझे मार डाला जाय। परन्तु फिर उनके दिमाग में आया कि

इतनी बड़ी लाश सड़ने से राजधानी तथा सारे साम्राज्य में प्लेग फैल जायेगा ।

यह परामर्श चल ही रहा था कि फौज के कुछ अधिकारीगण मंत्रि-परिषद् के द्वार पर आये। उनमें से दो अधिकारी भीतर गये। उपर्युक्त छः अधिकारियों ने मेरे सद्व्योहार का विवरण दिया। महाराज तथा मंत्रियों को मेरे प्रति इतनी सहानुभूति तथा प्रेम उत्पन्न हुआ कि तुरंत एक आज्ञापत्र घोषित किया गया। इसके द्वारा राजधानी के नौ सौ गज तक के किसानों को आदेश दिया गया कि वे हर रोज पचास भेड़ों का मांस, अन्य पर्याप्त खाद्य सामग्री, रोटी और शराब मेरी उदर-पूर्ति के लिए हाजिर करें। इसके उचित भुगतान के लिए राजा ने खजाने से प्रबन्ध कर दिया था। राजा अपनी जमींदारी के कारण आत्म-निर्भर था। केवल कुछ महान् अवसरों पर ही प्रजा पर कर लगाता था। प्रजा युद्ध के समय, अपने खर्चे से राजा को सहायता देने के लिए बाध्य थी।

मेरी सेवा करने के लिए छः सौ नौकरों का प्रबन्ध किया गया। उनके खाने-पीने के लिए राज्य की ओर से प्रबन्ध था। मेरे द्वार के हर तरफ उनके रहने के लिए सुविधाजनक तंबुओं की व्यवस्था की गई थी। इसी भाँति राजा ने तीन सौ दर्जियों को मेरे लिए देशी पोशाक बनाने की आज्ञा प्रदान की थी। साम्राज्य के छः सबसे बड़े विद्वानों को आदेश दिया गया कि वे मुझे अपनी भाषा का ज्ञान करायें।

अंतिम आदेश के द्वारा शाही सामन्तों तथा रक्षकों के घोड़ों को मेरे चारों ओर खूब घुमाया जाय जिससे मेरे प्रति उनका भय दूर हो जाय। उपर्युक्त सब आदेशों का शीघ्र पालन किया गया। करीब तीन सप्ताह में ही मैं उनकी भाषा समझने लगा। इन दिनों राजा भी मेरे पास आता था और शिक्षकों को पढ़ने में सहायता प्रदान करता था। हम लोग अब टूटी-फूटी भाषा में बात करने लगे। सबसे पहले सीखे शब्दों द्वारा मैंने राजा से अपनी स्वतंत्रता की इच्छा घुटने टेककर दुहराई। उनका उत्तर जैसा कि मैं समझ सका यह था कि इसमें समय लगेगा। और परिषद् के परामर्श के बगैर सोचा भी नहीं जा सकता। इसके लिए मुझे राजा तथा साम्राज्य के बीच शान्ति बनाये रखने के लिए सौगंध खानी पड़ेगी। प्रत्येक दशा मेरे साथ दयालु व्योहार ही किया जायेगा। उसने मुझे परामर्श दिया कि मैं ऐसा व्योहार करूँ कि राजा-प्रजा सभी अच्छी राय कायम कर सकें। उसकी इच्छा थी कि मैं कतई बुरा न मानूँ यदि वह कुछ अफसरों को मेरी तलाशी के लिए आदेश दे। मेरे पास ऐसी भयानक वस्तुएँ तथा शस्त्र हो सकते हैं जिनसे देशवासियों का अहित हो सकता है। मैंने उत्तर दिया "श्रीमान् आप अपनी दिलजमाई हर तरह से कर सकते हैं। तलाशी के लिए मैं अपनी जेबों को उलटने तथा नंगा होने के लिए तैयार हूँ।" यह बात मैंने कुछ शब्दों तथा संकेतों द्वारा प्रकट की। उसने उत्तर दिया कि देश के

कानून के अनुसार दो अधिकारियों के द्वारा मेरी तलाशी होगी। वह जानता था कि यह कार्य मेरी सहायता तथा सह-मति के बिना संभव न था। मेरी दयालुता और न्याय पर उसे इतना विश्वास था कि अपने आदमियों को मुझे सौंप दिया। मुझे यह भी बतलाया गया कि देश छोड़ने पर सब वस्तुएँ वापस कर दी जायेंगी। अथवा जो भी मूल्य मैं निर्धारित करूँगा मुझे दे दिया जायेगा।

दो अधिकारियों को हाथ में लेकर मैंने पहले कोट की तथा अन्य जेबों की तलाशी करवा दी। दो छोटी-छोटी जेबों तथा एक चोर जेब की तलाशी मैंने नहीं कराई जिसमें केवल मेरे मतलब की चीजें थीं। मेरी छोटी जेबों में चाँदी की एक घड़ी और दूसरी में कुछ द्रव्य एक थैली में रखा था। इन लोगों के पास एक कलम-दावात और कागज था। तत्काल ही एक शुद्ध सूची बनाई गई जिसमें जो भी उन्होंने देखा था, लिखा गया। जब वे यह कार्य कर चुके तो मुझसे सारी वस्तुएँ माँगी जिसे वे राजा को देना चाहते थे। इस सूची का शाब्दिक अनुवाद नीचे किया जाता है :—सर्वप्रथम, पर्वताकार मनुष्य* के दाहिने कोट की जेब में बड़ी छानबीन के पश्चात् हमें एक मोटे कपड़े का बड़ा टुकड़ा प्राप्त हुआ। यह इतना बड़ा है कि महाराजा के मुख्य राजकीय कमरे में बिछ सकता है। बाईं जेब में हम लोगों ने चाँदी का एक बड़ा सन्दूक देखा जिसका ढक्कन भी उसी धातु का बना

*क्विनबस फ्लेस्ट्रिन शब्दों की मेरी व्याख्या।

था। हम छानबीन करनेवाले लोग उसे उठा भी न सके। हम लोगों की इच्छानुसार जब यह खोला गया तो हममें एक उसके भीतर पैरों तक समा गया। इसमें एक तरह का पाउडर भरा था जिसके चेहरे तक आ जाने पर हम लोगों को कई बार एक साथ छींकें आईं।

उसके कमर के पास की दाहिनी जेब में पतले पतले सफेद असंख्य बंडल थे। तीन मनुष्यों की नाप के बराबर के एक दूसरे पर रखे हुए थे। जो एक मोटी रस्सी से बँधे थे; और उन पर काली आकृतियाँ चित्रित थीं। इनको हम लोगों ने लिपि समझा। प्रत्येक अक्षर हम लोगों की आधी हथेली के बराबर है। बाईं जेब में एक प्रकार का इंजिन-सा निकला जिसमें पीछे की ओर बीस खम्भे से लगे थे। यह इंजन महाराजा के न्यायालय के सम्मुख बने कटघरे के समान है। हमारा अनुमान है कि पर्वताकार मनुष्य इसी से अपने बालों को साफ करता होगा। हम लोग बराबर प्रश्न पूछ कर उसे परेशान करना नहीं चाहते थे क्योंकि हमारी भाषा समझने में उसे बड़ी कठिनाई होती है।

बीच के वस्त्र (जिससे उनका मतलब मेरे पैजामे से था) की जेब में हम लोगों ने लोहे का एक खोखला खंभा-सा देखा जो कि एक आदमी की लम्बाई के बराबर था। लकड़ी के कुछ बड़े टुकड़े में वह कसकर जड़ा हुआ था। उस खम्भे सदृश वस्तु के एक ओर लोहे के बड़े-बड़े टुकड़े चिपके थे जो विचित्र आकृतियों के थे। हम लोगों को नहीं

मालूम कि वे टुकड़े किस चीज के बने हैं। बाईं जेब में भी इसी तरह का एक दूसरा यंत्र मिला। दाहिनी ओर की छोटी जेब में विभिन्न प्रकार की सफेद और लाल धातुओं के गोल तथा चिपटे टुकड़े मिले जो कई आकार तथा वजनों के थे। वे हमें चाँदी के प्रतीत हुए तथा इतने भारी थे कि मैं और मेरा साथी मिलकर भी उन्हें उठा न सके। बाईं जेब में दो काले खंभों सदृश वस्तुएँ मिलीं जो भद्दी सी बनी थीं। जेब की सतह पर खड़े होने पर भी हम लोग उस वस्तु की चोटी तक मुश्किल से पहुँच सके। उनमें से एक ढका हुआ टुकड़ा सा मालूम होता था परन्तु उसके ऊपरी सिरे पर हम लोगों के सिरों से दुगने नाप की सफेद वस्तु प्रतीत हो रही थी। इनमें से प्रत्येक के बीच इस्पात की एक पत्ती सी लगी थी। हम लोगों ने अनुरोध किया कि हमें वस्तु दिखाई जाय क्योंकि भय था कि कहीं कोई भयानक यंत्र न हों। उसने उन वस्तुओं को खोल से बाहर निकाल लिया और हम लोगों को बतलाया कि उसके देश में पहला दाढ़ी बनाने तथा दूसरा गोश्त काटने के लिए प्रयुक्त होता है।

दो जेबें और भी हैं जिनमें हम लोग जा नहीं सकते इनको वह छोटी जेबें कहता है। ये उसके अधोवस्त्र के ऊपरी भाग में हैं और शरीर के दबाव के कारण सिकुड़ गइ हैं। दाहिनी तरफ की छोटी जेब में चाँदी की जंजीर में एक अद्भुत यंत्र लटक रहा है। हम लोगों ने यंत्र को निकालने का आदेश दिया। यह गोल यंत्र एक ओर चाँदी

तथा दूसरी ओर पारदर्शी किसी धातु का बना है। यंत्र के पारदर्शी पहलू पर हमें कुछ गिनतियाँ लिखी दिखाई पड़ीं जिन्हें छूने का प्रयत्न हमने किया। परन्तु उँगलियाँ पारदर्शी वस्तु पर ही रुक गईं। उसने इस यंत्र को हमारे कान के पास लगाया। यन्त्र से पनचक्की की भाँति बराबर आवाज आ रही थी। अनुमानतः या तो यह एक कोई अजीब जानवर या देवता है। जिसकी यह पूजा करता है। हमारी भाषा में अपने को वह भली भाँति व्यक्त नहीं कर पाता। दूसरी धारणा ही अधिक सत्य मालूम होती है क्योंकि उसने बतलाया कि इस यंत्र के परामर्श के बिना शायद ही वह कोई कार्य करता हो। उसने बतलाया कि यह एक विचित्र यंत्र एक प्रकार की देववाणी है जो जीवन के प्रत्येक कार्य के लिए समय बताती है। बाईं ओर की छोटी जेब से उसने मछुओं के जाल सी एक वस्तु निकाली जिसका प्रयोग वह सिक्के रखने के लिए करता है। यह थैली खुल सकती है और बन्द भी हो सकती है। इसमें हम लोगों को पीली धातु के बड़े-बड़े सिक्के मिले। यदि वे सिक्के सोने के हैं तो बहुत मूल्यवान् हैं।

महाराज की आज्ञानुसार, हम लोगों ने अच्छी प्रकार से सब जेबों की तलाशी ली। हम लोगों ने उसकी कमर पर किसी विचित्र जानवर के खाल की एक पट्टी देखी। इस पट्टी के बाईं ओर पाँच मनुष्यों की लम्बाई की एक तलवार लटक रही थी। दाहिनी ओर दो भागों में एक थैला लटक रहा

था जिसके भीतर तीन मनुष्य आसानी से बैठ सकते हैं। थैले के एक भाग में हम लोगों के सिर के बराबर गोलियाँ भरी मिलीं जिनको उठाने के लिए शक्तिशाली मनुष्यों की आवश्यकता पड़ेगी। दूसरे भाग में काले-काले छोटे दाने भरे हुए हैं जो बहुत हल्के हैं जिसमें से पचास के करीब हम लोगों ने हथेलियों पर उठा लिये।

'नर पर्वत' के पास प्राप्त वस्तुओं की ठीक-ठीक सूची प्रस्तुत है। इस मनुष्य ने अत्यंत नम्रता एवं आदर के साथ महाराज की आज्ञा पालन की तथा अपने सदव्यवहार का परिचय दिया। महाराज के नवासीवें चंद्रमा के कल्याणकारी राज्य के चौथे दिन हस्ताक्षर किये तथा मुहर लगाई।

क्लेफरिन फ्रेलोक

मार्शी फ्रेलोक

जब यह सूची राजा को पढ़कर सुनाई गई तो अत्यन्त सौजन्य के साथ उसने कई वस्तुओं की माँग की। सबसे पहले उसने तलवार माँगी जिसे मैंने म्यान सहित निकाल लिया। इसी बीच में राजा ने चुने हुए तीन हजार सैनिकों को मेरे चारों ओर लगा दिया था। जो धनुष-बाण से सज्जित वार करने को तैयार रहते थे। परन्तु मैं सैनिकों को न देख सका क्योंकि मैं राजा को ही देखने में तल्लीन था। तदुपरांत राजा ने कटार देखने की इच्छा प्रकट की। समुद्र के पानी के कारण कहीं-कहीं उसमें जंग लग गया था। परन्तु फिर

भी वह बहुत चमकदार थी। मेरे द्वारा तलवार निकालते ही सारी सेना आश्चर्य तथा भय से चीख पड़ी। सूर्य तेजी से चमक रहा था। जब मैंने तलवार घुमाई तो सूर्य की तेज किरणों के कारण उनकी आँखों में चकाचौंध पैदा हो गई। मेरी आशा के विपरीत साहसी महाराज जरा भी भयभीत न हुए। उन्होंने तलवार को म्यान में रखकर जंजीर से छः फिट की दूरी पर रखने की आज्ञा दी। दूसरी लोहे की वस्तु जो माँगी गई वह थी मेरी जेबी पिस्तौल। राजा की इच्छानुसार मैंने उसे निकालकर प्रयोग विधि समझाई। छोटी जेब से बारूद निकाल कर पिस्तौल में भरी। प्रत्येक चतुर नाविक इस पाउडर को बड़े यत्न से भीगने से बचाता है। राजा को चेतावनी देकर मैंने हवा में पिस्तौल दाग दी।

तलवार से भी अधिक आश्चर्य लोगों को इसके दगने से हुआ। सैकड़ों व्यक्ति मुर्दों की भाँति धराशायी हो गये। यद्यपि राजा भूमि पर ही खड़ा रहा। परन्तु कुछ समय के लिए बेहोश सा हो गया था। मैंने दोनों पिस्तौलें तलवार ही की भाँति राजा को अर्पण कर दीं। गोलियों तथा बारूद की पेटी भी दे दी। राजा से प्रार्थना की कि बारूद तथा गोलियों को आग से दूर रक्खा जाय अन्यथा एक छोटी-सी चिनगारी ही राजमहल को क्षणों में भस्म कर देगी। इसी भाँति राजा को घड़ी भी दे दी। वह इसको देखने के लिए अत्यन्त आतुर था। दो अंगरक्षकों को आज्ञा दी गई कि

घड़ी को वे लोग बाँसों में डालकर कन्धे पर रक्खें। इसी भाँति इँगलैण्ड में शराब के पीपी ढोये जाते हैं। घड़ी की निरंतर ध्वनि सुनकर तथा सुई को देखकर राजा को आश्चर्य हुआ।

इन लोगों की दृष्टि हमारी अपेक्षा अधिक तीव्र और शक्तिशाली है। घड़ी के बारे में विद्वानों से भी परामर्श लिया गया परन्तु व्यर्थ के उत्तर प्राप्त हुए। पाठक स्वयं अनुभव कर सकते हैं कि किस प्रकार के उत्तर प्राप्त हुए होंगे। वास्तव में स्वयं ही मैं उन्हें न समझ पाया था।

तदुपरान्त मैंने चाँदी तथा ताँबे के सिक्के भी दे दिये। मनीबेग में सोने के नौ बड़े तथा कई छोटे-छोटे सिक्के थे। इसके अतिरिक्त मैंने चाकू, उस्तरा, कंघा, डायरी, रुमाल तथा चाँदी की सुँघनी डिबिया भी अर्पित कर दी। तलवार, पिस्तौलें तथा गोली-बारूद की पेटियाँ गाड़ियों में लादकर राजकीय भंडारगृह में भेज दी गईं तथा अन्य सामान मुझे वापस कर दिया गया।*

जैसा कि मैं पहले बता चुका हूँ मेरे एक ओर जेब भी

*तत्कालीन इँगलैंड में इस प्रकार की तलाशियों का अत्यधिक प्रचलन था। होनोवर वंश के सिंहासनारूढ़ होने के कई वर्ष पश्चात् तक जैकोवाइट दल के सदस्यों की गति-विधि पर नियंत्रण रखा जाता था। राजद्रोह तथा शस्त्र रखने के संदेह पर आये दिन घरों तथा मनुष्यों की तलाशी ली जाती थी। आयरलैंड में तो विशेषतया ऐसी घटनायें होती ही रहती थीं। आयरलैंड का एक निवासी तो बेचारा इतना अधिक

थी जिसकी तलाशी वे लोग न कर सके थे। इस जेब में चश्मा रक्खा था जिसका प्रयोग मैं आँखें कमजोर होने के कारण करता था। इसके अतिरिक्त भी बहुत सी छोटी-छोटी सुविधाजनक वस्तुएँ उस जेब में थीं। मैंने इन वस्तुओं की तलाशी टूटने या खो जाने के भय से न कराई थी।

---

(३)

मेरी उदारता तथा सद्व्यवहार से राजा तथा उसके दरबारी यहाँ तक कि फौज और साधारण प्रजाजन भी अत्यन्त प्रभावित हो गये थे। शीघ्र ही मुझे बंधनमुक्त होने की आशा दिखाई पड़ने लगी। इसी प्रकार के अनुकूल वातावरण बनाने का मैंने भरसक प्रयत्न किया। धीरे-धीरे-देशवासियों का भय दूर होने लगा। बहुधा जब मैं लेटा होता, पाँच छः देशवासी मेरे मस्तक पर नाचने लगते। अंत में छोटे-छोटे लड़के तथा लड़कियों का भी साहस बढ़ा और

तंग किया गया कि ऊबकर उसने अपना फावड़ा, चिमटा तथा आग सुलगानेवाली फुकनी सरकार के हवाले कर दी थी। समर्पण की हुई वस्तुओं की एक रसीद मात्र ही प्राप्त हुई। स्विफ्ट ने जनता के साथ इन दुखपूर्ण अदालती कार्यवाहियों के विरुद्ध सहानुभूति प्रकट की है। इन सब बातों का मजाक उड़ाने के अवसर को उसने हाथ से न जाने दिया। गुलवियर लैंपचून के एक प्रोफेसर को बतलाता है कि इँगलैण्ड के अधिकांश साथी, संदेशवाहक, सौगंध खानेवाले, अभियोक्ता तथा अभियोगी वहाँ के राजमंत्रियों से तनख्वाह पाते हैं।

मेरे बालों में लुका-छिपी खेलने लगे। यहाँ की भाषा बोलने तथा समझने में भी काफी प्रगति हो रही थी।

एक बार राजा ने मेरे मनोरंजन के लिए देशी खेल-तमाशों का आयोजन किया। जहाँ तक मुझे ज्ञात है खेलों में इन लोगों ने समस्त देश को पछाड़ दिया। सबसे ज्यादा आकर्षण तथा मनोरंजन मुझे रस्सियों के नाच द्वारा हुआ।

दो फिट १२ इंच लम्बे पतले धागे पर यह नृत्य हुआ। नृत्य का आयोजन भूमि से बारह इंच की उँचाई पर था। पाठक अनुमान कर सकते हैं कि अब मुझे स्वतंत्रता प्राप्त होने की आशा बलवती प्रतीत होने लगी।

इस प्रकार के खेलों का आयोजन उन्हीं लोगों द्वारा किया जाता था जो बड़ी नौकरी या दरबार की कृपा के इच्छुक होते थे। बचपन से ही इस प्रकार की शिक्षा-दीक्षा उन लोगों को दी जाती थी। ये लोग सदैव उदार शिक्षा-वाले कुलीन वंश के नहीं होते थे। जब कोई बड़ा स्थान मृत्यु या राजकोप के कारण रिक्त होता था तो पाँच-छः उम्मीदवार राजा तथा दरबार के मनोरंजनार्थ रस्सियों के नाच के लिए प्रार्थना-पत्र देते थे, जो भी व्यक्ति बिना गिरे हुए सबसे ऊँचा कूद जाता था उसी की नियुक्ति उस स्थान पर कर ली जाती थी। कभी-कभी तो मुख्य मंत्रियों तक को इस कला के प्रदर्शन के लिए आदेश मिलता था जिससे राजा को विश्वास हो जाय कि अब भी वे इस कला को

भूल नहीं हैं। कोषाध्यक्ष फिल्मनेय* को आदेश हुआ कि वह सीधी रस्सी पर साम्राज्य के सब सामंतों से एक इंच अधिक ऊँची कूद का प्रदर्शन करें। कई बार तो उन्हें मैंने रस्सी के सहारे छूरी पर कलाबाजियाँ लगाते हुए देखा। वह रस्सी इंगलैंड के साधारण सीनेवाले तागे से अधिक मोटी न थी। व्यक्तिगत मामलों के मुख्य सेक्रेटरी, मेरे मित्र की रेलड्रेसाल† का नम्बर कोषाध्यक्ष के बाद आता है। शेष अन्य अधिकारी बराबरी के ही हैं।

इन मनोरंजनों में कभी-कभी दुर्घटनाएँ भी हो जाती थीं। मैंने स्वयं ही कई लोगों के हाथ-पैर टूटते देखे हैं। परन्तु दुर्घटनाओं का क्रम तो उस समय बढ़ जाता था जब

---

*यह तो अब मान ही लिया गया है कि इस स्थान पर स्विफ्ट ने सर राबर्ट वालपोल का उपहास किया है। स्विफ्ट सर राबर्ट का प्रतिद्वंद्वी था। लेखकों तथा विद्वानों की उपेक्षा के कारण तो वह राबर्ट वालपोल का कट्टर शत्रु ही बन गया था। इन परिस्थियों में उसका उदार आक्षेप प्रशंसा के योग्य है कि स्विफ्ट ने अब तक अंग्रेजी रीति-रिवाज तथा आचार-विचार त्यागने का अंतिम निश्चय नहीं किया था। वालपोल ने कुछ आभास दिया था कि उसकी बातों की उपेक्षा न की जायेगी। स्विफ्ट कभी भी व्यक्तिगत लाभ के लिए याचना नहीं कर सकता था। परन्तु फिर भी वह ऐसी भाषा का प्रयोग नहीं करना चाहता था जिससे रही-सही आशा के चिह्न भी समाप्त हो जायें।

†अनुमानतः कड़ी रस्सी के सफल नृत्यकार श्री जेम्स अर्ल आफ स्टेन होप हैं।

कि मंत्रियों को कला-प्रदर्शन का आदेश दिया जाता था। अपनी कुशलता दिखाने तथा अन्य प्रतिद्वंद्वियों को परास्त करने के लिए वे प्राण-पण से चेष्टा करते थे। शायद ही कोई ऐसा मंत्री रहा हो जिसे, गिरने से दो एक चोटें न आई हों।

मुझे यह विश्वास दिलाया गया कि मेरे आने के एक या दो वर्ष पूर्व ही फिल्मनैप ने तो अपनी गर्दन ही करीब-करीब तोड़ ली थी। यदि सौभाग्यवश राजकीय गद्दा जमीन पर न पड़ा होता तो उसकी मृत्यु हो गई होती। गद्दे पर गिरने के कारण झटका कम हो गया था।*

इसी भाँति का एक और तमाशा देखा जो केवल विशेष अवसरों पर राजा, रानी तथा प्रधान मंत्री के सम्मुख प्रस्तुत किया जाता था। राजा छः इंच के तीन रेशमी नीले-लाल तथा हरे रंग के तागों को मेज पर रखता है। इन तागों को राजा पारितोषिक रूप में उन लोगों को प्रदान करता है जिन्हें उसका अनुग्रह प्राप्त हो जाता है। राज्य के बड़े भवन में इस उत्सव का आयोजन होता है। इसमें भाग

---

*यहाँ स्विफ्ट महोदय सर राबर्ट वालपोल के १७१७ के पतन का वर्णन कर रहे हैं। जिसके द्वारा उसका राजनीतिक ह्रास हो गया था राजा भी उससे नाराज हो गया था। यहाँ गद्दे से स्विफ्ट का अभिप्राय केन्डेल, राजा की प्रेमिका डयेज आफ केन्डेल से है जिसके प्रभाव से वालपोल को पुनः राजा की कृपा प्राप्त हो गई थी।

लेनेवालों को पहले तमाशे से भी अधिक निपुणता तथा दक्षता का प्रमाण देना पड़ता है। यह तमाशा सर्वथा भिन्न है। मैंने संसार के किसी भी प्राचीन अथवा अर्वाचीन देश में इस प्रकार का तमाशा नहीं देखा। राजा अपने हाथ में एक छड़ी पकड़ता है। उसके दोनों सिरों को बराबर करके आकाश की ओर उठाता है। परीक्षा देनेवाला एक-एक करके, संकेतों के अनुसार कभी छड़ी के ऊपर कूद जाता है कभी छड़ी के नीचे रेंगता है और कभी आगे कभी पीछे बार-बार रेंगता है। कभी राजा छड़ी का एक सिरा पकड़ता है और प्रधान मंत्री दूसरा। कभी-कभी तो प्रधान मंत्री को अकेले ही उसे पकड़ना पड़ता था। जो व्यक्ति अत्यन्त तत्परता से करता और छड़ी को सबसे अधिक देर तक पकड़े रहता उसे नीले रंग का रेशमी धागा प्रथम पारितोषिक के रूप में प्रदान किया जाता है। दूसरे को लाल तथा तीसरे को हरा धागा प्रदान किया जाता है। ये धागे ये लोग दो बार कमर में लपेट कर पहनते हैं। तुम देखते हो कि दरबार के कुछ ही व्यक्ति ऐसे हैं जिनके शरीर पर किसी प्रकार का धागा नहीं है।*

---

*इस स्थल पर लेखक नाइटहुड की पदवी का विवेचन तथा आलोचना करके उसको तीन श्रेणियों गार्टर बाथ तथा थिसिल की तुलना रेशम के तीन रंगीन धागों से करता है। वह राज्य की इन तुच्छ तथा आडम्बर पूर्ण पदवियों की अवहेलना करता है। जिन घृणित उपायों द्वारा यह प्राप्त किये जाते हैं। लेखक उनकी घोर निंदा तथा आलोचना करता है ।

फौज तथा राजसी अस्तबल के घोड़े अब मुझसे नहीं भड़कते थे। क्योंकि उन्हें प्रतिदिन मेरे सामने लाया जाता था। अब वे बिना डर के मेरे पैरों के पास चले आते थे। घुड़सवार जमीन पर फैली हुई मेरी हथेली पर कूद पड़ते थे। तेज दौड़नेवाले घोड़े के ऊपर से छलाँग लगाकर राजा का एक शिकारी मेरे बिस्तर का एक टुकड़ा तथा जूता उठा ले गया। वास्तव में यह छलाँग अत्यंत विचित्र थी।

एक बार असाधारण रूप से मुझे राजा को अपनी ओर आकर्षित करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। मैंने राजा से साधारण बेत की मोटाई की दो-दो फिट की कई छड़ियाँ मँगा देने की प्रार्थना की। उसने तत्काल ही वनाधिकारी को आदेश दिया। दूसरे दिन प्रातःकाल छः वनाधिकारी गाड़ियों में छड़ियाँ लादकर आ पहुँचे। प्रत्येक गाड़ी में आठ घोड़े जुते हुए थे।

इसमें की नौ छड़ियाँ जमीन में मजबूती से गाड़कर मैंने दो फिट के चौकोर आकार का घेरा बनाया। चार दूसरी छड़ियाँ भूमि से दो फिट की उँचाई से चारों कोनों पर समानांतर बाँध दीं। इसके बाद रुमाल को सीधी छड़ियों से बाँध दिया। इसके बाद मैंने रुमाल चारों ओर फैलाकर तान दिया जिससे वह ढोल के चमड़े की भाँति तन गया। ढोल चार समानांतर छड़ियाँ जो रुमाल से पाँच इंच ऊँची थीं चारों ओर रेलिंग का काम दे रही थीं। जब मैंने अपना कार्य सम्पन्न किया तो राजा से निवेदन किया कि वह चौबीस

श्रेष्ठतम घोड़े इस मैदान में भेजे। उसने इस प्रस्ताव से सहमति प्रगट की। अस्त्र-शस्त्र तथा नकली तीरों से सज्जित घुड़सवारों को मैंने एक-एक करके उठा लिया। इनके निर्देशन के लिए योग्य अधिकारी भी नियुक्त कर दिये। जैसे ही सब लोग तैयार हो गये मैंने उन्हें दो दलों में बाँट दिया। वे लोग नकली युद्ध करने लगे। सेंठे के तीर तथा तलवारें चलाकर अपनी कुशलता का परिचय देते थे। कभी आगे बढ़ते तो कभी हट जाते थे। मैंने जीवन में कभी भी इस प्रकार के सैनिक अनुशासन नहीं देखा था। समानांतर छड़ियाँ घुड़सवारों तथा घोड़ों को नीचे गिरने से बचाती थीं। राजा इस खेल से अत्यन्त आनंदित हुआ और कई दिन तक बार-बार देखता रहा। एक बार तो राजा भयभीत होकर कूद पड़ा और खेल बन्द करने की आज्ञा दे दी। खेल के समय उन्हें अत्यन्त कठिनता से अश्वासित करके कुरसी पर बिठाया गया। महारानी तमाशे से दो गज की दूरी पर थीं। यह मेरा सौभाग्य था कि इन खेल-तमाशों से कोई दुर्घटना नहीं हुई। केवल एक बार कैप्टन के तेज घोड़े ने अपना सवार फेंक दिया। उसके एक पैर से रुमाल में छेद हो गया जिससे वह फिसल कर गिर पड़ा। परन्तु तत्काल ही छेद पर हाथ रखकर मैंने सहायता की। एक-एक करके सारे दल को उसी भाँति नीचे उतार दिया जैसे मैंने उन्हें चढ़ाया था। गिरने से घोड़े के बायें कन्धे पर चोट लग गई थी परन्तु सवार के तनिक भी चोट न लगी।

रुमाल को तत्काल मैंने ठीक कर लिया। परन्तु वह अब इस प्रकार के भयपूर्ण तमाशों के योग्य न रह गया था।

स्वतंत्रता प्राप्ति के दो तीन दिवस पूर्व जब मैं इस प्रकार के खेलों द्वारा दरबार का मनोरंजन कर रहा था एक संदेश-वाहक राजा के पास आया। उसने बतलाया कि मेरे पाये जाने के स्थान पर कुछ सवारों ने एक बड़ी काली वस्तु भूमि पर पड़ी देखी है जो विचित्र प्रकार की है। जिसके किनारे महाराज के शयनगृह के समान चौड़े और एक मनुष्य के बराबर उठे हुए हैं। हम लोगों के भय के विपरीत यह कोई जीवधारी नहीं है क्योंकि बिना हिले-डुले घास पर पड़ी है। क्योंकि कई बार चारों ओर चक्कर लगाकर हम लोगों ने इसकी परीक्षा की। एक दूसरे का सहारा लेकर वे लोग उसकी चपटी चोटी पर जा पहुँचे। उस पर चलने के बाद उन्हें ज्ञात हुआ कि भीतर से यह खोखली है। उन लोगों का विचार है कि यह वस्तु नर पर्वत की है। यदि महाराजा आज्ञा प्रदान करें तो वे उसे पाँच ही घोड़ों पर ला सकते हैं। तत्काल ही मुझे ज्ञात हो गया कि उनका क्या तात्पर्य है। उनकी बुद्धिमत्ता से मुझे आनंद हुआ। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि जहाज से बिछुड़ने के बाद जब मैं इस प्रदेश में आ रहा था तभी मेरी हैट समुद्र में बह गई थी। यद्यपि खेते समय हैट मैंने डोरी से बाँध लिया था। डोरी टूट जाने के कारण वह कहीं समुद्र में बह गई होगी। महाराज से उसे शीघ्र मँगवाने की प्रार्थना की। हैट के प्रयोग

तथा लाभ के बारे में उसे बतलाया। दूसरे दिनवाले उसे लेकर आ पहुँचे, परन्तु उसकी दशा ठीक न थी। सिरे से डेढ़ इंच के फासले पर दो छेद करके दो हुक बाँधे गये थे। हुकों को लम्बी रस्सी द्वारा घोड़ों के साज से बाँधकर हैट को आधे मील तक घसीटा गया था। परन्तु अत्यन्त चिकनी तथा बराबर भूमि के कारण मेरे अनुमान से कम ही हानि पहुँची थी।

इस घटना के दो दिवस पश्चात् राजा ने राजधानी के चारों ओर लगी सेना को तैयार होने की आज्ञा दी। आश्चर्य तथा विचित्र रीति से राजा ने मनोरंजन करने का निश्चय किया। उन्होंने आदेश दिया कि मैं दीर्घकाय मूर्ति की भाँति सावधानी से दोनों पैरों को एक दूसरे से दूर करके खड़ा हो जाऊँ। फिर राजा ने अपने सेनानायक को फौज तैयार करके आगे आने के लिए आह्वान किया। सेनानायक वृद्ध, अनुभवी तथा मेरा अनन्य सहायक था। मेरे नीचे से चौबीस सिपाहियों तथा सोलह घुड़सवारों की पंक्तियाँ निकलने लगीं। ये लोग भाले आगे किये हुए नगाड़े बजाते तथा झंडों को लहराते हुए निकल रहे थे। इस दल में तीन हजार सैनिक तथा एक हजार घोड़े थे। राजा की आज्ञा थी कि परेड के समय प्रत्येक सैनिक अनुशासन तथा सद्व्यवहार का पालन करे अन्यथा उसे मृत्युदण्ड दिया जायगा।

मैंने अपनी स्वतंत्रता के लिए राजा के पास इतने स्मरण-पत्र तथा प्रार्थना-पत्र भेजे कि अन्त में उसे वह प्रस्ताव

मंत्रि-परिषद् के सामने प्रस्तुत करना पड़ा। इसके बाद यह प्रस्ताव सम्पूर्ण विचार सभा के सामने लाया गया। स्काइरेश बोलगोलम के अतिरिक्त किसी ने भी इसका विरोध न किया। यह बिना किसी कारण मेरा घोर शत्रु था। परन्तु पूर्ण सभा ने इसके विरोध के बावजूद प्रस्ताव पास कर दिया तथा राजा ने भी अपनी सहमति प्रदान कर दी।

साम्राज्य की समुद्री सेना का नायक, स्काइरेश बालगोलम राजा का अत्यन्त विश्वासपात्र मंत्री था। राज्य-कार्य में वह अत्यन्त निपुण था। परन्तु स्वभाव रूखा और कर्कश था अंत में इसने भी सहमति दे दी। धाराएँ बनाने का काम उसी को दिया गया। यह भी निर्णय हुआ कि स्वतंत्रता के लिए मुझे इन धाराओं तथा शर्तों के पालन के लिए सौगंध खानी पड़ेगी।

स्काइरेश बालगोलम स्वयं मेरे पास ये शर्तें लेकर आया। दो उपसचिव तथा अनेक प्रख्यात व्यक्ति उसके साथ थे। मुझे सब शर्तें पढ़कर सुनाई गईं तथा इन शर्तों के पालन के लिए मुझे सौगंध खाने का आदेश मिला। पहले तो मैंने अपने देश का परिचय के अनुसार सौगंध ली; परन्तु बाद में मुझे इन लोगों के नियमों का पालन करना पड़ा। नियमानुसार मुझे दाहिने पैर को बायें हाथ से पकड़कर दाहिने हाथ की बीच की उँगली सर के ऊपर रखकर तथा अँगूठे से दाहिने कान को छूकर सौगंध लेनी पड़ी। पाठकों की उत्सुकता तथा वहाँ के निवासियों की विचित्र परम्पराओं

के ज्ञान के लिए मैंने उन धाराओं का शुद्ध अनुवाद कर लिया है। उन्हीं धाराओं तथा शर्तों के आधार पर मुझे स्वतंत्रता प्राप्त हुई थी।

गोलावेस्टो मोमेरेम इवलैम गरडिलो शेफिन सुली उली गेइ, लिलीपुत का महानतम् सम्राट है। विश्व को आनंद देने वाले भयानक सम्राट् के राज्य का विस्तार पाँच हजार ब्लस्ट्रग्ज* है। राजाओं का राजा यह सम्राट् मनुष्यों में श्रेष्ठ तथा लम्बा है। इसके चलने से पृथ्वी काँपने लगती है और उसका मस्तक सूर्य को चुनौती देता है। सम्राट् के संकेत पर संसार के राजा घुटने टेकते हैं। सम्राट् वसंत के समान आनन्ददायक, ग्रीष्म के समान सुखदायक, शरद ऋतु के समान फलदायक तथा जाड़े के समान भयानक है। अत्यंत उदार तथा गौरवशाली सम्राट्, नरपर्वत के सम्मुख कुछ धाराएँ तथा शर्तें प्रस्तुत करता है। जिनके पालन के लिए उसे पवित्र सौगन्ध लेनी पड़ेगी। यह नरपर्वत इस विस्तृत प्रदेश में अभी हाल ही में आया है।

१. नरपर्वत बिना हमारे अनुमति-पत्र के जिस पर राजा की मुहर लगी हो, इस देश को छोड़ नहीं सकता।

२. हम लोगों के आदेश के बिना वह राजधानी में नहीं आ सकता, क्योंकि निवासियों को घर में रहने की चेतावनी देने के लिए दो घण्टे का समय आवश्यक है।

*बारह मील का एक ब्लस्ट्रग्ज होता है।

३. नरपर्वत मुख्य राजमार्गों पर ही चले। मैदानों तथा अन्न के खेतों में जाने या लेटने की अनुमति उसे नहीं है।

४. उपर्युक्त राजमार्गों पर चलते समय उसे अत्यन्त सावधानी रखनी पड़ेगी, जिसमें वह कहीं हमारे प्रिय प्रजा-जनों—गाड़ियों तथा घोड़ों को कुचल न दे। बिना अनुमति के किसी निवासी को वह हाथ में नहीं उठायेगा।

५. यदि आवश्यकता पड़ी तो पर्वताकार मनुष्य को हमारी द्रुतगामी डाक, पूर्णिमा में एक बार ले जानी पड़ेगी। संदेशवाहक तथा उसके घोड़ों को जेब में रखकर सुरक्षित ले जाने तथा यदि आदेश हो तो वापस आने का कार्य करना पड़ेगा।

६. ब्लूफस्कों* द्वीप के शत्रुओं के मुकाबिले में वह हमारा मित्र रहेगा। उसकी सेना तथा नाविक बेड़े को नष्ट करने में वह प्राणपण से चेष्टा करेगा। यह लोग हम लोगों पर आक्रमण करने की योजना बना रहे हैं।

७. नरपर्वत अवकाश के क्षणों में हमारे कारीगरों को राजकीय भवनों, विशालकाल इमारतों तथा उद्यानों की दीवारों को बनाने में सहायता देगा।

८. समुद्र के चारों ओर चक्कर लगाकर तथाकथित नरपर्वत हम लोगों के समस्त देश का भ्रमण करेगा। और

*लेखक, लिलीपुत को इंगलैंड तथा ब्लूफुस्कों को फ्रांस मानता है। फ्रांस ने इंगलैंड पर आक्रमण करने की धमकी कई बार दी थी तभी से इंगलैंड फ्रांस से आतंकित था।

दो पूर्णिमाओं की अवधि में अपने कदमों से देश का क्षेत्र-फल नापेगा।

अंत में समस्त उपर्युक्त धाराओं की सौगंध लेकर पालन करने पर नरपर्वत को दैनिक भत्ते के रूप में मांस तथा मदिरा प्रदान की जावेगी। इतनी भोज्य सामग्री हमारे १७२८ प्रजाजनों के लिए काफी होती है। इसके अतिरिक्त उसे राज्य के अन्य अनुग्रह तथा प्रजाजनों के पास स्वतंत्र यातायात का भी अधिकार होगा। राज्य की इक्यान्नवीं पूर्णिमा के दिन बाल्फोबारेक के राजप्रसाद से उपर्युक्त लेख प्रसारित किया गया।

अत्यंत प्रसन्नता तथा संतोष से मैंने सौगंध ले ली और इन धाराओं को पालन करने की प्रतिज्ञा की। कुछ धाराएँ हमारी इच्छा तथा सम्मान के विपरीत थीं जो कि स्काइरेश बालगोलम के द्वेष के कारण लेख में सम्मिलित की गई थीं। मेरी जंजीरें तत्काल ही काट दी गईं और मैं पूर्ण स्वतंत्र हो गया। सम्राट् स्वयं मेरे स्वातंत्र्य उत्सव में उपस्थित रहे और मुझे अनुगृहीत किया। आभार-प्रदर्शन के लिए साष्टांग प्रणाम करके मैंने अपना मस्तक सम्राट् के पैरों पर रख दिया परन्तु शीघ्र ही उसने उठने की आज्ञा दी और सौजन्य शब्दों से, स्वागत करके मुझे कृतार्थ किया। अपने अहंभाव को कलंकित करनेवाले शब्दों को न दुहराकर मैं सम्राट् के कथित आदेश को ही प्रस्तुत कर रहा हूँ। "सम्राट् को विश्वास हो कि मैं उनका शुभचिंतक सेवक सिद्ध हूँगा और अपने

आपको उसके द्वारा दिये हुए तथा भविष्य में दिये जानेवाले अनुग्रहों के योग्य बनाये रहूँगा।"

पाठकों ने मेरे स्वतंत्रता लेख की अंतिम धारा में देखा होगा कि सम्राट् ने १७२८ लिलीपुत निवासियों के भोज्य की साम्रग्री मेरे लिए दी है। कुछ समय के बाद मैंने एक दरबारी मित्र से पूछा कि मेरे भोजन की यह मात्रा इन लोगों में किस प्रकार निश्चित की है। उसने बतलाया कि सम्राट् के गणितज्ञों ने पंजी द्वारा मेरे शरीर का निरीक्षण किया और निष्कर्ष निकाला कि मेरा शरीर उनके शरीर से बारह गुना बड़ा है। अंत में उन्होंने बतलाया कि मेरे शरीर में १७२८ निवासी आ सकते हैं। अतः मुझे उतने लिलीयुत निवासियों के भोज्य की मात्रा की आवश्यकता होगी। इस बात से पाठक अनुमान कर सकते हैं कि वहाँ के लोग कितने कल्पनाशील और महान् सम्राट् कितना बुद्धिमान् तथा मितव्ययी था।

---

(४)

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् मेरी सर्वप्रथम प्रार्थना थी राजधानी मिल्डेंन्डो को देखने की अनुमति। सम्राट् ने सरलता से इसे स्वीकार कर लिया। परन्तु किसी मनुष्य या किसी मकान को मैं किसी भी तरह की क्षति पहुँचाने का प्रयास न करूँ इस बात पर फिर जोर दिया गया। प्रजा को घोषणा के द्वारा मेरे नगर-भ्रमण की सूचना मिल गई थी। नगर

के चारों ओर की चहारदीवारी दो फुट आधा इंच ऊँची तथा ग्यारह इंच चौड़ी है। जिस पर बड़ी आसानी के साथ एक गाड़ी तथा अनेक घोड़े एक साथ निकाले जा सकते हैं। दस-दस फुट की दूरी पर मीनारों द्वारा उसे सुरक्षित कर दिया गया है। मैं पश्चिमी द्वार को फाँद कर अत्यंत सावधानी से धीरे-धीरे दो मुख्य राजमार्गों से होकर निकला।

उस समय मैं केवल एक छोटा वासकट पहने था। मुझे भय था कि कहीं मेरे कोट से किसी मकान की छत अथवा छज्जा न टूट जाय। यद्यपि यह कठोर आज्ञा थी कि समस्त निवासियों को अपनी सुरक्षा के लिए घरों के अंदर ही रहना चाहिए। फिर भी मैं अत्यंत सावधानी के साथ सड़क पर चल रहा था। मकानों की छतों तथा अटारियों की खिड़कियों पर दर्शकों की बड़ी भीड़ थी। किसी भी यात्रा में मुझे इससे अधिक जनसंख्या वाला नगर देखने को नहीं मिला। यह नगर चौकोर है। इसकी प्रत्येक दीवार पाँच सौ फुट लंबी है। दो महान् राजमार्ग पाँच-पाँच फुट चौड़े हैं। ये नगर को चार भागों में विभाजित करते हैं। गलियाँ तथा छोटी-छोटी जिनमें मैं घुस न सका था, केवल बारह से अट्ठारह इंच तक ही चौड़ी थी। मुख्य राजमार्ग से गुजरते समय मैंने इन गलियों को देखा था। नगर के अंदर पाँच लाख मनुष्य निवास कर सकते हैं। यहाँ के मकान चार से पाँच मंजिल तक बने हैं। दूकानें तथा बाजार अत्यंत सुचारु रूप से बनाये गये हैं।

दोनों राजमार्गों के मिलने के स्थान पर मध्य में सम्राट् का राजप्रासाद स्थित है। इस प्रासाद से बीस फुट की दूरी पर, दो फुट ऊँची चहारदीवारी द्वारा यह घिरा हुआ है। महाराज ने मुझे यह चहारदीवारी लाँघने की भी आज्ञा प्रदान कर दी थी। राजप्रासाद तथा चहारदीवारी के बीच इतना विस्तृत मैदान था कि हर एक स्थान तथा वस्तु को मैं आसानी से देख सकता था। चालीस फुट चौकोर एक बाहरी दालान है। इसमें दो और दालान भी सम्मिलित हैं। इन्हीं के मध्य में राजकीय निवासस्थान है। इसे देखने की मेरी अभिलाषा अत्यंत प्रबल थी। परन्तु दालानों के बीच के द्वार केवल अठारह इंच ऊँचे तथा सात इंच चौड़े थे। अतः मेरे लिए उनका निरीक्षण असंभव था। बाहरी दालान के मकान केवल पाँच ही फुट ऊँचे थे। परन्तु उनका लाँघना मेरे लिए असंभव था। मुझे भय था कि ऐसा करने से कहीं राजभवन की कार्निस या कोई हिस्सा टूट न जाय। यद्यपि यहाँ की प्रत्येक दीवार चार इंच चौड़ी पत्थर की ईंटों से बनी थी। राजा की हार्दिक इच्छा थी कि मैं उनके महान् तथा शानदार राजप्रासाद का निरीक्षण करूँ। परन्तु ऐसा अवसर मुझे तीन दिन बाद मिल गया। इस बीच मैंने नगर से सौ गज की दूरी पर स्थित राजउद्यान के कुछ लंबे पेड़ चाकू से काटे। इन पेड़ों की लकड़ी की सहायता से मैंने दो फुट उँचे दो स्टूल बना डाले। मेरे भार को ये आसानी से सँभाल सकते थे।

प्रजाजनों को दूसरी बार चेतावनी दिलवाकर मैं फिर

राजप्रासाद को गया। दोनों स्टूल मेरे हाथ ही में थे। बाहरी दालान में आकर मैं एक स्टूल पर खड़ा हो गया। दूसरे स्टूल को उठाकर मैंने, पहले और दूसरे दालान के बीच की जगह में धीरे से रख दिया। यह जगह आठ फुट चौड़ी है। आसानी के साथ मैं इस मकान के ऊपर से, एक स्टूल से दूसरे स्टूल पर फाँद आया। हुक लगी छड़ी के द्वारा मैंने पहलेवाले स्टूल को उठा लिया। इस प्रकार मैं सम्राट् के भीतरी प्रासाद तक पहुँच पाया था। लेटकर मैं अपना सिर, बीचवाली मंजिल की खिड़की के पास ले गया। यह खिड़कियाँ कारणवश ही खुली रखी गई थीं। कल्पना के विपरीत मैंने अंतःपुर को अधिक महत्त्वपूर्ण तथा शोभित पाया। यहाँ मैंने सम्राज्ञी तथा राजकुमारों को अपने मुख्य सेवकों के साथ, सुसज्जित कमरों में देखा। मेरी ओर देख कर सम्राज्ञी मंद-मंद मुस्करा रही थी। उन्होंने खिड़की से अपना हाथ मेरे चूमने के लिए बढ़ाया।

परन्तु इससे पाठकों को यह न सोचना चाहिए कि मैं इसी तरह की और बातें भी बतलाऊँगा। इस तरह की बातें मैं उन्हें उस दूसरी पुस्तक में बतलाऊँगा जो प्रेस में छपने को तैयार है। इस पुस्तक में साम्राज्य की स्थापना तथा अन्य साधारण बातों का उल्लेख किया गया है। यहाँ के प्रारम्भिक राजाओं का वर्णन भी दिया गया है। विशेषतया उनके युद्धों, राजनीतिक सिद्धांत और विद्वत्ता का वर्णन दिया गया है। इस पुस्तक में यहाँ के धर्म, जानवर, वनस्पति

और विचित्र रीति-रिवाजों तथा दूसरी बातों का भी समावेश किया गया है। यह सब बातें कुतूहल पूर्ण और लाभदायक हैं। इस समय तो मैं केवल उन घटनाओं तथा व्यवहारों का ही वर्णन करूँगा जिनका अनुभव मुझे, इस साम्राज्य में नौ मास रहकर हुआ है।

अनुमानतः स्वतंत्रता-प्राप्ति के पंद्रह दिन बाद, एक दिन प्रातःकाल व्यक्तिगत मामलों का मुख्य सचिव रेल्ड्रेसाल केवल एक सेवक के साथ मेरे घर पर आया। अपनी गाड़ी थोड़ी दूर रोककर उसने आकांक्षा प्रगट की, कि वह मेरे साथ एक घंटे तक वार्त्तालाप करना चाहता है। इसके गुणों तथा व्यक्तिगत योग्यताओं के कारण तुरंत ही मैंने यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। जिस समय, मैं दरबार में प्रार्थी के रूप में था इसने मेरे लिए बहुत अच्छे-अच्छे काम किये थे। मेरे कान तक वह सरलता से पहुँच जाय इसलिए मैंने लेट जाने का निश्चय किया। वार्तालाप के समय वह मेरी हथेली पर ही रहना चाहता था। मेरी स्वतंत्रता पर बधाई देते हुए वह बोला कि "इसमें भी एक कपट है। यदि परिस्थितियाँ बाध्य न करतीं तो अभी इतने शीघ्र मुझे स्वतंत्रता न मिलती।" उसने कहा कि विदेशियों के आगमन से हम लोगों को सुख तथा आनंद की अपेक्षा दुःख तथा चिंताएँ ही मिलती हैं। हमारे सामने तुरंत ही आंतरिक विग्रह और शक्तिशाली बाह्य शत्रु के आक्रमण का भय उत्पन्न हो जाता है।

जहाँ तक पहली समस्या का प्रश्न है तुम्हें मालूम होना चाहिए कि साम्राज्य में दो प्रतिद्वंद्वी दल ट्रेमेक्सन् तथा स्लेमेक्सन* गत सत्तर पूर्णिमाओं से चले आ रहे हैं। यह लोग अपना विरोध तथा अंतर स्पष्ट करने के लिए ऊँची और नीची एँड़ी के जूतों का व्यवहार करते हैं। यह स्वीकार कर लिया गया है कि ऊँची एँड़ीवाले प्राचीन विचारों के प्रबल समर्थक हैं। परन्तु महाराज ने निश्चय कर लिया है कि शासन के क्षेत्र में वह केवल नीची एँड़ीवालों को ही स्थान देंगे। जितने भी पद उपहार के रूप में प्रदान किये जाते हैं वह सब नीची एँड़ीवालों को ही दिये जाते हैं। यहाँ तक कि तुम देख सकते हो कि महाराज के जूतों की एँड़ियाँ दरबार के सभी व्यक्तियों की एँड़ियों से, कम-से-कम एक ड्रर (इंच का चौदहवाँ भाग) नीची हैं। दोनों दल एक दूसरे से इतनी घृणा करते हैं कि न तो एक दूसरे के साथ खाते-पीते हैं और न वार्त्तालाप ही करते हैं।

गणना के अनुसार, ट्रेमेक्सन या ऊँची एँड़ीवाले दल

---

*ऊँची एँड़ी तथा नीची एँड़ी 'टोरी' तथा 'विग' दलों की प्रतीक हैं। अपने जीवन के अंतिम भाग में स्विफ्ट महोदय को दलों से बहुत घृणा हो गई थी। आपके विचार से व्यर्थ के तथ्यों तथा अंतर प्रदर्शित करने के लिए ही दलों का प्रादुर्भाव हुआ है। कुछ बातों के लिए, जिन पर विग तथा टोरी तर्क उपस्थित करते हैं, आपका विचार है यदि दोनों पक्ष विचार-विनिमय करें तो दोनों ओर की शिकायत आपस में कर लें।

के सदस्यों की संख्या हम लोगों से अधिक है परन्तु शक्ति पूर्ण रूप से, हम लोगों के हाथ में है। हम लोगों को भय है कि राज्य का उत्तराधिकारी ऊँची एँड़ीवाले दल का समर्थक है। यहाँ तक कि हम लोग, स्पष्ट रूप से देख सकते हैं कि उसकी एँड़ी दूसरी एँड़ी से ऊँची है जिसके कारण वह लँगड़ा लँगड़ा कर चलता है* । इन विकट आंतरिक अशांतियों के बीच हम लोगों को ब्लेफुस्कू द्वीप के आक्रमण की आशंका है। यह द्वीप भी हमारे द्वीप की भाँति अत्यंत शक्तिशाली तथा विशाल है। जैसा हम लोगों ने सुना था और तुम्हारे आने पर विश्वास हो गया है कि संसार में दूसरे राज्य तथा देश हैं जहाँ तुम्हारी तरह के मनुष्य रहते हैं। हमारे दार्शनिकों को आश्चर्य है कि हम लोगों के अतिरिक्त अन्य मनुष्य भी पृथ्वी पर बसते हैं। उनका विचार है कि तुम चन्द्रलोक या किसी दूसरे नक्षत्र से उतर कर आये हो। तुम्हारे जैसे केवल सौ आदमी ही इस साम्राज्य के सभी जानवरों तथा फलों को क्षण में ही विनष्ट कर सकते हैं। हमारे छः हजार पूर्णिमाओं के इतिहास में दो महान्

---

*इस स्थल पर लेखक ने, प्रिंस आफ वेल्स (जो बाद में जार्ज द्वितीय के नाम से प्रसिद्ध हुए) की कूटनीतिज्ञता का परिचय दिया है। प्रिंस आफ वेल्स दोनों दलों का पक्षपाती था। अतः इस बात का पता लगाना कि राजा बनने पर वह किस दल का समर्थन करेगा, नितांत असंभव था। इसके विचित्र राजनैतिक व्यवहार तथा चतुरता का विद्रूप किया करता था।

साम्राज्यों लिलीपुत तथा ब्लेफुस्कू के अतिरिक्त किसी भी साम्राज्य का वर्णन नहीं है। अब मैं तुम्हें बतलाने जा रहा हूँ कि पिछली छः सौ पूर्णिमाओं से यह दोनों देश बराबर लड़ते चलते आ रहे हैं। एक दूसरे के ये कट्टर विरोधी हैं।

आगे की घटना से तुमको मालूम हो जायेगा कि दोनों देश के पारस्परिक सम्बन्ध किस तरह के हैं और कितनी कटुता है। प्राचीन काल में हमारे पूर्वज खाने से पूर्व अंडे को बड़े सिरे से तोड़ते थे। यह परम्परा समस्त देश में प्रचलित थी। परन्तु महाराज के बाबा एक बार, अपने बाल्यकाल में प्राचीन रीति से अंडे को तोड़ रहे थे। अचानक उनकी एक उँगली कट गई। इस बात पर सम्राट् ने एक विज्ञप्ति निकाली कि सब लोगों को अब अंडा छोटे सिरे से तोड़कर खाना पड़ेगा अन्यथा उन्हें कठोर दण्ड दिया जायेगा। प्रजा ने इसका घोर विरोध किया। इतिहास साक्षी है कि जनता में इसी कारण छः विद्रोह हुए। एक राजा मौत के घाट उतार दिया गया तथा दूसरे को तो सिंहासन ही छोड़ना पड़ा। ब्लूफुस्कू का राजा सदैव इन गृह-विप्लवों में मदद देता है। विद्रोहों के शांत होने के बाद निष्काशित विद्रोही सदैव वहाँ ही आश्रय पाते हैं। गणना के अनुसार ग्यारह हजार लोगों को विभिन्न समयों पर इसी नियम के उल्लंघन पर मृत्यु-दण्ड दिया गया। इनका अपराध केवल यही था कि उन्होंने छोटे सिरे से अंडे को तोड़कर खाने में असहमति प्रगट की थी। इस झगड़े पर सैकड़ों पुस्तकें

प्रकाशित की गई परन्तु अण्डे को बड़े सिरे से तोड़नेवालों* की पुस्तकें अरसे से अवैध घोषित कर जब्त कर ली गईं। और उस दल के सभी सदस्यों को सरकारी नौकरियों के अयोग्य घोषित कर दिया गया।

इसी झगड़े के दौरान में, ब्लूफुस्कू के सम्राटों ने कई बार अपने राजदूतों के द्वारा धर्म में फूट डालने का आरोप हम लोगों पर लगाया। उनका कहना है कि हम लोगों ने उनके महान् पैगम्बर लस्ट्राग के मूल सिद्धांतों का उल्लंघन किया है। ब्लन्डेक्राल (उनकी धर्म-पुस्तक) के चौवनवें अध्याय में इस सिद्धांत का वर्णन है। मूल लेख की भाषा तोड़-मरोड़कर उन लोगों ने सिद्धांत का उल्लंघन सिद्ध किया है। मूल लेख में लिखा है कि "समस्त सच्चे विश्वासी

---

*अण्डे को बड़े सिरे से तोड़नेवाले छोटे सिरे से तोड़नेवाले, रोमन कैथोलिक तथा प्रोटेस्टेंट सम्प्रदायों के सदस्यों का प्रतिनिधित्व करते है। यहाँ लेखक पुनः उन लोगों के प्रति रोष तथा घृणा प्रगट कर रहा है जो छोटे-छोटे विरोधों को अत्यंत महत्त्व प्रदान करते हैं। इसके अलावा वह यह भी दिखा रहा है कि अपने विरोधी मतावलम्बियों को दबाने के लिए कितने कठोर तथा घृणित उपाय व्यवहार में लाये जाते हैं। फ्रांस सदैव जलती आग में घी डाला करता है। वह इस ताक में रहता है कि कब उसे इन प्रवृत्तियों को भड़काने का अवसर मिले। उस समय कैथोलिक लोगों की दयनीय दशा का वर्णन करने के लिए ही स्विफ्ट महोदय बतलाते हैं कि वैधानिक रूप से राज्य का कोई भी पद उन लोगों को नहीं दिया जाता था जो अण्डे को गलत तरीके से तोड़ते थे।

अण्डे को सुविधापूर्वक, किसी भी सिरे से तोड़ते हैं।" मेरे मतानुसार तो सिरे की सुविधा प्रत्येक व्यक्ति की इच्छा पर निर्भर होनी चाहिए या इसका निर्णय मुख्य मजिस्ट्रेट के हाथ में होना चाहिए। ब्लूफुस्कू के दरबार में, निष्काशित व्यक्तियों का बहुत मान होने के कारण, तथा वहाँ के प्रोत्साहन और सहायता से हमारे देश में अनेक गुप्त समितियाँ बन गयी हैं। और दोनों देशों में तिरसठ पूर्णिमाओं से लगातार खून-खराबे होते चले आ रहे हैं। कुछ में इन्हें बाहरी सहायता भी मिली है।

इन युद्धों के कारण हमारे चालीस बड़े तथा अन्य छोटे-छोटे जहाज नष्ट हो गये। तीस हजार के करीब योग्य तथा अनुभवी नाविक और सैनिक खेत रहे। शत्रुओं की हमसे अधिक हानि हुई। उनके भी हजारों नाविक, सैनिक तथा जहाज नष्ट हो गये। परन्तु इस बार इन लोगों ने कई बड़े-बड़े जहाजी बेड़े तैयार किये हैं। शीघ्र ही हम लोगों पर एक बड़ा हमला होनेवाला है। महाराज को आपके शौर्य तथा शक्ति पर विश्वास है। मुझे आज्ञा दी गई है कि मैं सब बातें आपसे बता दूँ।"

मैंने सेक्रेटरी से सम्राट् के प्रति अपने कर्तव्य को पालन करने की इच्छा प्रगट की। मैंने अनुरोध किया कि वह सम्राट् को बता दे कि विदेशी होने के कारण दलगत झगड़ों में हस्तक्षेप करना मेरे लिए उचित न होगा। परन्तु स्वयं

को संकट में डालकर भी मैं सम्राट् तथा उसके साम्राज्य को समस्त बाह्य आक्रमणों से रक्षा करूँगा।

---

(५)

ब्लूफुस्कू का साम्राज्य, लिलीपुत के उत्तर-पूर्व में स्थित है। दोनों देशों के बीच आठ सौ गज चौड़ी केवल एक जलडमरूमध्य है। मैंने अब तक खाड़ी नहीं देखी है। इस संभावित आक्रमण के कारण, मैं समुद्र के उस किनारे पर जाना नहीं चाहता। मुझे भय है कि कहीं शत्रु के जहाज मुझे देख न लें। उन लोगों को हमारी कोई खबर अब तक नहीं मिल पाई है। युद्ध के समय से, दोनों देशों के पारस्परिक संबंध अवैध घोषित किये जा चुके हैं। सम्राट् की आज्ञा उल्लंघन करनेवाले को प्राणदण्ड दिया जायगा। महाराज ने समस्त जहाजों पर प्रतिबंध लगा दिया है।

शत्रुओं के समस्त जहाजी बेड़ों को पकड़ने की अपनी योजना मैंने सम्राट् के सम्मुख प्रस्तुत की। गुप्तचरों के द्वारा हमें ज्ञात हुआ कि जहाजी बेड़े अभी बंदरगाह पर लंगर डाले आक्रमण के लिए अनुकूल वायु की प्रतीक्षा कर रहे हैं। मैंने योग्यतम नाविकों से जलडमरूमध्य की गहराई के संबंध में परामर्श किया। जो इसे कई बार नाप चुके थे। इन नाविकों ने मुझे बतलाया कि पानी बीच में सत्तर ग्लमगफ तथा अन्य स्थानों पर पचास ग्लमगफ से अधिक नहीं है। एक ग्लमगफ योरपीय फुट के बराबर होता है।

मैं उत्तर-पूर्वीय समुद्री किनारे पर ब्लूफुस्कू की ओर चल पड़ा। एक छोटी पहाड़ी के नीचे लेटकर मैंने अपनी दुरबीन निकाल ली और शत्रुओं के जहाजी बेड़े को लंगर डाले हुए देखा। इस बेड़े में करीब पचास युद्ध-जलपोत तथा कुछ सामान लादनेवाले जहाज थे। फिर मैं घर लौट आया। मजबूत रस्सियों के लिए आदेश दिया। यह सब सामान लेने के लिए मेरे पास अनुमति-पत्र था। रस्सियाँ कपड़े सीनेवाले धागे जैसी और लोहे की छड़ें जाली बिनने-वाली सूई की भाँति थी। अधिक मजबूत बनाने के लिए मैंने तीन-तीन रस्सियाँ एक में बँट लीं। इसी भाँति लोहे की तीन छड़ों को एक में लपेट कर और उनके सिरों को मोड़कर उन्हें हुक के आकार का बना लिया। पचास हुकों को इतनी ही रस्सियों में बाँधकर मैं फिर उत्तर-पूर्वीय समुद्री किनारे पर वापस लौट गया। वहाँ पहुँचकर मैंने कोट, जूते और मोजे उतार डाले। ज्वार के आध घंटे पूर्व चमड़े की वास्कट पहनकर मैं पानी में धँस पड़ा। अपनी शक्ति भर शीघ्रता से पानी में चलता रहा। बीच में तीस गज तैरने के बाद मेरे पैर तलहटी में लगे। आध घंटे से कम ही समय में मैं जहाजी बेड़े के पास पहुंच गया।

शत्रु मुझे देखकर इतने भयभीत हुए कि फौरन जहाजों से कूदकर किनारे की ओर तैर गये। तीस हजार से कम मनुष्य वहाँ न थे। मैंने अपना सब सामान निकाल लिया और प्रत्येक जहाज के अगले सिरे को हुक से बाँध कर

सबके सिरे एक में बाँध लिये। मैं इस काम को कर ही रहा था कि शत्रुओं ने हजारों तीर मेरे ऊपर छोड़े। बहुत से चेहरे तथा हाथों में लगे। इससे मुझे बड़ा कष्ट हुआ और मेरे काम में भी बाधा पड़ गई। मुझे अपनी आँखों के लिए बहुत डर था। यदि शीघ्र ही एक उपाय न सूझ जाता तो वास्तव में मेरी आँखें अवश्य ही नष्ट हो गई होतीं। छोटी जेब में एक चश्मा भी अन्य सामान के साथ मैंने अपने पास रख लिया था। तलाशी के समय राजा के अधिकारियों को वह दिखाई न पड़ा था। मैंने फौरन ही उसे निकाल कर लगा लिया। इस भाँति तैयार होकर मैंने शत्रुओं की बाण-वर्षा की पूरी उपेक्षा की और अपने कार्य में संलग्न हो गया। कई तीर चश्मे के शीशों पर लगे परन्तु उससे कुछ भी नुकसान न हुआ। जब मैं सब हुक जहाजों में फँसा चुका तो रस्सी हाथ में लेकर खींचना शुरू किया। परन्तु कोई जहाज टस से मस न हुआ। सभी जहाज मजबूत लंगरों से बँधे थे। मेरे साहस की परीक्षा तो अभी बाकी ही थी।

जहाजों के हुकोंवाली रस्सी छोड़कर मैं फिर उनकी ओर बढ़ा। दृढ़ता से लंगर बाँधनेवाले रस्से मैंने चाकू से काट दिये। यह सब काम करते समय करीब दो सौ से अधिक तीर मेरे चेहरे तथा हाथों पर लगे। इसके बाद मैंने वह रस्सियाँ फिर उठायीं जिसमें सब हुक बँधे हुए थे। बड़ी आसानी के साथ मैं वे शक्तिशाली पचास जहाज घसीट लाया।

ब्लूफुस्कू निवासियों को मेरे इरादे का तनिक भी आभास न था। पहले तो वे अत्यंत चकित हो गये। उन्होंने मुझे रस्सियाँ काटते देखा तो समझे कि मेरा इरादा जहाजों को उलटने-पुलटने तथा एक दूसरे को टकराने से है। परन्तु जब उन लोगों ने सारे बेड़े को मेरे पीछे घसिटते देखा तो दुःख तथा निराशा से चीत्कार करने लगे। वह भयानक तथा मर्मभेदी चीत्कार वर्णन करना या सोचना भी असंभव है। जब मैं खतरे से दूर हो गया तो चेहरे तथा हाथों में चुभे तीर निकालने के लिए क्षण भर रुका। थोड़ा मलहम निकालकर मैंने घावों पर मल लिया। यह मलहम जैसा कि मैं बता चुका हूँ मेरे आने के बाद मुझे दिया गया था। चश्मा उतार कर एक घंटे तक ज्वारभाटे का वेग घटने की प्रतीक्षा करता रहा। जब पानी कुछ घटा तो बेड़े को घसीटकर, लिलीपुत के राजसी बंदरगाह पर सुरक्षा से ले आया।

राजा अपने दरबारियों के साथ इस अपूर्व साहसिक कार्य का परिणाम देखने के लिए किनारे पर उपस्थित था। अर्ध चन्द्रमा के धवल प्रकाश में इन लोगों ने जहाजी बेड़े को अपनी ओर आते देखा। परन्तु छाती तक पानी में डूबे होने के कारण ये लोग मुझे देख न पाये थे। जब मैं खाड़ी की ओर बढ़ा तो ये लोग बहुत घबराये क्योंकि उस समय मेरी गरदन के नीचे का सारा भाग पानी में डूबा हुआ

था।* सम्राट् को विश्वास हो गया था कि मैं डूब गया और शत्रु का जहाजी बेड़ा आक्रमण के लिए बढ़ रहा है परन्तु शीघ्र ही डर दूर हो गया। जितना ही मैं आगे बढ़ता खाड़ी उथली आती जाती थी। मैं उन्हें रस्सा पकड़े कुछ ही देर में दिखाई पड़ा। रस्से से सारे जहाज बँधे थे। अत्यंत तेज आवाज से मैं चिल्लाया "लिलीपुत के प्रतिभाशाली सम्राट् अमर हों।" सम्राट् ने वापसी में मेरा बड़ा स्वागत तथा अभ्यर्थना की। लिलीपुत की सबसे बड़ी पदवी नारडेक से मुझे विभूषित किया गया।

सम्राट् की आकांक्षा थी कि मैं शीघ्र ही पुनः वहाँ जाकर शेष जहाज शत्रु के बंदरगाह पर घसीट लाऊँ। उसकी लालसा तो इतनी बढ़ी, कि वह सारे ब्लूफुस्कू के साम्राज्य, को एक प्रांत बना कर, राज्यपाल द्वारा स्वयं उसका शासन-संचालन करना चाहता था। निष्काशित बड़े सिरे से अण्डा तोड़नेवाले (बिग एडियन्स) को नष्ट करके,

---

*प्रोफेसर डे मोरगेन के कथनानुसार, लेखक ने इस स्थल पर अपने नायक की वीरता का वर्णन अत्यंत बढ़ा चढ़ा कर किया है। आठ सौ गज की चौड़ी खाड़ी में गुलीवर गरदन तक पानी में डूबे रहकर भी, पचास युद्धपोत घसीट लाता है। यह बात पूर्णतः असंभव तथा अतिशयोक्तिपूर्ण प्रतीत होती है यद्यपि स्विफ्ट महोदय ने लिलीपुत की समस्त वस्तुओं का आकार वर्णन करने में अत्यंत सावधानी से काम लिया है जिससे वहाँ के निवासियों और वर्णित वस्तुओं में सामंजस्य बना रहे परन्तु यहाँ वर्णित पैमाना उचित नहीं प्रतीत होता।

सब को छोटे सिरे से अण्डे को तोड़ने के लिए विवश करना चाहता था। इस भाँति उसकी अभिलाषा, समस्त संसार को अपने आधिपत्य में कर लेने की थी।* परन्तु न्याय तथा नीति के तर्क उद्धृत करके, मैंने उसकी योजना सफलीभूत न होने देने का प्रयत्न किया । स्पष्ट शब्दों में, मैंने इसका विरोध करते हुए कहा "कि एक स्वतंत्र तथा वीर देशवासियों को गुलाम बनाने के घृणित कार्य में मैं कभी योग नहीं दे सकता।" जब इस प्रस्ताव पर, परिषद् में परामर्श तथा विवेचन हुआ तो मंत्रिमंडल के योग्य तथा बुद्धिमान् मंत्री मुझसे सहमत थे।

सम्राट् की योजनाओं तथा कूटनीति के विरुद्ध मेरी साहसपूर्ण स्पष्ट घोषणा खतरे से खाली न थी। और उसने मुझे कभी इस अपराध के लिए क्षमा न किया। अत्यन्त चातुर्य तथा कौशल के साथ सम्राट् ने परिषद् के सामने यह प्रस्ताव उपस्थित किया। मुझे बाद को बतलाया गया कि वहाँ कुछ योग्य व्यक्तियों ने मेरा पक्ष लिया। परन्तु, दूसरे जो मेरे शत्रु थे, इसको सहन न कर सके। यह बात मुझे बाद में चुपके से मालूम हो गई थी। इसी समय से सम्राट् तथा मंत्रियों की गुप्त मंडली में षड्यंत्र प्रारम्भ हो गये।

---

*मेलबोर्न के सफल कार्यकाल के मध्य में इंगलैण्ड के कुछ लोगों का प्रस्ताव था कि युद्ध की विभीषिका को पूर्णतया समाप्त करने के लिए फ्रांस को पूर्णतया गुलाम बना लेना चाहिए। यह "योग्य व्यक्ति" न तो मंत्रिमंडल के थे और न जनता के।

करीब दो मास पूर्व ही मुझे इसका भेद मिल गया अन्यथा मेरा तो पूर्ण सर्वनाश हो हो चुका था। सम्राट् के प्रति मेरी महान् सेवायें, उनकी इच्छा पूर्ति न करने के कारण अत्यन्त नगण्य सिद्ध हुईं।

इस कौशलपूर्ण साहसिक कार्य के तीन सप्ताह पश्चात् ही ब्लूफुस्कू से सन्धि की याचना करने के लिए दल आ पहुँचा। शीघ्र ही यह सन्धि सम्राट् ने स्वीकार कर ली। इस सन्धि से उसे बड़ा लाभ था। पाठकों को वे शर्तें बताकर परेशान न करूँगा। उस दल में छः राजदूत तथा पाँच सौ सेवक थे। इन लोगों का शानदार प्रवेश उनके कार्य, सम्राट् की महत्ता का द्योतक था। सन्धि का कार्य पूरा हो जाने पर उन्हें मेरे बारे में भी पता चला। इन लोगों को व्यक्तिगत रूप से ज्ञात हुआ कि मैं इनका बड़ा भारी मित्र सिद्ध हुआ हूँ। इन कार्यों से प्रभावित होकर ही ये लोग मुझसे मिलने आये।

मेरी वीरता तथा उदारता की इन लोगों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। उन्होंने मुझे अपने सम्राट् की ओर से ब्लूफुस्कू की राजधानी आने के लिए निमंत्रित किया। मुझसे प्रार्थना की कि मैं उनके सामने अपने आश्चर्ययुक्त कौशलों का प्रदर्शन करने की कृपा करूँ। मैंने कुछ करतब उन लोगों को दिखलाये भी पर पाठकों को उसका वर्णन देकर मैं उनको कष्ट नहीं देना चाहता।

मैंने वहाँ के राजदूतों तथा उनके दलवालों का काफी

मनोरंजन किया जिससे उन्हें अत्यंत आश्चर्य तथा संतोष हुआ। मैंने उनसे नम्र निवेदन किया कि वे मेरी शुभ-कामनायें तथा सम्मान अपने सम्राट् तक पहुँचा दें। सम्राट् के यश तथा गुणों के कारण उसकी कीर्ति सर्वत्र प्राप्त है। स्वदेश लौटने के पहले सम्राट् का दर्शन मैं अवश्य करूँगा। अतः जब मुझे लिलीपुट सम्राट् से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ तो मैंने ब्लूफुस्कू के सम्राट् के पास जाने के लिए अनुमति-पत्र की याचना की। जिसे सम्राट् ने स्वीकार कर लिया। परन्तु मुझे आभास हुआ कि उन्होंने यह अनुमति उदासीन भाव से दी है। इसका पता तो पहले मुझे लगा नहीं। बाद में एक व्यक्ति के द्वारा इसका रहस्य खुला। फिल्मनेप तथा बोलगोलम ने राजदूतों के साथ मेरे व्यवहार को अत्यंत घृणास्पद बतलाया। परन्तु मुझे विश्वास है कि मेरा मस्तिष्क पूर्णतया इन बातों से मुक्त था।* यह पहला अवसर था कि मंत्रियों तथा दरबारियों के प्रति मेरे मन में दूषित विचार उत्पन्न होने लगे।

यह बात ध्यान देने की है कि मैं उन राजदूतों से दुभाषिये के द्वारा बातचीत कर रहा था। योरोप के देशों की भाँति दोनों देशों की भाषायें पूर्णतया भिन्न थीं। दोनों

*लेखक उस स्थल पर अपने मित्र बोलिंब्रोक की निर्दोषिता सिद्ध करने का प्रयत्न करता है। वालपोल ने बोलिंगब्रोक को राजद्रोही सिद्ध किया था। वह उस कमेटी का सभापति था जिसे यह अभियोग सिद्ध करने का कार्य दिया गया था।

देशवासी अपनी-अपनी भाषाओं की प्राचीनता, सुंदरता तथा वाणी के ओज का प्रमाण प्रस्तुत किया करते थे। स्पष्ट शब्दों में अपने पड़ोसी के प्रति घृणास्पद शब्दों का व्यवहार करते थे। परन्तु हमारे सम्राट् ने जहाजी बेड़ा छीनकर उन्हें बाध्य किया कि वे अपना परिचय-पत्र तथा भाषण लिलीपुत की भाषा में ही दें। दोनों देशों में बहुत समय से व्यापारी तथा औद्योगिक संबंध रहा है। एक देश के निकाले हुए व्यक्ति दूसरे में बराबर शरण लेते रहे हैं। इसलिए एक दूसरे की आन्तरिक दशा दोनों को ज्ञात है। यह रीति तो सभी जगह है कि भिन्न-भिन्न देशों के रीति-रिवाज तथा सामाजिक स्तर के अध्ययन के लिए युवा तथा धनवान् लोग जाते हैं। इससे उन्हें संसार का ज्ञान हो जाता है और वे अन्य उन्नत देशों की भाँति प्रगति के पथ पर अग्रसर होने का प्रयत्न करते हैं।

इनमें से कुछ ही लोग बुद्धिमान् तथा योग्य नाविक या व्यापारी होते हैं जो बदरगाहों पर रुकते हैं। ऐसे अवसरों पर दो देशों की भाषा की भिन्नता विचारों के आदान-प्रदान में बाधक होती है।

कुछ सप्ताह बाद जब मैं ब्लेफेस्कू के सम्राट् के पास आदर और सम्मान प्रदर्शित करने गया तो ज्ञात हुआ कि शत्रुओं की ईर्ष्या के कारण मैं झमेले में पड़ गया हूँ परन्तु यह सब बातें मेरे लिए उपयोगी ही सिद्ध हुईं। उचित स्थान पर मैं इनका वर्णन करूँगा।

(६)

यद्यपि मैंने निश्चय कर लिया है कि इस साम्राज्य का पूर्ण वर्णन एक पृथक् पुस्तक में दूँगा। परन्तु पाठकों का कुतूहल शांत करने के लिए मैं कुछ साधारण बातें इसी अवसर पर बतलाऊँगा। देशवासियों के छः इंची आकार के कारण यहाँ की अन्य वस्तुएँ, पेड़, पौधे तथा जानवर भी उसी अनुपात से लम्बे हैं। उदाहरणार्थ ऊँचे से ऊँचा घोड़ा या बैल पाँच इंच से अधिक ऊँचा नहीं होता, भेड़ साधारणतया एक डेढ़ इंच की ही होगी। वहाँ का हंस गौरैया के बराबर है। यही अनुपात छोटे प्राणियों का लगा लीजिए। यहाँ तक कि जब छोटी-से-छोटी वस्तु का नम्बर आता है तो हमारी आँखों से वह दिखाई ही नहीं पड़ सकती। परन्तु प्रकृति ने लिलीपुत निवासियों को ऐसी दृष्टि प्रदान की है कि वे सब वस्तुएँ सरलता से देख लेते हैं। प्रत्येक वस्तु को वह बिल्कुल ठीक तरीके से देखते हैं परन्तु दूर से नहीं देख पाते। निकट की वस्तुओं की उनकी दृष्टि अत्यन्त तेज है। जब मैंने एक रसोइये को लवा पक्षी काटते देखा जो साधारण मक्खी से बड़ा न था तब मुझे अत्यन्त कुतूहल हुआ। इसी भाँति एक लड़की अदृश्य सुई से अदृश्य रेशमी कपड़े पर कसीदा काढ़ रही थी।

यहाँ का ऊँचा से ऊँचा पेड़ भी करीब सात फुट से अधिक नहीं होता। राजा के उद्यान के कुछ पेड़ों की चोटी तो मैं केवल मुट्ठी फैलाने से ही छू सकता था। अन्य वनस्पति भी

इसी अनुपात से थे परन्तु यह सब बातें मैं पाठकों की कल्पना पर छोड़े देता हूँ।

इस समय मैं केवल उनकी योग्यता तथा विद्वत्ता के बारे में थोड़ा वर्णन करना चाहता हूँ। साहित्य के प्रत्येक क्षेत्र में वहाँ आशातीत प्रगति हुई थी। परन्तु इनकी लेखन-शैली (लिपि) अत्यन्त विचित्र है। योरोप निवासियों की भाँति इनकी लिपि न तो बायें से दाहिनी ओर है और न अरबों की भाँति दाहिने से बाईं ओर। उनकी लिपि चीनियों की भाँति ऊपर से नीचे की ओर भी न थी। ये लोग इंगलैण्ड की महिलाओं की भाँति कागज के एक कोने से दूसरे कोने तक तिरछी लिखावट का प्रयोग करते थे।

इस देश के कुछ नियम तथा रीति-रिवाज अत्यन्त विचित्र हैं। यदि ये मेरे प्यारे देश के नियमों तथा रीति-रिवाजों से सर्वथा विपरीत न होते तो मैं उन्हें न्यायसंगत ठहराने का लाभ संवरण न कर पाता। मुझे केवल इतना ही कहना है कि इनका पालन भी करवाया जाता है।

राज्य के विरुद्ध सभी अभियोगों में कठोर दण्ड की व्यवस्था है। परन्तु यदि अपराधी मुकदमें में पेश होकर अपनी निर्दोषिता प्रमाणित करने में सफल हो जाता है तो अभियोग लगानेवाले की अपमानजनक मृत्यु हो जाती है। उसकी चल अथवा अचल सम्पत्ति से, निर्दोष अपराधी को काफी हरजाना भी मिलता है। यह हरजाना उसे समय-हानि, जेल के कष्ट, अन्य असुविधाओं तथा उन सब खर्चों

के लिए मिलता है जो वह अपनी रक्षा के लिए करता है। यदि उसकी सम्पत्ति अपर्याप्त होती है तो सरकार कमी की पूर्ति स्वयं करती है। सम्राट् भी उसपर अपना अनुग्रह प्रकट करता है। समस्त नगर में उसकी निर्दोषिता की घोषणा भी करवा दी जाती है।

चोरी की अपेक्षा जाल (छल) को ये लोग बड़ा अपराध मानते हैं। इसी कारण, शायद ही कभी ऐसे अपराधी मृत्यु-दण्ड से बचे हों। इन लोगों का तर्क है कि साधारण ज्ञान द्वारा आसानी से थोड़ी देख-रेख और सावधानी से मनुष्यों की सम्पत्ति-चोरी बचाई जा सकती है। परन्तु ऊँची चालाकी के आगे ईमानदारी टिक नहीं सकती। अतः जहाँ सदैव वस्तुओं का लेन-देन और उधार-व्यवहार चलता रहता है वहीं छल-कपट फलता-फूलता है। कोई भी नियम इसे रोकने के लिए नहीं है। ईमानदार बेचनेवाला सदैव घाटे में रहता है जब कि धूर्त को लाभ ही लाभ होता है।

मुझे याद है कि एक बार मैं किसी अपराधी की सिफारिश के लिए राजा के पास गया था। मालिक को धोखा देकर चुपके से बैंक का रुपया निकालकर वह भाग गया था। मैंने राजा से निवेदन किया कि 'सरकार यह तो केवल विश्वास खोने का ही अपराध है।' राजा ने मेरे इस प्रस्ताव को 'राक्षसी' संज्ञा दी और कहा सिफारिश करके मैं इस अपराध को प्रोत्साहन दे रहा था। वास्तव में मैं इसका कुछ भी उत्तर न दे पाया। मैंने कहा कि विभिन्न देशों

के विभिन्न रीति-रिवाज होते हैं। मैं स्वीकार करता हूँ कि मैं उस समय बहुत झेंप गया था।

साधारणतया हम लोग मानते हैं कि पारितोषिक एवं दण्ड की धुरी पर ही सारी सरकार घूमती है। परन्तु इस सिद्धान्त का व्यावहारिक प्रयोग लिलीपुत के अतिरिक्त मुझे कहीं भी न दिखाई पड़ा। जो कोई व्यक्ति, यह सिद्ध कर ले जाये कि तिहत्तर पूर्णिमाओं से उसने यहाँ के नियमों का कठोरता से पालन किया है तो उसकी दशा तथा सामाजिक स्थिति के अनुसार कुछ विशेषाधिकार उसे प्राप्त हो जायेंगे। अनुपात से कुछ रुपया भी मिल जायगा जो इसी कार्य के लिए जमा रहता है।

इसी भाँति उस मनुष्य को 'स्निलपाल' या 'विधिवेत्ता' की उपाधि भी प्राप्त हो जाती है। यह उपाधि उसके नाम के साथ जुड़ जाती है परन्तु यह परम्परागत नहीं है।* जब मैंने उन लोगों को यह बताया कि हमारे देश में नियम, बिना किसी इनाम के, केवल दण्ड द्वारा लागू किये जाते हैं तो उन लोगों को हमारी यह नीति अत्यन्त विलक्षण तथा दोषपूर्ण मालूम हुई। इसी कारण यहाँ के उच्च न्यायालय में जिस न्याय-मूर्ति की स्थापना की गयी है उसके छः आँखें दिखलायी गयी हैं। उस मूर्ति के दो आगे तथा कुछ पीछे प्रत्येक दिशा में एक-एक आँख दिखलाई गई है। इसका

*यहाँ लेखक, इंगलैंड की शासन-प्रणाली पर व्यंग्य करता है, वहाँ अधिकांश पद परम्परागत चले आ रहे हैं।

तात्पर्य है कि न्याय-मूर्त्ति सब देखती है। दाहिने हाथ में सोने का एक खुला थैला तथा बायें में एक तलवार धारण किये हैं जो म्यान में बन्द है। वह सब बातें प्रगट करती है कि दण्ड देने की अपेक्षा, इनाम देना, यह अधिक पसंद करती है।

राज्य के सब पदों के निर्वाचन में, योग्यता की अपेक्षा नैतिकता पर विशेष महत्त्व दिया जाता है। मानव जाति के लिए सरकार आवश्यक होने के कारण यहाँ के लोगों का विश्वास है, कि प्रत्येक मनुष्य अपनी विचारधारा और दृष्टिकोण के अनुसार किसी-न-किसी स्थान के लिए उपयुक्त होता है। परमेश्वर ने सार्वजनिक कार्यों के प्रबंध का उत्तर-दायित्व केवल कुछ योग्य व्यक्तियों के ही हाथ में नहीं दिया है। यहाँ की विचारधारा के अनुसार, न्याय, सत्य, संयम तथा इसी प्रकार के अन्य गुण प्रत्येक मनुष्य में विद्य-मान रहते हैं। इन सद्गुणों का पालन करके, अपने अनुभव तथा शुद्ध विचारों के कारण कोई भी देशवासी सरकारी पद प्राप्त करने के योग्य हो जाता है। परन्तु जिन पदों में विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता है वहाँ यह नियम लागू नहीं होता। इन लोगों के विचारों के अनुसार, नैतिक गुणों की पूर्ति मानसिक योग्यताओं से नहीं हो सकती। केवल मानसिक योग्यतावाले मनुष्यों को कभी भी यह पद नहीं दिये जा सकते। यदि कोई योग्य मनुष्य अनजाने में गल्ती करता है तो वह उतना दोषी नहीं है जितना वह व्यक्ति जो जान-

बूझ कर गलती करता है। दूसरे प्रकार के मनुष्य जनता के जोश को ठंढा कर देते हैं। इन लोगों में अपने दोषों को छिपाने......करने से विशेष क्षमता हो जाती है।

इसी भाँति ईश्वर पर विश्वास न करनेवाला व्यक्ति भी किसी पद के लिए अयोग्य माना जाता है। लिलीपुत निवासी राजा को ईश्वर का प्रतिनिधि मानते हैं।

इनके विचार से यदि कोई राजा ऐसे व्यक्तियों को नियुक्त करता है जो ईश्वर-विश्वासी नहीं हैं तो यह उसके लिए अत्यंत अपमानजनक वस्तु है क्योंकि स्वयं तो वह अपने को ईश्वर का प्रतिनिधि कहता है और उसी के नाम पर शासन करता है परन्तु उसके नौकर ईश्वर पर विश्वास नहीं करते। इन सब नियमों का सम्बन्ध केवल वास्तविक संस्थाओं से है। आधुनिक समय की पतित संस्थाओं में इन नियमों का पालन नहीं होता है। मनुष्य के पतित विचारों के साथ-साथ यह संस्थाएँ भी अब पतित हो गई हैं।

आजकल की प्रचलित परम्पराएँ, जैसे रस्से के ऊपर नाचकर बड़े-बड़े पदों को प्राप्त करना या छड़ी के ऊपर कूदकर अथवा उसके नीचे से रेंगकर मान अथवा राजसी अनुग्रह प्राप्त करना आदि बातें दलगत पक्षपात और फूट का परिणाम हैं। वास्तव में यह सब पक्षपात अथवा दलगत अनुग्रह आजकल के राजा के बाबा के समय प्रारम्भ हुआ था। परन्तु अब तो यह पक्षपात बहुत बढ़ गया है।

अकृतज्ञता इनके यहाँ घोर अपराध माना जाता है। हम अन्य देशों में भी इसी प्रकार परम्परा पाते हैं। यहाँ की विचारधारा के अनुसार जो भी व्यक्ति अपने उपकारी को धोखा देता है वह मनुष्य-मात्र का शत्रु माना जाता है। और इस प्रकार का व्यक्ति जिन्दा रहने के योग्य नहीं समझा जाता। यहाँ माता-पिता तथा पुत्रों के एक दूसरे के प्रति कर्तव्यों की विचारधारा हम लोगों से बिल्कुल विपरीत है। इन लोगों के अनुसार, माता-पिता का संतान के प्रति मोह तथा ममता प्राकृतिक नियमों के कारण है। इस कारण ये लोग कभी नहीं मानते कि पुत्र अपने जीवन तथा उत्पत्ति के लिए माता-पिता का आभारी अथवा कृतज्ञ है। मनुष्य जीवन के कष्ट देखकर यह कहा जा सकता है कि जन्म से न तो कोई लाभ है और न माता-पिता ही किसी के हित के लिए संतान उत्पन्न करते हैं। इसी भाँति के अन्य तर्कों के आधार पर यहाँ के लोगों का विचार है कि बच्चों की शिक्षा का उत्तरदायित्व सबसे बाद में माता-पिता का है।*

---

*थैकरे के अनुसार हमारे महान् व्यंगकार का मत था कि दाम्पत्य प्रेम पर भरोसा नहीं किया जा सकता। इस सिद्धान्त का प्रतिपादन उसने स्वयं अपने उदाहरण तथा व्यवहार से किया इसी कारण वह अत्यन्त दुःखी तथा दीन रहा। अशिक्षितों की दशा का वर्णन, लेखक यहाँ उपहासपूर्ण शब्दों में कर रहा है। स्विफ्ट महोदय यहाँ संकेत कर रहे हैं कि उन लोगों को शिक्षा देने का अधिकार नहीं है जो अपने बच्चों को कुछ भी शिक्षा नहीं दे पा रहे हैं। ऐसे लोग सर्वथा अयोग्य हैं, और संतानें उन्हें सौंपी नहीं जा सकतीं।

इस कारण यहाँ प्रत्येक शहर में शिशु-पालन-गृहों की स्थापना की गई है। मजदूरों तथा खेती करनेवालों को छोड़कर अन्य सभी अभिभावकों के लिए यह आवश्यक है कि बीस पूर्णिमाओं की उम्र हो जाने पर वह अपने बच्चों को शिशु-पालन गृहों में शिक्षा एवं लालन-पालन के लिए भेजें।

इस उम्र में बच्चों में सीखने के तत्त्व अंकुरित होने लगते हैं। यह विद्यालय विभिन्न प्रकार के होते हैं तथा लड़के-लड़कियों के विशिष्ट गुणों के अनुसार स्थापित किये जाते हैं। इन विद्यालयों में योग्य शिक्षक होते हैं। वे शिक्षार्थियों को उनके अभिभावकों के सामाजिक स्तर तथा दशाओं के अनुकूल शिक्षा प्रदान करते हैं। इन विद्यालयों में शिक्षार्थियों की व्यक्तिगत भावनाओं तथा चपलता का विशेष ध्यान रक्खा जाता है। पहले मैं लड़कों तथा बाद में लड़कियों के विद्यालयों के बारे में कुछ बतलाऊँगा। ······तथा उच्च श्रेणी के लड़कों के लिए विचारशील एवं योग्य शिक्षक तथा उपशिक्षक नियुक्त किये जाते हैं। यहाँ बच्चों को सादे वस्त्र एवं शुद्ध भोजन प्रदान किया जाता है। इन लोगों का लालन-पालन, साहस, न्याय, आदर, देश-प्रेम, धर्म, नम्रता एवं सरलता के सिद्धान्तों के अनुसार होता है। सोने तथा भोजन के थोड़े से समय को छोड़कर शेष काल में बच्चे सदैव कुछ-न-कुछ काम करते रहते हैं। प्रतिदिन सबको दो घंटे मनोरंजन के लिए मिलते हैं जिसमें वे शारीरिक व्यायाम का

अभ्यास करते हैं। चार वर्ष की अवस्था तक बच्चों को नौकर वस्त्र पहनाते हैं और इसके बाद वे स्वयं कपड़े पहनने का अभ्यास करते हैं। इस बात का ध्यान नहीं रखा जाता है कि वे किस श्रेणी तथा सामाजिक स्तर के हैं। पचास वर्षीय महिलायें केवल निम्नतम कार्य ही करती हैं शेष कार्य बच्चे स्वयं ही करते हैं। यहाँ के शिक्षार्थियों को नौकरों से बात करने नहीं दिया जाता है। शिक्षक या उपशिक्षक के साथ ही यह लोग छोटे या बड़े झुंडों में मनो-रंजन के लिए जाते हैं। इस भाँति यहाँ के बच्चे उन दोषों और अवगुणों से मुक्त रहते हैं जिनसे हम लोगों के बच्चे अधिकांशतः ग्रस्त रहते हैं। अभिभावक केवल वर्ष में अपने बच्चों से दो बार ही मिल सकते हैं। केवल एक घंटे तक ही वे बच्चों के साथ रह सकते हैं। आते और जाते समय ही वे केवल बच्चे का चुम्बन ले सकते हैं । एक शिक्षक मिलाई के समय वहीं उपस्थित रहता है और वह इस बात में सतर्क रहता है कि कहीं कोई अभिभावक बच्चे के कान में धीरे से बात तो नहीं कर रहा है या अपना प्रेम तो प्रगट नहीं कर रहा है। उस शिक्षक का यह भी कर्तव्य है कि वह देखता रहे कि कोई अभिभावक बच्चे को खिलौना मिठाई या इसी प्रकार की कोई अन्य वस्तु तो नहीं दे रहा है।

प्रत्येक परिवार अपने बच्चों की शिक्षा एवं मनोरंजन के लिए शिशु-पालन-गृहों को निश्चित धन-राशि देता है

और यदि वह नहीं दे पाता है तो राजकोष से उसकी पूर्ति की जाती है।

साधारण सम्भ्रान्त परिवारों, व्यवसायियों, व्यापारियों तथा कारीगरों के बच्चों की शिक्षा-दीक्षा का प्रबंध भी इसी भाँति किया जाता है। जिन बच्चों को व्यवसायी बनना होता है उनको ग्यारह वर्ष की अवस्था में ही किसी योग्य व्यवसायी के पास शिक्षा के लिए रख दिया जाता है।

जो बच्चे प्रखर बुद्धि तथा उर्वर मस्तिष्क के होते हैं उनको पंद्रह वर्ष की अवस्था तक शिक्षा दी जाने का प्रबन्ध है। हम लोगों के इक्कीस वर्ष यहाँ के निवासियों के केवल पंद्रह वर्ष के बराबर होते हैं। किन्तु अंतिम तीन वर्षों में यह अवधि धीरे-धीरे कम भी हो जाती है।

लड़कियों के पालन-गृहों में गुणवती योग्य युवा लड़कियों की शिक्षा लड़कों की ही भाँति होती है। केवल इनको वस्त्र आदि पहनाने के लिए स्त्रियाँ नौकर होती हैं परन्तु यह सब कार्य किसी शिक्षिका या उसकी सहायिका के सामने ही किया जाता है। जब तक कि लड़कियाँ स्वयं अपने आप कपड़े आदि पहनने नहीं लगती हैं शिक्षिका उनका निरीक्षण करती रहती हैं। पाँच वर्ष की अवस्था तक लड़कियों की शिक्षा-दीक्षा इसी भाँति होती है। यदि यह पता चल जाय कि ये नर्सें लड़कियों का मनोरंजन भयानक या बेवकूफी की कहानियों और राजसी कुमारियों की बुराइयों से करती हैं

तो उन्हें सार्वजनिक स्थान पर तीन बार शहर में घुमाकर कोड़ों से मारा जाता है। एक वर्ष का कठोर दण्ड दिया जाता है और देश के सबसे वीरान प्रदेश में उन्हें रखा जाता है।

इस भाँति यहाँ की युवतियाँ पुरुषों की ही भाँति कायर तथा बेवकूफ नहीं होतीं। सफाई के अतिरिक्त व्यक्तिगत आभूषणों से भी यह घृणा करती हैं। लड़कियों तथा लड़कों की शिक्षा-दीक्षा में मुझे कोई अंतर दिखाई न पड़ा। केवल शारीरिक व्यायाम के क्षेत्र में वे लड़कों की भाँति अधिक पुष्टता का प्रदर्शन नहीं करती हैं। उन्हें गृह-प्रबंध तथा गृह-कार्यों की भी शिक्षा दी जाती है। इसके अतिरिक्त उन्हें उन विषयों की शिक्षा भी दी जाती है जो उनके लिए लाभदायक होते हैं। इन लोगों का सिद्धांत है कि गुणवान् मनुष्य के लिए, स्त्री सदैव विचारशील तथा अनुकूल प्रकृति की होनी चाहिए क्योंकि वह सदैव युवती नहीं रहती। लड़कियों के लिए यहाँ शादी की उम्र बारह वर्ष की मानी जाती है। जब वे बारह वर्ष की हो जाती हैं तो उनके अभिभावक वहाँ आते हैं। शिक्षिकाओं को वे लोग उनके कार्य के लिए धन्यवाद देते हैं तथा अपनी सहेलियों के बीच से रोती हुई लड़की अभिभावक के साथ घर चली जाती है।

लड़कियों के निम्न कोटि के पालन-गृहों में उन्हें उनकी दशाओं तथा शारीरिक शक्ति के अनुसार विभिन्न प्रकार की शिक्षा दी जाती है।

जिन लड़कियों को किसी शिक्षिका के साथ व्यावहारिक ज्ञान के लिए रखना होता है उन्हें सात वर्ष की अवस्था में ही यहाँ से हटा दिया जाता है। शेष लड़कियाँ ग्यारह वर्ष तक पालन-गृह में रखी जाती हैं।

निम्न श्रेणी के परिवारवाले अपनी मासिक आय के अनुसार थोड़ा सा वार्षिक चंदा अपने बच्चे के लिए पालन-गृह के अध्यक्ष के पास जमा करते हैं। इस प्रकार नियम के द्वारा यहाँ के अभिभावकों के खर्च पर प्रतिबंध लगा है। लिलीपुत निवासियों का विचार है कि मनुष्य को केवल अपनी वासना शांत करने के लिए ही संतान उत्पन्न करना सर्वथा अनुचित है और बच्चे की शिक्षा-दीक्षा का भार जनता पर छोड़ देना भी असंगत है। जहाँ तक उच्च श्रेणी के परिवार वालों का प्रश्न है वे प्रत्येक बच्चे की शिक्षा-दीक्षा का समुचित प्रबन्ध करने के लिए पर्याप्त धन पालन-गृह को देते हैं। जिससे उनके सामाजिक स्तर तथा दशाओं के अनुरूप ही उनके बच्चों का लालन-पालन होता है। यह धन अत्यंत सावधानी और उचित रीति से न्यायपूर्ण ढंग से व्यय किया जाता है।

श्रमिकों और किसानों के बच्चे अपने माता-पिता के साथ ही रहते हैं। इनका कार्य केवल भूमि जोत कर अन्न पैदा करना है। अतः इनके बच्चों की शिक्षा का प्रभाव जनता पर न पड़ने के बराबर ही है। परन्तु वृद्ध तथा

बीमार किसानों को चिकित्सालयों से सहायता प्राप्त होती है। भीख माँगने की प्रथा का प्रचलन यहाँ बिल्कुल नहीं है।

अब मैं पाठकों का ध्यान उन अनुभवों की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ जो मेरे नौ महीने तेरह दिन के प्रवास काल में मुझे यहाँ हुए। कारीगरी से प्रेम होने के कारण तथा आवश्यकताओं से विवश होकर मैंने अपनी सुविधा के लिए राजसी उद्यान के सबसे बड़े पेड़ काट कर एक मेज तथा कुर्सी बनाई। कमीज बनाने के लिए दो सौ दर्जी लगाये गये। इसके लिए मजबूत और मोटा कपड़ा ढूँढ़ा गया। बिस्तर तथा मेजपोश के लिए भी प्रबंध किया गया। कपड़े की तीन तहें की गईं क्योंकि मोटे से मोटा कपड़ा भी हम लोगों के लिनेन कपड़े से महीन था। इन लोगों के लिनेन का थान साधारणतया तीन इंच चौड़ा और तीन फुट लम्बा होता है। जब मैं जमीन पर लेट गया तो दर्जियों ने मेरी नाप ले ली। एक दर्जी मेरी गर्दन पर खड़ा हुआ और दूसरा एक डोरी लिये हुए बीच में। तीसरे ने वह डोरी एक इंच के रूल से नाप ली। इसके बाद उन्होंने मेरे अँगूठे की नाप ली और मुझे मुक्ति मिली। गणित के हिसाब से उन लोगों ने यह निश्चित किया कि अँगूठे की दुगुनी नाप कलाई की नाप के बराबर होती है। इसी भाँति उन लोगों ने मेरी गर्दन तथा कमर की नाप का भी अनुमान कर लिया।

मैंने नमूने के लिए अपनी पुरानी कमीज जमीन पर

फैला दी जिसे देखकर उन लोगों ने वैसी ही कमीज तैयार कर दी।

इसी भाँति तीन सौ दर्जी अन्य कपड़े बनाने के लिए लगाये गये परन्तु इनकी नाप लेने की रीति विचित्र थी। मैं घुटनों पर बैठ गया और उन लोगों ने एक सीढ़ी जमीन से मेरी गरदन तक खड़ी की। उनमें से एक उस सीढ़ी पर चढ़ गया और कालर से फर्श तक एक फीता लटका दिया। इस भाँति उसने मेरे कोट की नाप ले ली। परन्तु अपनी कमर और हाथ की नाप मैंने स्वयं ही बतला दी।

सब कपड़े मेरे ही घर पर बनाये गये क्योंकि उनमें का बड़े से बड़ा व्यक्ति भी उन्हें उठा नहीं सकता था। इंगलैण्ड की महिलायें जिस प्रकार टुकड़े जोड़कर कपड़े बनाती हैं वैसे ही मेरे ये कपड़े थे। अंतर केवल इतना ही था कि मेरे वस्त्र एक ही रंग के थे।

मेरे खाने की सामग्री का प्रबन्ध करने के लिए तीन सौ रसोइये रक्खे गये। मेरे मकान के पास ही सुविधा के लिए इन लोगों के रहने के लिए झोपड़ियाँ बनाई गई थीं। जिनमें ये अपने परिवारों के साथ रहते थे और मेरे लिए दो थाल भोजन तैयार करते थे। मैं बीस सेवकों को उठाकर मेज पर खड़े कर लेता था। सौ के करीब टोकरियों में मांस शराब लिये रहते थे। ऊपर खड़े सेवक रस्सियों से खाने का सामान आवश्यकतानुसार खींचते जाते थे। यह अजीब तरीका योरोप में बाल्टी से पानी निकालने के समान

था। उनके गोश्त की एक तश्तरी मेरे एक कौर के बराबर होती थी, और शराब का एक पीपा मेरे लिए साधारण एक घूंट। उनका भेंड़ का गोश्त हम लोगों की ही भाँति था। मेरे सेवकों को अत्यंत आश्चर्य होता था जब मैं अपने देश के बया के पैर की भाँति हड्डी आदि सभी चीजें एक साथ ही खा जाता था। उनके हंस तथा मुर्गों को भी मैं साधारणतया एक ही कौर में खाता था। उनके यहाँ की छोटी-छोटी २०, ३० चिड़ियों को तो मैं अपने चाकू की नोक से एक बार में ही खा जाता था।

एक बार जब राजा को मेरे रहन-सहन के बारे में पता चला तो उन्होंने इच्छा प्रगट की वह स्वयं अपनी रानी अपने बच्चों के साथ मेरे साथ भोजन करना चाहते हैं। यह सब लोग आये और मैंने उनको अपनी मेज पर, राजसी कुर्सियाँ डालकर ठीक अपने सामने बिठलाया। उनके अंगरक्षकों को भी मैंने वहीं बिठाल लिया। राज्य का मुख्य कोषाध्यक्ष, फिल्मनैप भी वहाँ अपने अधिकारियों के दल के साथ सम्मिलित था। मैंने देखा कि कभी-कभी वह मेरी ओर बड़ी रुखाई से देखने लगता था परन्तु मैंने इस ओर ध्यान नहीं दिया। अपने देश की प्रतिष्ठा तथा उन लोगों को आश्चर्यचकित करने के लिए मैंने उस दिन काफी भोजन किया।

मुझे विश्वास है कि इस घटना के फलस्वरूप फिल्मनैप को मेरे विरुद्ध राजा के कान भरने का अवसर प्राप्त

हो गया। यह मंत्री सदैव से मेरा कट्टर गुप्त शत्रु रहा। यद्यपि वह ऊपर से सदैव अपने चेहरे की रुखाई को छिपाकर मेरा परम हितैषी होने का दावा करता था।

उसने मेरे कारण राजकोष रिक्त हो जाने के बारे में राजा को बतलाया, और यह भी कहा कि उसे बाध्य होकर ऊँचे ब्याज पर रुपया लेना पड़ रहा है, और इसी कारण राज्य के अन्य बिलों का भुगतान नहीं हो पा रहा है। उसने बतलाया कि मेरे ऊपर राजा का करीब डेढ़ करोड़ स्प्रग खर्च हो चुका है। स्प्रग यहाँ का सबसे अधिक मूल्यवान सोने का सिक्का है जो छोटे ठीकरे के आकार का होता है। अंत में उसने राजा को परामर्श दिया कि मुझे निकालने का यह बहुत बढ़िया अवसर है क्योंकि राजकोष दिन पर दिन कम होता चला जा रहा है।

यहाँ पर मुझे एक सम्भ्रांत तथा महिला की इज्जत बचाने का प्रयत्न करने के लिए बाध्य होना पड़ा। इस निर्दोष महिला को मेरे ही कारण अत्यंत कष्ट उठाना पड़ा। कुछ लोगों के भड़काने से कोषाध्यक्ष को संदेह हो गया कि उसकी स्त्री मुझे अत्यंत प्यार करती है। कुछ समय तक इस प्रेम सम्बन्ध के बारे में बड़े जोरों से अफवाह फैली। यहाँ तक कि एक दिन वह स्वयं मेरे घर पर आई। इसके बारे में, मैं निश्चयपूर्वक कह सकता हूँ कि यह सब बातें बिल्कुल झूठी और आधारहीन थीं। यह महिला सदैव मुझसे स्वतन्त्रता और निष्कपट मित्रता का व्यवहार करती

चली आ रही थी। मैं स्वीकार करता हूँ कि अक्सर वह मेरे घर आई है परन्तु सदैव खुले तौर सब लोगों के सामने ही। इसके अतिरिक्त वह सदैव अपनी युवा पुत्री और बहन या किसी मित्र के साथ ही मेरे घर पर आई। बहुत सी अन्य दरबार की महिलाओं के बारे में भी यही बात है। मैं अपने सेवकों से अपील करता हूँ कि क्या कभी उन लोगों ने मेरे घर पर ऐसी गाड़ी आते देखी है कि जिनमें बैठनेवालों के बारे में मालूम न हो ?

ऐसे अवसरों पर जब कोई सेवक मुझे किसी के आने की खबर देता था तो अपनी आदत के अनुसार मैं फौरन ही दरवाजे पर आकर उसका स्वागत करता। गाड़ी तथा उसके दो घोड़ों को हाथ में लेकर मैं अत्यंत सावधानी से एक मेज पर रख देता। कभी-कभी छः घोड़ेवाली गाड़ी भी आ जाती जिसमें सवार दो घोड़ों पर ही जीन या साज लगाते हैं। ऐसी गाड़ियों को उठाने में मुझे विशेष सावधानी रखनी पड़ती। दुर्घटनाएँ रोकने के लिए मैंने मेज के चारों ओर पाँच इंच ऊँची चहारदीवारी लगा दी थी। कभी-कभी तो ऐसा अवसर भी आ जाता था कि एक साथ ही चार-चार गाड़ियाँ मय घोड़ों के मेरी मेज पर होतीं और मैं अपना मुँह उनकी ओर झुकाये हुए उन लोगों से बात-चीत करता। और जब मैं एक दल से बात करता तो गाड़ीवान दूसरों के मेज के चारों ओर धीरे-धीरे घुमाता था। मैंने कई संध्याएँ इसी भाँति के मनोरंजक वार्तालापों

में व्यतीत कीं। परन्तु मैं कोषाध्यक्ष तथा उसके दो संवाद-दाताओं (जिनके नाम अब मैं प्रकट कर देना चाहता हूँ) क्लस्ट्रिल तथा ड्रुनलों को चुनौती देता हूँ कि वे इस बात को सिद्ध करें कि मेरे पास कभी कोई व्यक्ति भेष बदल कर आया। केवल एक बार, सचिव रेल्ड्रेसोल (जैसा मैं बता चुका हूँ) मेरे पास राजा की आज्ञा के अनुसार आया था। मैं इस बारे में अधिक जोर न देता यदि एक सम्भ्रांत महिला की इज्जत का प्रश्न मेरे सामने न होता। केवल अपने बारे में, मैं इतना स्पष्टीकरण न करता।

उस समय मुझे नारडाक की पदवी प्राप्त हो चुकी थी, जो कोषाध्यक्ष के पास भी नहीं थी। सारा संसार जानता है कि वह केवल ग्लमग्लम है। यह पदवी इंगलैण्ड के सामंतों की मारक्विस पदवी से नीची है। इन झूठी बातों के कारण, कोषाध्यक्ष ने कुछ समय तक अपनी स्त्री से रुक्षता का व्यवहार किया और मुझसे तो वह और भी रुखाई से पेश आता था। बाद में मुझे यह सब बातें एक घटना के कारण मालूम हो गईं जिसे मैं बताना उचित नहीं समझता। वास्तव में उसे धोखा नहीं दिया गया था, और इसी कारण अंत में स्त्री से उसका समझौता हो गया। परन्तु मेरे प्रति उसका व्यवहार उसी प्रकार का बना रहा और स्वयं राजा की भी श्रद्धा मेरे प्रति तेजी से घटने लगी क्योंकि कोषाध्यक्ष उसका मुँहलगा और अत्यन्त विश्वासपात्र मंत्री था।

(७)

यह राज्य छोड़ने के बारे में कुछ लिखने के पहले मैं यह बतलाना उचित समझता हूँ कि दो महीनों से मेरे विरुद्ध गुप्त षड्यंत्र रचा जा रहा था।

मैं लिलीपुत में जीवन भर न्यायालयों से अनभिज्ञ रहा। अपनी हीन दशा के कारण मैं यहाँ अयोग्य घोषित किया जा चुका था। मैंने यहाँ के महान राजकुमारों और मंत्रियों के स्वभाव के बारे में काफी पढ़ और सुन रक्खा था, परन्तु मैं यह कभी न जानता था कि इनका प्रभाव इतना घातक हो सकता है। मेरा विचार है कि इस दूर देश में योरुप से सर्वथा विपरीत सिद्धांतों द्वारा शासन किया जाता है।

एक बार जब कि मैं ब्लूफुस्कू के सम्राट् के पास उपस्थिति के लिए आवेदन-पत्र देने जा ही रहा था कि दरबार का एक सम्मानित सदस्य गुप्त रूप से रात में मेरे पास आया। इस व्यक्ति को मैंने एक बार राजा के क्रोध से बचाया था। यह सदस्य बिना नाम की चिट दिये मेरे मकान में प्रवेश पाना चाहता था। सभापति लोग जा चुके थे। मैंने उसे मय कुरसी के अपने कोट की जेब में रख लिया तथा एक विश्वासपात्र सेवक से कह दिया कि कार्य समाप्त कर मैं अब सोने जा रहा हूँ। मैंने घर के दरवाजे बंद कर लिये और आदत के अनुसार मेज पर कुर्सी डालकर बैठ गया। साधारण अभिवादन के बाद मैंने

देखा कि सरदार कुछ चिंतित दिखाई पड़ रहे हैं। मेरे पूछने पर उसने इच्छा प्रगट की कि मैं संयम तथा धैर्य से उसकी बात को सुनूं। यह बातचीत मेरे जीवन तथा सम्मान से ही सम्बन्धित थी। उसके वक्तव्य का सारांश मैं नीचे दे रहा हूँ जिसे मैंने उसके जाने के बाद ही फौरन लिख लिया था :—

"तुम्हें मालूम होना चाहिए" उसने कहा "कि तुम्हारे ही कारण परिषद् की कई बैठकें अत्यन्त गुप्त रूप से बुलाई जा चुकी हैं दो दिन पहले ही सम्राट् एक निर्णय पर आ चुके हैं।

तुम्हें मालूम है कि नाविक सेना का अध्यक्ष स्काइरेश ब्रालगोलम तुम्हारे आने के समय से तुम्हारा कट्टर शत्रु रहा है। वास्तविक कारण तो मैं जानता नहीं परन्तु तुम्हारे प्रति उसकी घृणा तुम्हारी ब्लूफुस्कू वाली सफलता से बहुत बढ़ गई है, क्योंकि इससे उसकी नाविक शक्ति की ख्याति दब गई है। नौ सेना का यह अध्यक्ष, कोषाध्यक्ष फिल्मनैप (जिसकी शत्रुता का कारण उसकी स्त्री ही है) सेनापति लिमटाक, राजमहल का प्रधान कर्मचारी लाल्कान तथा प्रधान जज बाल्मफ आदि ने तुम्हारे विरुद्ध अभियोग-पत्र तैयार किया है जिसमें तुम्हें देश-द्रोह तथा अन्य घातक अपराधों का दोषी ठहराया गया है।"

इस अभियोग तथा अपनी निर्दोषिता का विचार कर मैं अत्यन्त उत्तेजित हो गया पर उसने मुझसे शांत रहने

की प्रार्थना की और बोला—"आपने मेरे साथ बड़ी नेकियाँ की हैं। कृतज्ञ होकर मैंने सारी कार्रवाई की सूचना एकत्र कर ली है तथा अभियोग-पत्र की एक नकल भी अपने प्राणों की बाजी लगाकर प्राप्त कर ली है।"

नर पर्वत कुइनबस फ्लेस्ट्रिन के विरुद्ध अभियोग की धारायें*

धारा १—जब कुइनबस फ्लोस्ट्रिन, ब्लूफुस्कू के राजसी जहाजी बेड़े को यहाँ के बंदरगाह पर ले आया था तो सम्राट् ने उसे ब्लूफुस्कू साम्राज्य के सब जहाज पकड़ लाने की आज्ञा दी थी, और कहा था कि सारे ब्लूफुस्कू को एक उपनिवेश बना डालो। वहाँ का शासन यहाँ के राज्यपाल द्वारा किया जायगा। सम्राट् ने अपनी आज्ञा में कहा था कि बड़े सिरे से अंडे को तोड़नेवाले सभी शरणागतों को मार कर नष्ट कर डालो। इसके अतिरिक्त वहाँ के जो निवासी, फौरन पाखण्डियों का धर्म तोड़ने को तैयार न हों उन्हें भी मृत्यु के घाट उतार दिया जाय। परन्तु नर पर्वत

*यह अभियोग, स्पष्ट रूप से बोलिंग्ब्रोक तथा हार्ले के विरुद्ध चलाये गये मुकदमे की ओर इंगित कर रहा है। फिल्मनैप, गुलीवर पर दोषारोपण करते हुए कहता है कि ब्लूफुस्कू साम्राज्य को नष्ट-भ्रष्ट करने के इस स्वर्ण अवसर को खोकर तुमने बहुत बड़ा अपराध किया है। वालपोल ने हारे हुए टोरी दल के प्रधान पर यह अभियोग लगाया कि उसने फ्रांस से संधि कर ली जब कि युद्ध जारी रखने से फ्रांस की तबाही और बरबादी अवश्यम्भावी थी।

फ्लेस्ट्रिन ने एक अक्षम्य राजद्रोही की भाँति अत्यंत शांत, गंभीर तथा पवित्र सम्राट् से बहाना किया कि उसकी आत्मा निरीह तथा निर्दोष लोगों के प्राण तथा स्वतंत्रता के अपहरण के लिए तत्पर नहीं है।

धारा २—ब्लूफुस्कू देश के कुछ राजदूत सम्राट् से संधि की प्रार्थना करने के लिए दरबार में आये हुए थे। इस नर-पर्वत फ्लेस्ट्रिन ने एक राजद्रोही की भाँति उन लोगों की सहायता और सुविधायें प्रदान कीं तथा सम्राट् के विरुद्ध भड़काकर उन्हें हटा दिया। यद्यपि यह जानता था कि ये राजदूत उस राजा के नौकर हैं जो सम्राट् का कट्टर शत्रु है तथा उसकी फौजों ने स्पष्ट युद्ध की भी घोषणा कर दी है।

धारा ३—ऊपर वर्णित कुइनबस फ्लेस्ट्रिन एक स्वामिभक्त प्रजा के कर्तव्यों के विपरीत ब्लूफुस्कू के सम्राट् के पास यात्रा करने की योजना बना रहा है, जब कि सम्राट् ने इसे केवल मौखिक आज्ञा ही प्रदान की है। और अब उसी अनुमति के बहाने, एक देशद्रोही की भाँति, ब्लूफुस्कू के सम्राट् को सहायता सुविधा देने और भड़काने तथा उकसाने के लिए यह यात्रा की तैयारी कर रहा है जिसने स्पष्ट रूप से सम्राट् के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर रखी है।

कुछ अन्य धाराएँ भी हैं परन्तु यह बातें जो मैंने तुम्हें पढ़कर सुनाई हैं अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तथा प्रमुख हैं।

इतना तो मानना ही पड़ेगा कि इस अभियोग की कई बैठकों में सम्राट् ने अपनी अदम्य उदारता तथा महत्ता का परिचय दिया। तुम्हारे द्वारा की हुई सेवाओं को बतला कर कई बार महाराज ने तुम्हारे अपराधों को कम करने की चेष्टा की। कोषाध्यक्ष तथा नौसेना के प्रधान ने इस बात पर जोर दिया कि तुमको अत्यंत दुःखदाई तथा कलंक-पूर्ण रीति से मौत के घाट उतारा जाय। इस योजना के अनुसार रात को तुम्हारे घर में आग लगा दी जायगी और बाहर एक सेनापति बीस हजार सैनिकों के साथ खड़ा रहेगा जो तुम्हारे हाथों और चेहरे पर विषैले बाणों की वर्षा करे। तुम्हारे कुछ नौकरों को गुप्त आदेश दिया गया था कि तुम्हारी चादर तथा कमीज में इस प्रकार का विषैला रस-छिड़क दिया जाय जिससे तुम स्वयं ही अपना मांस नोच डालो और अत्यंत दुःखपूर्ण ढंग से कुत्ते की मौत मरो। सेनापति का भी यही विचार था और कई दिन तक बहुमत तुम्हारे विपरीत रहा परन्तु सम्राट् ने इरादा कर लिया कि यदि संभव हो तो तुम्हारी प्राण-रक्षा की जाय।

इस घटना से, सम्राट् ने, व्यक्तिगत मामलों के मुख्य सचिव तथा तुम्हारे शुभ चिन्तक रेल्ड्रेसाल से अपना मत प्रगट करने के लिए कहा। आज्ञानुसार उसने अपना मत प्रगट करके तुम्हारी अच्छाइयों पर बहुत जोर दिया। उसने स्वीकार किया कि तुम्हारे अपराध तो महान् हैं परन्तु फिर भी सम्राट् की दया के योग्य हैं। सम्राट् की दया-भावना

प्रशंसा के योग्य है और इसी कारण वह सारे देश में पूज्य हैं। उसने कहा कि "आपके और नरपर्वत के बीच मित्रता संसार में प्रसिद्ध है। फिर भी आपकी आज्ञानुसार" उसने कहा "मैं अपने स्वतंत्र विचार आपके सम्मुख प्रस्तुत कर रहा हूँ।

नरपर्वत की सेवाओं को ध्यान में रखते हुए अपने उदार स्वभाव के वशीभूत होकर यदि आप उसकी दोनों आँखें निकालने की आज्ञा प्रदान कर दें तो किसी हद तक न्याय हो जायगा। समस्त संसार सम्राट् की उत्कट उदारता का परिचय पा जायेगा और अपने सभासदों और मंत्रियों द्वारा लगाये गये अभियोग का पुष्टीकरण हो जायगा। ये सब लोग आपके न्याय से संतुष्ट होकर आपके कृतज्ञ हो जायेंगे। आँखें चली जाने से नरपर्वत की शारीरिक शक्ति में कोई कमी नहीं आ पायेगी और सम्राट् के लिए वह तब भी अत्यंत लाभ-दायक सिद्ध होगा। आँखें नष्ट हो जाने से वह और भी अधिक साहसी हो जायगा और हम लोगों का भय भी न देख पायेगा। आँखें नष्ट हो जाने से शत्रु के जहाजी बेड़े को यहाँ लाने में उसे बहुत कठिनाई पड़ेगी परन्तु इसलिए मंत्रियों की आँखों से देखना ही पर्याप्त होगा। राजा लोग इससे अधिक नहीं कर सकते।"

सम्पूर्ण बैठक ने इस प्रस्ताव का घोर विरोध किया। सेनानायक बाल्गोलम तो अपने को संयत ही न कर सका और गुस्से से भरकर, खड़ा होकर कहने लगा कि "मुझे

अत्यंत आश्चर्य है कि माननीय सचिव ने किस प्रकार एक राजद्रोही को जिंदा छोड़ देने के पक्ष में अपने विचार प्रगट किये।"

तुमने जो भी सेवायें की हैं वास्तव में राज्य के दृष्टि-कोण से सब तुम्हारे अपराधों को बढ़ाने में ही सहायक सिद्ध हुई हैं। जिस शक्ति के द्वारा तुम शत्रुओं के जहाजी बेड़े को यहाँ खींच लाये हो, असंतुष्ट होने पर उसी शक्ति का प्रयोग तुम उसे वापस ले जाने में कर सकते हो। इन सब कारणों से उसका विचार है कि तुम हृदय से बड़े सिरे से अंडे तोड़नेवालों के पक्षपाती हो गये हो। कार्यरूप में परिणत होने के पूर्व ही राजद्रोह की भावना पहले तो हृदय में ही उत्पन्न होती है। इसी कारण उसने तुम पर राजद्रोह तथा देशघातक होने का अपराध लगाया और इस बात पर जोर दिया कि तुम्हें प्राणदण्ड दिया जाय।

कोषाध्यक्ष का भी यही विचार था। उसने बतलाया कि तुम्हारे भरण-पोषण के भार से सम्राट् की आर्थिक स्थिति शोचनीय हो चली है और शीघ्र ही तुम्हारा भरण-पोषण असंभव हो जायगा। सचिव का जो प्रस्ताव तुम्हारी आँखें निकाल लेने का है उससे समस्या का समाधान तो नहीं होगा वरन् वह और भी विकट हो जायगी। एक प्रकार के पक्षियों के उदाहरण से स्पष्ट है कि उनकी आँखें निकाल लेने पर वे अधिक खाती हैं और शीघ्र ही मोटी हो जाती हैं। पुण्यात्मा सम्राट् तथा परिषद् (जो कि तुम्हारे निर्णयकर्ता

हैं) को विश्वास हो गया है कि तुम अपराधी हो। यही कारण तुमको मृत्युदण्ड देने के लिए पर्याप्त है क्योंकि देश के नियमों के अनुसार अब किसी और दूसरे प्रमाण की आवश्यकता नहीं रहो।

"परन्तु सम्राट् तुम्हें मृत्यु दण्ड देने के पक्ष में बिल्कुल नहीं थे। प्रसन्न होकर उन्होंने कहा कि परिषद् के मत से, तुम्हारी आँखें निकाल लेना साधारण दण्ड ही होगा। तुम्हारे मित्र सचिव ने पुनः कोषाध्यक्ष की भरण-पोषण वाली बात पर अपने विचार प्रगट करते हुए कहा कि राजकोष की समस्या का समाधान नौकर-चाकर कम कर देने से हो सकती है। पर्याप्त भोजन न मिलने के कारण तुम निर्बल और शिथिल हो जाओगे, भूख कम हो जायेगी और कुछ ही महीनों में तुम स्वयं नष्ट हो जाओगे। उस समय तो तुम्हारी लाश में हानिकारक दुर्गन्ध भी कम हो जायगी। क्योंकि आधे से अधिक तो तुम्हारा शरीर पहले ही सूख जायगा। तुम्हारे मरने पर सम्राट् की पाँच या छः हजार जनता केवल दो या तीन दिनों में हड्डियों से तुम्हारा मांस काटकर गाड़ियों में लादकर दूर-दूर भागों में दफन कर देगी। इस भाँति संक्रामक रोगों का भय दूर हो जायगा और तुम्हारा अस्थि-पंजर भविष्य की संतानों के लिए स्मारक-चिह्न रह जायेगा।

"इस भाँति सचिव की अन्यतम मित्रता के कारण यह समझौता हो गया। यह निश्चय किया गया कि तुम्हें धीरे-

धीरे भूखों मारने की योजना अत्यन्त गोपनीय रक्खी जाय। परन्तु तुम्हारी आँखें निकाल लेने के दण्ड को पुस्तकों में लिख लिया गया है। नाविक सेना के प्रधान बोल्गोलम के अतिरिक्त किसी ने भी इसका प्रतिवाद न किया। सम्राज्ञी के प्रोत्साहन से वह सदैव इस बात पर जोर देता रहा कि तुम्हें मृत्यु-दण्ड ही दिया जाय।

"तीन दिन के अन्दर ही तुम्हारे मित्र सचिव को तुम्हारे घर आने का आदेश प्राप्त हुआ है।

वह तुम्हारे सामने अभियोग पत्र की धारायें पढ़ेगा। तदुपरांत सम्राट् तथा परिषद् की उदारता और हृदय की विशालता की प्रशंसा करते हुए केवल आँखें ही निकाल लेने के दण्ड की घोषणा करेगा। सम्राट् को विश्वास है कि तुम इस दण्ड को नम्रता और आभारपूर्वक स्वीकार करोगे। सम्राट् के बीस चिकित्सक इस बात का निरीक्षण करेंगे कि तुम्हारी आँखें ठीक तरह से नष्ट की गई हैं। ये चिकित्सक जमीन में लिटाकर, तुम्हारी आँखों के दीदों पर तेज नोकदार तीरों से प्रहार करेंगे।

"तुम क्या करोगे यह बात मैं तुम्हारी ही बुद्धि पर छोड़ता हूँ। शंका तथा भ्रम को दूर करने के लिए यहाँ आवश्यक है कि जैसे मैं आया था उसी भाँति गुप्त रूप से वापस लौट जाऊँ। सम्माननीय सदस्य ने ऐसा ही किया

और मैं अकेला रह गया। उस समय मेरे मस्तिष्क में विभिन्न शंकायें और कठिनाइयाँ उठ रही थीं।

सम्राट् तथा मंत्रि-परिषद् ने एक नई रीति प्रचलित की थी। न्यायालय के किसी कठोर निर्णय की घोषणा के उपरांत सम्राट् ने समूची परिषद् के सामने एक भाषण देकर अपनी विश्व-विदित उदारता तथा कोमलता का विज्ञापन करना प्रारम्भ किया। न्यायालय का यह निर्णय चाहे सम्राट् के कोप को शान्त करने के लिए हो या चाहे उसके मुँह लगे की ईर्ष्या का परिणाम हो। यह मैं ठीक-ठीक नहीं जानता। मुझे विश्वास दिलाया गया है कि इस साम्राज्य में इस प्रकार की रीति कभी भी प्रचलित न थी। राजा का यह भाषण तत्काल ही समस्त राजधानी में प्रसारित करा दिया गया।

सम्राट् की प्रशंसा से यहाँ के लोग अत्यन्त भयभीत हैं क्योंकि यह देखा गया है कि जिसकी जितनी अधिक प्रशंसा की जाती है उतना ही कठोर तथा अमानवीय दण्ड उसे दिया जाता है। निर्दोष व्यक्ति को तो अत्यंत यातनायें भुगतनी पड़ती हैं। जहाँ तक मेरा प्रश्न है मैं स्वीकार करता हूँ कि मैं न तो जन्म से दरबारी हूँ और न शिक्षा से। इसी-लिए इन बातों के परखने की क्षमता मुझमें नहीं है। इस दण्ड में मैं सम्राट् की उदारता तथा कोमलता के चिह्न भी न पा सका और शायद गलती से मुझे इसमें उदारता से अधिक कठोरता दिखलाई पड़ती है। कभी-कभी मैं मुकदमा

लड़ने का विचार करता था।* यद्यपि मैं स्वयं अभियोग पत्र की कुछ धाराओं से इनकार नहीं कर सकता था परन्तु मुझे विश्वास था कि यह बातें मेरे अपराध कम करने में सहायक सिद्ध होंगी। परन्तु अपने जीवन-काल में कई राजसी मुक-दमों का अनुभव करके मैंने देखा है कि न्यायाधीश किस प्रकार उचित बात से दबा करते हैं। मुझे साहस नहीं हुआ कि इतने शक्तिशाली शत्रुओं के भयानक निर्णय पर विश्वास करूँ। उस समय अत्यंत विकट परिस्थिति में मैं फँसा था।

एक बार तो मैं प्रतिवाद करने के लिए तत्पर ही हो गया था क्योंकि जब तक मैं स्वतंत्र हूँ सम्पूर्ण साम्राज्य की शक्ति भी मुझे परास्त नहीं कर सकती।

राजधानी को तो मैं आसानी से पत्थरों द्वारा ध्वस्त कर सकता हूँ। जब मुझे याद आया कि सम्राट् के सम्मुख मैंने सौगंध खाई है तो शीघ्र ही डरकर मैंने यह योजना छोड़ दी। सम्राट् द्वारा किये गये उपकारों तथा उसके द्वारा प्रदान नारडेक की उच्चतम पदवी की याद मुझे अवश्य

---

*गुलीवर कभी-कभी मुकदमा लड़ने की सोचता परन्तु तत्काल ही इस बात से भयभीत हो जाता कि उसके शत्रु इतने शक्तिशाली हैं कि उसकी निर्दोषिता के बावजूद भी न्यायालय से उसे कठोर दंड प्राप्त होगा। बोलिंगब्रोक ने लिखा था कि यदि इसे निष्पक्ष और उचित न्याय की आशा हो तो उसे परिणाम घोषित होने तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। परन्तु उसे मालूम हो गया था कि उसके शक्तिशाली शत्रु उसे फाँसी पर लटकवा देंगे अतः वह भाग गया था।

आयी पर साथ ही मैंने सोचा कि सम्राट् की वर्तमान् निर्दयता ने मुझे अपने सारे कर्तव्यों से मुक्त कर दिया है।

अन्त में मैंने अपना मार्ग निश्चित कर लिया। मैंने सवेरे ही एक पत्र साम्राज्य को छोड़ने के बारे में अपने मित्र सचिव को लिख दिया और यह भी बतला दिया कि मैं पुरानी आज्ञा के अनुसार ही देश त्याग कर रहा हूँ। पत्र के उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना ही द्वीप के उस किनारे पर चला गया जहाँ जहाजी बेड़ा खड़ा हुआ था। मैंने एक बड़ा जहाज पकड़ा, और एक तार जहाज के अगले सिरे से बाँधा। मैंने कपड़े उतार डाले, तथा साथ में लाई हुई चादर के साथ उन्हें जहाज में रख लिया। लंगर उठाकर मैंने जहाज अपने पीछे घसीटना शुरू कर दिया। पानी में चलता तथा तैरता हुआ शीघ्र ही मैं ब्लुफुस्कू के शाही बंदरगाह पर पहुँच गया। यहाँ के लोग बहुत दिनों से मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे। उन लोगों ने मेरे साथ दो आदमी राजधानी का रास्ता बतलाने के लिए कर दिये। राजधानी का नाम भी ब्लूफुस्कू ही है। मैं उन दोनों को फाटक से दो सौ गज की दूरी तक अपने हाथ पर ले गया। बाद को उन्हें उतारकर उनसे कहा कि सचिव लोगों को मेरे आने की सूचना दे दें और यह भी प्रगट कर दें कि मैं सम्राट् से मिलने की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। करीब एक घंटे के बाद उत्तर आया कि सम्राट् राज-परिवार तथा दरबार के बड़े-बड़े अधिकारियों के साथ मेरा स्वागत करने के लिए बाहर आ रहा है।

मैं करीब सौ गज तक आगे बढ़ गया। सम्राट् तथा उसके साथी घोड़ों पर से तथा सम्राज्ञी और अन्य महिलायें गाड़ियों से उतरे। मैंने देखा कि उनके चेहरों पर न तो किसी प्रकार की चिंता थी और न भय। सम्राट् तथा सम्राज्ञी के हाथ चूमने के लिए मैं भूमि पर लेट गया। मैंने सम्राट् को बतलाया कि वादे के अनुसार मैं आ गया हूँ। मैंने यहाँ आने के लिए लिलीपुत के सम्राट् से अनुमति ले ली थी और इस भाँति मुझे आप ऐसे महान् सम्राट् के दर्शनों का स्वर्ण अवसर प्राप्त हुआ। मुझे यह भी आज्ञा दे दी गई है कि मैं शक्ति भर आपकी सेवा करूँ परन्तु वहाँ के सम्राट् के हितों के विरुद्ध में कोई भी कार्य न करूँ। मैंने अपने अपमान के बारे में कुछ भी नहीं बतलाया क्योंकि अभी तक मुझे कोई निश्चित संदेश तो मिला न था। मैं समझता था कि इन बातों से वह बिल्कुल अनभिज्ञ है। मैं न जानता था सम्राट् मेरे भेद के बारे में पता लगा लेगा। परन्तु शीघ्र मुझे पता चला कि मुझे धोखा दिया गया है।

मैं पाठकों को उदार तथा महान् सम्राट् के दरबार के स्वागत के बारे में बतला कर परेशान नहीं करना चाहता। और न यह ही बतलाना चाहता हूँ कि मुझे घर तथा बिस्तर न मिलने से कितना कष्ट हुआ। मुझे बाध्य होकर भूमि पर चादर ओढ़कर लेटना पड़ा।

---

(८)

यहाँ आने के तीन दिन बाद एक दिन जब मैं इस द्वीप के उत्तर-पूर्वीय किनारे पर घूम रहा था तो मैंने आधे लीग की दूरी पर समुद्र में एक उल्टी नाव सी पड़ी देखी। मैंने अपने मोजे तथा जूते उतार डाले और दो या तीन सौ गज तक पानी में घुस गया। ज्वार भाटे तथा लहरों के प्रभाव से वह चीज और भी नजदीक आ गई थी। अब मैंने स्पष्ट देखा कि वह एक वास्तविक नाव है। मेरे विचार से तो तूफान के कारण यह नाव किसी जहाज से छूट गई थी। तत्काल ही मैं शहर लौट आया। महाराज से कहा कि वह बीस बड़े जहाज, जो जहाजी बेड़े के नष्ट होने से बच गये हैं मेरे साथ कर दें। नाविक उपाध्यक्ष के साथ तीन हजार नाविकों को भी भेज दें। जब यह बेड़ा घूमकर जाने लगा तो मैं सीधे रास्ते से उस ओर चला जहाँ मैंने पहले वह नाव खोज निकाली थी। मैंने देखा कि लहरों ने उसे और पास ला दिया था। नाविक जहाजी रस्सों से सज्जित थे। मैंने पहले ही बहुत से रस्से जहाजों में रखवा दिये थे। जब जहाज आ गये तो मैं नंगा होकर पानी में चलता हुआ नाव से सौ गज की दूरी पर आया। इसके बाद बाध्य होकर मैं तैरकर नाव के पास आया। नाविकों ने मेरे पास रस्से के सिरे फेंक दिये। एक सिरा तो मैंने नाव के अगले सिरे में बाँधा तथा दूसरे को एक जहाज के सिरे से बाँध दिया। परन्तु मुझे अपनी शक्ति व्यर्थ सी जान पड़ी

क्योंकि गहराई के कारण मैं उसका प्रयोग नहीं कर पाता था। अतः मुझे पीछे की ओर तैरकर जाना पड़ा। वहाँ से मैंने शक्ति भर, नाव को आगे ठेलने के लिए एक हाथ से धक्का लगाया। ज्वार भाटा मेरे पक्ष में था और मेरी सहायता कर रहा था। धीरे-धीरे मैं उस स्थान तक आ गया जहाँ मेरे पैर जमीन में लगने लगे और पानी मेरी दाढ़ी तक ही रह गया। दो मिनट सुस्ताकर मैंने नाव के एक और धक्का मारा। इसी भाँति धीरे-धीरे में नाव को पानी में ढकेल लाया। अब सबसे अधिक श्रम वाला कार्य समाप्त हो चुका था। मैंने एक अन्य जहाज में रक्खे हुए··· रस्से निकाल कर पहले तो नाव में बाँधे तथा दूसरे सिरों को अपने साथ के नौ जहाजों से बाँध दिया। हवा अनुकूल होने के कारण नाविकों ने नाव को घसीटा तथा मैं भी धक्के लगा-लगाकर उसे किनारे से चालीस गज की दूरी तक ढकेल लाया। ज्वार भाटा के समाप्त होने के बाद हम उसे सूखे में लाये। दो हजार मनुष्यों, रस्सों तथा मशीनों की सहायता से नाव सीधी की गयी। नाव कुछ टूटी हुई थी। डाँड बनाने के दस दिन के परिश्रम का वर्णन करके मैं पाठकों को उबाना नहीं चाहता। अंत में मैं वह नाव लेकर ब्लूफुस्कू के राजसी बंदरगाह पर पहुँचा जहाँ असंख्य मनुष्यों का समूह उसे देखने के लिए उपस्थित था। इतनी बड़ी नाव देखकर वे सब लोग आश्चर्यचकित हो गये। मैंने सम्राट् को बतलाया कि मेरे सौभाग्य से ही यह नाव यहाँ आ गई है। इससे मैं उस स्थान पर जा सकता हूँ

जहाँ से मैं अपने स्वदेश को वापस लौट सकूँ। सम्राट् से प्रार्थना की कि मुझे इस नाव की मरम्मत करने के लिए सामान देने की आज्ञा प्रदान की जाय तथा साथ ही मुझे यह देश छोड़ने की अनुमति भी प्रदान करने की कृपा की जाय। अंत में कुछ बातों का निषेध करके सम्राट् ने मेरी प्रार्थना स्वीकार कर ली।

मुझे अत्यंत आश्चर्य हो रहा था कि इस समय तक लिलीपुत के सम्राट् के पास से, मेरे बारे में कोई भी खबर ब्लूफुस्कू के दरबार में क्यों नहीं आ रही है। परन्तु फिर सोचा कि सम्राट् को यह अच्छी तरह मालूम है कि मुझे उसकी योजना के बारे में कुछ भी नहीं मालूम है। उसे विश्वास है कि मैं अपने वादे के अनुसार ही यहाँ आया हूँ। दरबार को यह भली भाँति विदित है कि मैं अनुमति-पत्र के अनुसार ही यहाँ आया हूँ। जब समारोह समाप्त हो जायगा तो कुछ दिनों में मैं वहाँ वापस चला जाऊँगा। परन्तु जब मैं लम्बे अरसे तक वहाँ न पहुँचा तो सम्राट् को चिन्ता हुई।

कोषाध्यक्ष तथा मंत्रि-परिषद् के अन्य मंत्रियों से परामर्श करने के बाद एक योग्य व्यक्ति को, अभियोग पत्र की एक नकल के साथ मेरे पास भेजा गया। इस दूत को आदेश था कि ब्लूफुस्कू के सम्राट् के सम्मुख अपने स्वामी की उदारता तथा निष्पक्षता का वर्णन करते हुए कहे कि मुझे केवल आँखें निकलवाने का ही दण्ड देकर सम्राट् संतुष्ट

हो गये हैं। न्याय की अवहेलना करके मैं वहाँ से भाग आया हूँ और यदि दो घंटे के अंदर मैं वहाँ न लौट जाऊँगा तो नारडेक की पदवी से वंचित करके मुझे राजद्रोही घोषित कर दिया जायगा। दूत ने आगे कहा, "सम्राट् को आशा है कि दोनों देशों में शान्ति तथा पारस्परिक प्रेम बनाये रखने के लिए ब्लूफुस्कू के सम्राट् मुझे लिलीपुत वापस जाने की आज्ञा देंगे तथा मेरे हाथ-पैर बाँधकर, एक राजद्रोही को दण्ड दिलवाने के लिए वहाँ भेज देंगे।

तीन दिन के परामर्श के बाद ब्लूफुस्कू के सम्राट् ने असमर्थता प्रकट करते हुए सौजन्यपूर्वक उत्तर दिया। जहाँ तक मुझे बाँधने का प्रश्न है सम्राट् जानते हैं कि यह कार्य नितांत असंभव है। यद्यपि मैंने यहाँ के सम्राट् से जहाजी बेड़ा छीन लिया है फिर भी वह अनेक सेवाओं तथा समझौता करा देने के कारण मेरा आभार मानता है। किसी भाँति दोनों सम्राटों को शीघ्र ही मुझसे मुक्ति मिल जायगी क्योंकि मुझे एक बड़ा जहाज किनारे पर मिल गया है जो मुझे समुद्र में ले जाने के योग्य है। यहाँ के सम्राट् ने मेरी इच्छानुसार उसकी मरम्मत करानी भी प्रारम्भ करा दी है। सम्राट् को आशा है कि कुछ सप्ताह में ही दोनों साम्राज्यों को इस असहनीय भार से मुक्ति मिल जायगी।" इस उत्तर के साथ, दूत लिलीपुत को वापस लौट गया। ब्लूफुस्कू के सम्राट् ने यह सब हाल मुझे बतलाया। उसी समय अत्यंत गोपनीयता के साथ यह भी अनुरोध किया कि मैं उसकी छत्रछाया में रहूँ। यद्यपि मैं उस पर विश्वास करता था

परन्तु अब मैंने निश्चय कर लिया था कि राजाओं तथा मंत्रियों की बातों में न आऊँगा और जहाँ तक होगा टालने का ही प्रयत्न करूँगा। अतः सम्राट् की उदारता और सहृदयता का आभार प्रगट करते हुए मैंने नम्रता से क्षमा माँगी। मैंने उससे बतलाया कि सौभाग्य या दुर्भाग्य ने मेरे पास एक जहाज भेज दिया है जिससे मैंने समुद्र जाने का इरादा कर लिया है और दो महान् राजाओं के बीच रोड़ा बनना पसन्द नहीं करता हूँ। सम्राट् मेरी बात से तनिक भी असंतुष्ट न हुआ। संयोगवश मुझे यह भी पता चला कि मेरे प्रस्ताव से उसे तथा उसके अधिकांश मंत्रियों को अत्यंत आनन्द ही प्राप्त हुआ है।*

इन सब बातों के कारण मैं शीघ्र ही इरादे के पूर्व यह देश छोड़ देना चाहता था। उत्सुक दरबारियों ने शीघ्र ही मेरे चले जाने का प्रबंध करवा दिया। मेरे बताने के अनुसार पाँच सौ कारीगर मजबूत 'लिनेन' कपड़े के तेरह पर्तों से जहाज के पाल बनाने के काम में लगाये गये। मैं वहाँ के मजबूत रस्सों तथा तारों को लेकर, दस दस, बीस बीस तथा तीस तीस तक को एक में लपेट कर मजबूत रस्सों को बनाने के कठिन काम में जुट गया। समुद्र के किनारे खोजने से मुझे एक बड़ा पत्थर मिल गया जिसे मैंने

*ब्लूफुस्कू के सम्राट् तथा उसके मंत्री गुलीवर से मुक्ति पाने से अत्यंत प्रसन्न हुए। बोलिंग ब्रोक के फ्रांस भाग जाने के बाद लुई चौदहवें की मृत्यु हो गई। रीजन्ट ओरलियन्स ने अंग्रेजों की संधि कायम रक्खी और जकोबाइट लोगों की योजना पर कोई ध्यान न दिया।

लंगर के लिए उपयुक्त पाया। नाव को तेल देने के लिए मुझे तीन सौ पशुओं की चर्बी मिल गई थी।

मस्तूल तथा डाँड की लकड़ी के लिए मुझे बड़े-बड़े पेड़ों को काटने में अत्यंत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। इस कार्य में मुझे सम्राट् के जहाज बनानेवाले कारीगरों से बहुत मदद मिली। पहले मैं उन्हें छील देता था और बाद में ये कारीगर उसे चिकना कराने में मेरी मदद करते थे। एक महीने के करीब जब तैयारी हो चुकी तो मैंने सम्राट् की आज्ञा प्राप्त करने के लिए खबर भिजवाई। सम्राट् तथा राजसी परिवार राजमहल के बाहर आया। हाथ चूमने के लिए मैंने अपना सर झुकाया तो उसने आदर के साथ अपना हाथ मेरे सामने कर दिया। इसी भाँति सम्राज्ञी तथा अन्य राज-परिवार के लोगों ने अपना-अपना हाथ मेरे चूमने के लिए बढ़ा दिया। सम्राट् ने मुझे दो सौ स्प्रग्स की बीस थैलियाँ भेंट कीं। पूर्ण आकृति का अपना एक चित्र भी महाराज ने मुझे दिया जिसे मैंने नष्ट होने से बचाने के लिए तत्काल ही एक दस्ताने में रख लिया। विदा के समय के उत्सवों का इस समय वर्णन करके मैं पाठकों को कष्ट नहीं देना चाहता।

मैंने नाव में कई सौ भेड़ों का गोश्त रख लिया। इसी हिसाब से रोटी तथा शराब भी एकत्रित कर ली। छः जीवित गाय, दो बैल, कुछ नर और मादा भेड़ भी मैंने अपने साथ ले लीं। मैं इन्हें स्वदेश ले जाकर इनकी नस्ल

का प्रचार करना चाहता था। इनको खिलाने पिलाने के लिए मैंने घास के कई बोझ और अन्न के बोरे भी रख लिए थे। मैं अत्यंत प्रसन्नता के साथ यहाँ के एक दर्जन निवासियों को भी ले गया होता परन्तु सम्राट् किसी भाँति भी अनुमति देने के लिए तैयार नहीं हुआ। मेरी जेबों की तलाशी लेने के बाद सम्राट् ने अनुरोध किया कि मैं यहाँ के किसी भी निवासी को अपने साथ न ले जाऊँ चाहे वह निवासी मेरे साथ जाने को तैयार ही क्यों न हों।

इस भाँति अपनी योग्यता तथा शक्ति के अनुसार पूर्ण तैयारी करके मैंने २५ सितम्बर १७०१ को छः बजे प्रातः-काल यात्रा प्रारम्भ कर दी। उत्तर की ओर चार लीग जाने पर मुझे उत्तर-पश्चिम की ओर एक छोटा-सा द्वीप आधे लीग की दूरी पर दिखाई पड़ा। इस समय सायंकाल के छः बजे थे और दक्षिणी-पूर्वी हवा चल रही थी। मैं आगे बढ़ा और द्वीप के उस भाग में लंगर डाल दिया जो आँधियों से सुरक्षित था। परन्तु निकट आने पर पता चला कि प्रायद्वीप निर्जन है। थोड़ा नास्ता करने के बाद मैं आराम करने चला गया। अनुमान से मुझे छः घंटे की नींद आ गई थी क्योंकि मेरे जगने के दो घंटे पश्चात् दिन निकल आया था। रात बहुत साफ थी। सूरज चढ़ने के पूर्व ही मैंने सबेरे का भोजन कर लिया। वायु अनुकूल होने के कारण मैंने लंगर उठा दिया और पिछले दिन वाले मार्ग से यात्रा पुनः प्रारम्भ की। जेब के कुतुबनुमा ने मुझे इस

मार्ग पर चलने में सहायता दी । मेरा इरादा था कि यदि संभव हो सके तो मैं उन द्वीपों में पहुँचूँ जो वैन डीमेन्स लैंड्स के उत्तर-पूर्व स्थित थे। दिन भर मुझे कुछ भी न दिखाई पड़ा। परन्तु दूसरे दिन जब मैं अपनी गणना के अनुसार ब्लूफुस्कू से चौबीस लीग की यात्रा कर चुका था, दक्षिण-पूर्व की ओर जाता हुआ एक जहाज दिखाई पड़ा। मैं पूर्व की ओर जा रहा था। मैंने संकेत से उसे पुकारा परन्तु कोई उत्तर न प्राप्त हो सका। वायु धीमी होने के कारण मुझे प्रतीत हुआ कि मैं उसे पा जाऊँगा। मैंने सम्पूर्ण शक्ति से नाव आगे बढ़ायी। आध घंटे में ही उसने मुझे देख लिया। संकेत रूप में उसने एक बन्दूक भी जहाज से दागी। प्यारी मातृभूमि के पुनः दर्शन करने का अवसर पाकर जो आनन्द मुझे उस समय हुआ उसका वर्णन शब्दों में नहीं कर सकता। मातृभूमि के अपने कर्तव्य पूरे करने की आशा साकार हो उठी। जहाज ने अपनी चाल धीमी कर दी थी। २६ सितम्बर को सायंकाल छः बजे मैं जहाज के पास पहुँच गया। परन्तु जहाज के अंग्रेजी झंडे देखकर मेरा हृदय काँपने लगा। अपनी गायों तथा भेड़ों को कोट की जेब में रखकर मैं अपने थोड़े से सामान के साथ जहाज पर आ गया। यह जहाज एक अंग्रेज व्यापारी का था जो उत्तरी-दक्षिणी सागर होकर जापान की यात्रा से वापस लौट रहा था। जहाज के कप्तान, डेप्टफोर्ड निवासी श्री जोन बिडिल अत्यंत सज्जन तथा योग्य नाविक थे। उस समय हम लोग तीस डिगरी अक्षांश दक्षिण में थे। करीब पचास व्यक्ति इस

जहाज में थे। यहाँ पुराने मित्र श्री पीटर विलियम्स से मेरी भेंट हो गई। मित्र ने, कप्तान से, मेरा परिचय कराया तथा मेरी बड़ी प्रशंसा कर दी। कप्तान ने अत्यन्त दयालुता के साथ मेरी कुशल क्षेम पूछी, और यह जानने की अभिलाषा प्रगट की मैं कहाँ से आ रहा हूँ और कहाँ जाऊँगा।

मैंने थोड़े शब्दों में अपना हाल बतला दिया। परन्तु उसने सोचा कि मैं बक रहा हूँ। समुद्र के कष्टों तथा दुःखों के कारण मेरा मस्तिष्क फिर गया है। इस पर मैंने अपनी जेब से जानवर निकाल कर उसके सामने रख दिये। वह आश्चर्यचकित हो गया और उसे अब मेरी सचाई का विश्वास हो गया। इसके बाद मैंने ब्लूफुस्कू के राजा का चित्र तथा उसके द्वारा दिये सोने के सिक्के कप्तान को दिखाये। इसके अतिरिक्त मैंने उस देश के अन्य चमत्कार भी उसे दिखलाये। मैंने उसे दो-दो सौ स्प्रग की दो थैलियाँ भेंट करके कहा कि इंगलैण्ड पहुँचने पर मैं उसे एक गाय तथा एक भेड़ उपहार में दूँगा।

मैं इस यात्रा का विशेष वर्णन करके पाठकों को परेशान नहीं करना चाहता। इसका अधिकांश भाग अत्यंत आनन्द के साथ व्यतीत हुआ। १३ अप्रैल १७०२ को हम लोग डाउन्स पहुँच गये थे। मुझे केवल एक बात का दुःख है कि जहाज के चूहों ने मेरी एक भेड़ की सफाई कर दी। एक बिल के पास मुझे उसकी हड्डियों का बिना मांस का ढाँचा मिला। बाकी जानवर किनारे आ जाने पर मुझे

सुरक्षित मिल गये। ग्रीनविच के एक चरागाह में मैंने उन्हें चरने के लिए छोड़ दिया। यहाँ की सुन्दर घास वे अत्यंत आनन्द के साथ खाते थे। यद्यपि मुझे इसकी आशा न थी। इसके अतिरिक्त यदि जहाज का कप्तान, अपने बिस्कुट को पीस करके तथा पानी में मिलाकर उन्हें नित्य खिलाने की अनुमति न देता तो इतनी लम्बी यात्रा में जानवरों का जीना असंभव हो जाता। थोड़े से समय में जब तक मैं इंगलैण्ड में रहा इन जानवरों को बड़े-बड़े मनुष्यों को दिखा दिखाकर मैंने काफी पैसा पैदा कर लिया। दूसरी यात्रा प्रारम्भ करने के पूर्व दो सौ पौंड में मैंने इन्हें बेंच दिया। यहाँ आने पर मुझे ज्ञात हुआ कि भेड़ों में काफी वृद्धि हो गई है। मुझे आशा है कि अपने अच्छेपन के कारण ये भेड़ें व्यापार में काफी लाभदायक सिद्ध होंगी।

मैं अपनी स्त्री तथा परिवार के साथ दो मास तक रहा। विदेश घूमने की मेरी प्रबल इच्छा मुझे फिर सताने लगी। पन्द्रह सौ पौंड अपनी स्त्री को देकर मैंने रेंट्रिफ में उसे एक अच्छा मकान भी दिलवा दिया। बचे हुए रुपये तथा सामान को लेकर मैं अपने भाग्य की पुनः परीक्षा लेने के लिए तत्पर हो गया। मेरे सबसे बड़े चचा श्री जान, तीस पौंड वार्षिक की एक सम्पत्ति, इपिंग के निकट मेरे लिए छोड़ गये थे, फेटर लेन का ब्लेक बुल नामक भवन मेरे पास बंधक के रूप में रखा था जिससे मुझे तीस पौंड से भी अधिक धन की प्राप्ति हो जाती थी। अतः अब यह

भी भय नहीं था कि अपने परिवार को मुझे दूसरों की दया पर छोड़ना पड़ेगा। मेरा पुत्र जोनी, जिसका नामकरण उसके चचा के अनुसार किया गया था ग्रामर स्कूल का विद्यार्थी था। मेरी पुत्री बेट्टी जो अब विवाहित तथा पुत्र-वती है उस समय कसीदाकारी की शिक्षा पा रही थी। मैंने दुःखी भाव से रोती हुई स्त्री, पुत्री तथा पुत्र से बिदा ली। तदुपरांत तीन सौ टन के 'एडवेंचर' नामक व्यापारी जहाज में, मैं सवार हुआ जो सूरत की यात्रा कर रहा था। लिवरपूल के कमांडर जोन निकोलस इस जहाज के कप्तान थे। परन्तु इस यात्रा का वर्णन मैं अपनी यात्रा के दूसरे भाग में करूँगा।

बोब्डिंग्नैग की समुद्री यात्रा

(१)

प्रकृति तथा भाग्य ने मुझे अशांतिपूर्ण जीवन के लिए ही उत्पन्न किया था। मेरे पैरों में अवश्य ही शनि देवता का निवास था। वापस आने के दो ही महीने बाद मैंने फिर अपना देश छोड़ दिया। कार्नबाल निवासी कप्तान जोन निकोलस का जहाज ऐंडवेंचर सूरत की ओर प्रस्थान कर रहा था। उसी पर २० जून १७०२ को मैंने अपनी दूसरी यात्रा प्रारंभ की। उत्तमाशा अन्तरीप पहुँचने तक वायु अनुकूल रही। शुद्ध पानी लेने के लिए हम लोग यहाँ रुके परन्तु पेंदे में छेद हो जाने के कारण जहाज से सामान उतारना पड़ा। कप्तान को जाड़ा-बुखार आ जाने के कारण हम लोग मार्च के अंत तक खाड़ी न छोड़ सके। इसके बाद फिर यात्रा प्रारम्भ की गई। मेडागास्कर जल-डमरूमध्य तक की यात्रा आनन्दपूर्वक कटी। इस द्वीप के उत्तर की ओर, पाँच डिगरी अक्षांश दक्षिण में, साधारणतया दिसम्बर के प्रारम्भ से लेकर, मई के प्रारम्भ तक उत्तर-पश्चिमी वायु समान रूप से चलती है। परन्तु १९ अप्रैल को पश्चिमी वायु अत्यन्त, तीव्र हो गई। बीस दिनों तक यही हाल रहा। इस बीच वायु ने हमें मोलुक्का द्वीपों के पूर्व की ओर ढकेल दिया। २। मई को हमारे कप्तान ने निरीक्षण

करके बतलाया कि हम तीन डिगरी उत्तर समानान्तर रेखा पर हैं। उस समय वायु शांत हो चुकी थी। उस प्रकार की समुद्री यात्रा के अभ्यस्त होने के कारण कप्तान ने चेतावनी दी कि हम सब लोग तूफान से लड़ने के लिए तैयार रहें। दूसरे दिन ही दक्षिणी मानसून प्रारम्भ हो गया।

जब हम लोगों को यह मालूम हुआ कि तूफान सब कुछ उलट-पुलट देगा तो हम आगे का मस्तूल पकड़ कर खड़े हो गये। परन्तु खराब मौसम होने के कारण हमें निचले हिस्से में जाना पड़ा। हम लोगों ने जहाज को रोकने की अपेक्षा समुद्र में धीरे-धीरे चलाना ही उचित समझा। आगे का पाल लपेट लिया गया। जहाज को अपने भाग्य पर छोड़ दिया गया। पतवार के लिए मौसम अच्छा न था। जहाज ने वीरता से यात्रा प्रारम्भ की। तूफान अत्यन्त प्रचण्ड था। लहरें बहुत ऊँची उठ रही थीं। जब तूफान समाप्त हो गया तो हम लोगों ने मुख्य तथा सामने के पाल खोल दिये। जहाज ठीक तौर से चलने लगा। हमारा मार्ग उत्तर-पूर्व की ओर का था। दक्षिणी-पश्चिमी वायु चल रही थी। थोड़ी ही देर बाद अत्यन्त प्रचण्ड दक्षिणी-पूर्वीय वायु चलने लगी। गणना के अनुसार इस तूफान ने हमें पाँच सौ लीग पूर्व की ओर ढकेल दिया। अतः पुराने से पुराना नाविक भी यह नहीं बतला सकता था कि संसार के किस भाग में हम लोग अब चल रहे थे।

हम लोगों के पास यथेष्ट खाद्य सामग्री थी। जहाज

कहीं से भी टूटा-फूटा न था तथा हम सब का स्वास्थ्य भी काफी अच्छा था। कमी केवल पोने के पानी की थी। हम लोगों ने उसी मार्ग से चलते रहना ही अच्छा समझा, क्योंकि उत्तर की ओर चलने से हम ग्रेट टारटेरी...... के उत्तरी-पश्चिमी भाग में पहुँच सकते थे जहाँ बर्फीला समुद्र है।

१६ जून १७०३ ई० को चोटी के मस्तूलवाले एक लड़के ने भूमि देखी। १७ तारीख को हम लोगों को एक द्वीप या महाद्वीप दिखाई पड़ा। फिर भी हम लोग नहीं जानते थे कि हम लोग कहाँ हैं। इसके दक्षिणी ओर भूमि की एक पतली पट्टी समुद्र में चली गई थी। सौ टन के जहाज ठहरने लायक एक बंदरगाह भी वहाँ था। इस बंदर-गाह से एक लीग की दूरी पर हम लोगों ने लंगर डाल दिया। कप्तान ने अपने एक दर्जन खलासी अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित करके एक बड़ी नाव में, पीने योग्य पानी लाने के लिए भेज दिया। ये लोग अपने साथ पानी के लिए बर्तन भी ले गये थे। मैंने इन लोगों के साथ जाने की अनुमति कप्तान से माँगी, जिससे इस देश को देखकर यहाँ के बारे में नई-नई बातें खोज सकूँ। जब हम लोग भूमि पर उतरे तो कोई भी नदी, या किसी के रहने के चिह्न तक न मिले। अतः हमारे साथी, पानी की खोज में समुद्र के किनारे जाने लगे। मैं करीब एक मील तक दूसरी ओर टहलता चला गया। यहाँ मैंने देखा कि सारा प्रदेश चट्टानी तथा ऊसर है। मैं थक गया था। कौतूहलवाली कोई भी

वस्तु न मिलने के कारण मैं पुनः उस बंदरगाह की ओर लौट चला। विस्तृत समुद्र मेरे सामने फैला था।

मैंने देखा कि साथ के लोग नाव में बैठ चुके हैं और जीवन-रक्षा के लिए जहाज की ओर बड़े जोरों से खे रहे हैं। उसी समय मैंने देखा कि समुद्र में एक विशालकाय जन्तु तेजी से उन लोगों का पीछा कर रहा है। मैं बड़े जोर से चिल्लाया परन्तु उसका कुछ भी प्रभाव न हुआ। घुटनों से अधिक पानी में बड़े-बड़े डगों से वह जहाज की ओर दौड़ रहा था। परन्तु हमारे आदमियों ने उसे आधे लीग से ही देख लिया था। समुद्र में नोकदार चट्टानों के कारण वह विशालकाय जन्तु नाव को न पा सका। यह सब बातें मुझे बाद में बतलाई गई थीं, क्योंकि उस घटना का परिणाम देखने का साहस मुझमें बिल्कुल नहीं था। जिस ओर से मैं आ रहा था उसी ओर अपनी शक्ति भर तेजी से भागा। एक ऊँची पहाड़ी पर चढ़कर मैं इधर-उधर देखने लगा। सारे प्रदेश मुझे खेत ही खेत दिखाई पड़े। परन्तु सबसे पहले तो वहाँ, मुझे घास की लम्बाई देखकर अत्यन्त आश्चर्य हुआ। उन खेतों की घास, जो चारे के लिए उगाई गई थी करीब बीस फुट ऊँची दिखाई पड़ी।

मैं एक बड़ी सड़क पर चलने लगा। यह बड़ी सड़क असल में, यहाँ के निवासियों की एक पगडंडी मात्र थी, जो जौ के खेतों से होकर गई थी। यहाँ मैं कुछ समय तक टहलता रहा परन्तु दोनों ओर कुछ भी देख न सका। बात

यह थी कि अनाज काटने का समय होने के कारण चालीस फुट ऊँची फसल दोनों ओर तैयार खड़ी थी। इस खेत के अंत तक पहुँचने में मुझे करीब एक घंटे तक चलना पड़ा। खेत चारों ओर करीब एक सौ बीस फुट ऊँची झाड़ियों द्वारा घिरा हुआ था। पेड़ों की उँचाई इतनी अधिक थी कि मैं अनुमान तक न लगा पाया। इस खेत से दूसरे खेत को जाने के लिए एक सीढ़ी बनी थी जिसमें चार पत्थर लगे थे। इन पत्थरों के ऊपर आने पर एक और लम्बा पत्थर मिला। इन सीढ़ियों के पत्थरों पर चढ़ना मेरे लिए असंभव था क्योंकि प्रत्येक पत्थर छः फुट से कम ऊँचा न था। ऊपर का पत्थर तो करीब बीस फुट का था। मुझे झाड़ी में कुछ रास्ता दिखाई पड़ा। वहाँ से मैंने देखा कि दूसरे खेत से एक दैत्य सीढ़ियों की ओर आ रहा है। इस दैत्य का आकार उस विशालकाय जन्तु की भाँति ही था जिसे मैंने अपनी नाव का पीछा करते देखा था। यह मुझे गिरजा-घर की मीनार जैसा ऊँचा मालूम पड़ा। जहाँ तक मेरा अनुमान है उसका एक कदम करीब दस गज का था।

उस समय मुझे अत्यन्त भय तथा आश्चर्य हुआ। मैंने जब उसे सीढ़ी पर देखा तो छिपने के लिए खेत में भागा। उस समय वह दाहिनी ओर से आगे के खेत की ओर देख रहा था। जहाजी सीढ़ी से कई गुनी तेज, आवाज से उसने किसी को पुकारा। उसकी आवाज इतनी तेज थी कि पहले मैंने समझा कि बादल गरज रहे हैं। पुकार सुनकर उसी

जैसे सात दानवी मनुष्य उसकी ओर आ रहे थे। वे अपने हाथों में हँसिये लिये थे। उनका एक हँसिया हम लोगों के छः हँसियों के बराबर था। इन मनुष्यों के वस्त्र पहले मनुष्यों की तरह सुन्दर न थे। ऐसा मालूम होता था कि यह सब उसके नौकर या मजदूर थे। उसके कुछ कहने पर यह लोग उसी खेत की फसल काटने लगे जिसमें मैं छिपा हुआ था। शक्ति भर मैंने अपने को उन लोगों से दूर रक्खा। परन्तु नाज के पौधे, एक-एक फुट की दूरी पर होने के कारण मुझे अपने को छिपाने में बड़ी कठिनाई महसूस हो रही थी। किसी तरह मैंने आगे बढ़ने का रास्ता निकाला और उस स्थान तक आया जहाँ वर्षा तथा वायु के कारण पौधे गिर पड़े थे। इस स्थान से एक भी कदम आगे बढ़ना मेरे लिए असंभव था क्योंकि यहाँ पौधे आपस में बहुत उलझ गये थे। पौधों की बालियाँ इतनी मजबूत और नुकीली थीं कि कपड़ों से घुसकर वह मेरे शरीर में चुभ रही थीं। इसी समय मुझे यह भी मालूम हुआ कि फसल काटनेवाले मजदूर करीब सौ गज की दूरी पर मेरे पीछे ही आ गये हैं। भागने के कारण मैं बहुत थक गया था। दुःख और निराशा ने मुझे चारों ओर से घेर लिया था। मैं दो खाइयों के बीच लेटा हुआ परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना कर रहा था कि वह मुझे इस संसार से मुक्ति दे दे। अपनी निराश विधवा तथा पितृहीन बच्चों का ध्यान आने पर मेरा कलेजा फटने लगा। एक बार इतना कष्ट उठाकर दूसरी समुद्री यात्रा करने पर मैंने अपने आपको

बहुत धिक्कारा। इस मानसिक व्याकुलता के समय मुझे लिलीपुत का भी ध्यान आया जहाँ के निवासी मुझे वैसा ही नरपर्वत मानते थे, जैसा मैं इस देशवालों को मान रहा था। वहाँ मैंने शाही जहाजी बेड़े को हाथ से खींचकर तथा इसी प्रकार के अन्य कौतुक दिखाकर लोगों को आश्चर्यचकित कर दिया था। उस साम्राज्य के इतिहास में मेरी यह सब बातें अंकित की जायेंगी। वहाँ भविष्य की संतानें इन बातों पर कठिनता से विश्वास करेंगी यद्यपि वहाँ के करोड़ों निवासी इस बात की पुष्टि करेंगे। मैंने सोचा कि यहाँ के निवासियों को देखकर जो मैं अपने बारे में सोचता हूँ उसी भाँति लिलीपुत का निवासी मेरे बारे में सोचता होगा। ऐसा विश्वास किया जाता है कि मनुष्य अपने आकार के अनुरूप ही कठोर और बर्बर होता है। खेत काटनेवालों में से जो भी मुझे पहले पकड़ेगा उसी के मुँह का ग्रास मैं बन जाऊँगा। विचारकों का यह मत बिना किसी शंका के सही है कि किसी भी वस्तु की महानता एवं क्षुद्रता तुलना के द्वारा ही बतलाई जा सकती है। यह भी हो सकता है कि लिलीपुत निवासियों को ऐसा कोई देश मिल जाय जहाँ उन्हें इसी अनुपात में उनसे भी छोटे प्राणी मिलें। और कौन जाने यहाँ से भी अधिक उँचाईवाले लोग संसार के सुदूर···प्रदेशों में मिल जायँ जिनका पता हमें अभी तक न चला हो ?

उस समय अत्यन्त भयभीत तथा आश्चर्यचकित होने के कारण मैं अधिक देर तक इन बातों के बारे में और

अधिक न सोच सका। जब एक खेत काटनेवाला मुझसे दस गज की दूरी पर ही रह गया तो मुझे भय हुआ कि या तो मैं इसके पैर के नीचे दबकर मर जाऊँगा या इसकी हँसिया मेरे शरीर के दो टुकड़े कर देगी। अतः जब वह दुबारा घूमने को ही था कि मैं डरकर बड़े जोरों से चीखा। इस पर विशालकाय मानव ने एक छोटा कदम उठाया और अपने नीचे चारों ओर देखने लगा। अंत में थोड़ी देर के बाद उसे मैं दिखाई पड़ गया। शायद उसे जान पड़ा कि मैं कोई कीड़ा हूँ। कौन जाने? काट खाऊँ। इसलिए कुछ देर तो वह दुबिधा में पड़ा रहा। अवश्य ही उसे बड़ा कुतूहल था।

अंत में उसने मुझे पीछे से अपनी बीच की अँगुली तथा अँगूठे से दबाकर उठाने का साहस किया। अच्छी तरह से देखने के लिए मुझे वह अपनी आँखों से तीन गज की दूरी पर ले गया। मैंने इसका मतलब जान लिया था। सौभाग्य से, मेरा मानसिक संतुलन बना रहा और मैंने निश्चय कर लिया कि मैं बिलकुल शान्त रहूँगा। कई बार उसने मुझे अँगुलियों के बीच से खिसककर गिर जाने से बचाने के लिए ऐसा किया था। उस समय में जमीन से साठ फिट की उँचाई पर उसके हाथ में दबा हुआ था। उस समय मैंने अपनी आँखें सूर्य की ओर उठाईं, तथा दोनों हाथों से प्रार्थना करने की सी मुद्रा बनाकर कातर स्वर से नम्रता प्रगट की। उस समय मेरे लिए यही करना उचित भी था,

क्योंकि मुझे यही डर था कि कहीं वह मुझे जमीन पर न पटक दे। जैसा कि साधारणतया हम लोग उस छोटे खतरनाक जन्तु के साथ करते हैं। जिसे मार डालने का इरादा कर लिया जाता है।

परन्तु भाग्य अच्छे होने के कारण वह मेरी बिनती और संकेतों से प्रसन्न हो गया और मुझे कुतूहल से देखने लगा। मेरा शुद्ध उच्चारण सुनकर उसे अत्यन्त आश्चर्य हुआ यद्यपि वह मेरी भाषा बिलकुल ही न समझ पाया था। इसी बीच मैं अपने को कराहने तथा आँसू बहाने से न रोक सका। अपने सिर को इधर-उधर हिलाकर, मैं उसे यह बता देना चाहता था कि उसके अँगूठे तथा अँगुलियों के दबाव से मैं पिसा जा रहा हूँ। मुझे ऐसा मालूम हुआ कि उसने मेरी बात समझ ली थी--क्योंकि उसने मुझे धीरे से अपने कोट के दामन में रख लिया। तुरन्त ही मुझे लिये हुए वह अपने मालिक के पास दौड़ा। यह मालिक वास्तव में वही किसान था जिसे मैंने पहले खेत में देखा था।

उन दोनों की बातचीत सुनकर मैंने अनुमान लगाया कि नौकर से मेरे बारे में सारी बातें सुनकर उसने छड़ी के बराबर का एक तिनका उठाया और उसके द्वारा मेरे कोट के एक हिस्से को उठाया। शायद उसे संदेह था कि प्रकृति ने मेरे शरीर पर एक झिल्ली सी लगाई हो। मेरा चेहरा अच्छी तरह से देखने के लिए उसने मेरे बाल एक ओर हटा दिये। दासों को बुलाकर उसने पूछा कि क्या उन

लोगों ने कभी मेरे जैसा कोई जन्तु खेत में और भी कभी देखा है। यह सब बातें मुझे बाद में मालूम हुई थीं। इसके बाद उसने मुझे चारों दासों के बीच में धीरे से जमीन पर रख दिया। मैं तुरन्त ही खड़ा हो गया और आगे-पीछे चलकर उन लोगों को यह बतला दिया कि मेरा भागने का इरादा बिलकुल नहीं है। मेरी गति-विधि अच्छी तरह से देखने के लिए वे सब मेरे चारों ओर घेरा बनाकर बैठ गये।

अपनी हैट उतारकर तथा अत्यन्त नम्रता से झुककर, मैंने किसान का अभिवादन किया। घुटनों पर टिककर तथा अपनी आँखें और हाथ उठाकर मैंने अपनी ताकत भर तेज आवाज में कुछ शब्द उनसे कहे। अपनी जेब से सोने की मुहरों की एक थैली निकालकर नम्रता से उसे भेंट की। उसने अपनी हथेली पर थैली ले ली। इसके बाद उसे वह अपनी आँखों के पास इसलिए ले गया कि देखे इसमें क्या चीज रक्खी है। आस्तीन से आलपीन निकाल-कर उसने कई बार थैली को इधर-उधर घुमाया परन्तु कुछ भी नतीजा न निकला। इस पर मैंने इशारा किया कि वह अपना हाथ जमीन पर रक्खे। मैंने उस थैली को लेकर खोला और सारा सोना उसकी हथेली पर उड़ेल दिया। उस थैली में स्पेन के छः बड़े-बड़े सोने के सिक्के, बीस-तीस छोटे सिक्कों के साथ रक्खे थे। मैंने देखा कि अपनी जबान से छोटी उँगली गीली करके बड़े सिक्के को उसने उठा

लिया। इसी तरह उसने अन्य सिक्के भी उठाये, परन्तु उसे यह बिलकुल नहीं मालूम हुआ कि ये क्या हैं। उसने संकेत किया कि मैं उन सिक्कों को थैली में भरकर अपनी जेब में रख लूँ।

अब इस समय तक किसान को यह विश्वास हो गया था कि मैं अवश्य ही कोई बुद्धिमान् विवेकी जन्तु हूँ। कई बार उसने मुझसे बात की परन्तु उसका स्वर मेरे कानों को पनचक्की की आवाज के समान लगता था, यद्यपि वह बहुत मन्द स्वर में बात करता था। मैंने कई भाषाओं में उसे उत्तर देने की कोशिश की। सुनने के लिए मुझसे दो गज की दूरी पर वह अपने कान ले आया। परन्तु यह सब बेकार सिद्ध हुआ, क्योंकि हम एक दूसरे की भाषा से बिलकुल अनभिज्ञ थे। इसके बाद उसने नौकरों को काम पर भेज दिया। जेब से रूमाल निकालकर तथा उसे मोड़कर उसने अपने बायें हाथ पर रख दी और मुझे इशारा किया कि मैं उस पर चढ़ जाऊँ। मैंने सोचा कि आज्ञा-पालन करना ही मेरे लिए उचित है। गिर जाने के डर से मैं रूमाल पर पूरी तरह लेट गया। अच्छी तरह लपेटकर मुझे वह अपने घर के अन्दर ले गया। वहाँ उसने अपनी स्त्री को बुलाया और मुझे दिखलाया। परन्तु वह चीखकर उसी के पीछे भाग गई जैसा कि इँगलैंड की स्त्रियाँ किसी मकड़े या मेंढक को देखकर भागती हैं। परन्तु धीरे-धीरे जब उसने मेरा व्यवहार देखा और यह भी देखा मैं उसके पति के संकेतों

मान गया और लड़का दुबारा अपने स्थान पर बैठ गया। इसके बाद मैंने पास जाकर उसका हाथ चूम लिया। मालिक ने धीरे से मुझे थपथपाया।

खाने के बीच में, मेरी मालकिन की प्यारी बिल्ली उसकी गोद में कूद रही थी। मैंने अपने पीछे अकस्मात् गंभीर गर्जन सुना। पीछे मुड़कर देखा तो मालूम हुआ कि यह उसी बिल्ली के घुरघुराने की आवाज है। यह बिल्ली मुझे, एक बैल से तीन-गुनी से भी अधिक बड़ी मालूम हुई। यह गणना मैंने उसके पंजों और सर को देखकर की थी जब उसकी मालकिन उसे थपथपा और खिला रही थी। इस जानवर का डरावना चेहरा देखकर मेरे तो होश-हवाश गुम हो गये थे, यद्यपि मैं पचास फुट दूर मेज के दूसरे किनारे पर खड़ा था। इसके अलावा मेरी मालकिन उसे मजबूती से पकड़े भी थी क्योंकि उसे भी भय था कि कहीं बिल्ली झपटकर मुझे अपने पंजों में दबा न ले। परन्तु मालूम हुआ कि इस तरह के भय की कोई संभावना नहीं है क्योंकि मेरे मालिक ने जब मुझे बिल्ली से तीन गज की दूरी पर रख दिया तो भी मुझे न देख पाई। मुझे बतलाया गया है तथा यात्रा के अनुभवों से मालूम भी हो गया है कि डरावने जानवर के सामने, अपना डर प्रगट करने से, वह अवश्य ही पीछा करता अथवा हमला कर देता है। अतः मैंने इरादा कर लिया कि इस संकट-काल में मैं किसी भी प्रकार की घबड़ाहट या डर प्रगट नहीं

करूँगा। मैं निडर होकर पाँच छः बार बिल्ली के पास से होकर गुजरा और उससे आधे गज की दूरी तक आया।

इस पर वह पीछे की ओर लौट गई तथा मुझे यह मालूम हुआ कि मुझसे डर रही है। इसी समय तीन-चार कुत्ते उस कमरे में आ गये पर उनसे मुझे कम डर लगा। मालूम होता है कि किसान के घर में कुत्ते इसी प्रकार आते-जाते रहते हैं। उनमें से एक बड़ा कुत्ता चार हाथियों के बराबर था। और दूसरा शिकारी कुत्ता पतली टाँगों का था, जो पहलेवाले कुत्ते से भी कुछ ऊँचा था परन्तु उतना बड़ा नहीं था।

भोजन की समाप्ति के समय एक गोद में साल भर का बच्चा लिए एक दासी कमरे में आयी। बच्चे ने मुझे फौरन ही देख लिया और किलकारियाँ भर-भरकर मुझे खिलौना समझ कर माँगने लगा। उसकी दयालु माँ ने मुझे उठाकर उसके निकट रख दिया। उसने मुझे फौरन ही कमर से पकड़ लिया और मेरे सिर को अपने मुँह में रख लिया। इस पर मैं इतनी जोर से चिल्लाया कि बच्चा डर गया और उसने मुझे छोड़ दिया। अवश्य ही मेरी गरदन टूट गई होती यदि उसकी माँ ने मुझे अपने कपड़े में फैला कर मुझे फर्श पर गिरने से बचा न लिया होता। बच्चे को चुप करने के लिए दासी एक बाजा बजाने लगी। बाजा झुनझुना था जिसमें बड़े-बड़े पत्थर भरे थे। बच्चे की कमर में यह खिलौना तार से बँधा हुआ था। खिलौना पाकर भी

जब बच्चे का रोना न रुका तो उसे मजबूर होकर दूध पिलाना ही पड़ा जो आखिरी चारा था।

इस दासी के, शरीर के धब्बे, फुन्सियाँ तथा चित्तियाँ देखकर मुझे इँगलैंड की गोरी महिलाओं की याद आ गई। वे अत्यन्त सुन्दर मालूम होती हैं क्योंकि उनका आकार हम लोगों की ही तरह है। इन महिलाओं के दुर्गुणों को केवल खुर्दबीन के द्वारा ही देखा जा सकता है। उस समय हमें अनुभव होगा कि मुलायम से मुलायम गोरी खाल भी खुरदरी, बदसूरत और भद्दे रंग की होती है।

मुझे याद है कि जब मैं लिलीपुत में था तो उन छोटे-छोटे मनुष्यों का रंग संसार में सबसे अधिक गोरा मालूम हुआ था। इस विषय में, मैंने वहाँ अपने एक खास योग्य दोस्त से पूछा तो उसने बतलाया कि मेरा, चेहरा उसे उस समय अधिक सुन्दर और चिकना मालूम पड़ता है जब वह जमीन से मुझे देखता है। परन्तु नजदीक से देखने पर मैं उसे उतना सुन्दर नहीं मालूम होता। जब मैं हाथ में लेकर उसे अपने नजदीक ले आया तो उसने स्वीकार किया कि पहले पहल मेरी त्वचा उसे अत्यन्त डरावनी मालूम हुई। उसने बताया कि मेरी खाल में बड़े-बड़े छेद हैं। मेरी बनी हुई दाढ़ी के बाल, सुअर के कड़े बालों से दसदुना अधिक मोटे हैं। मेरे शरीर का रंग कई विभिन्न रंगों की मिलावट से बना है। यद्यपि मैं यह बात कहने की आज्ञा लेना चाहता हूँ कि मैं अपने देशवासियों की भाँति ही रूपवान

हूँ। यात्रा करने के कारण धूप से मेरा शरीर बहुत कम झुलसा है। दूसरी ओर सम्राट् के दरबार की महिलाओं का वर्णन करते हुए वह बतलाया करता था कि "एक महिला के चेहरे पर धब्बे पड़े हैं, दूसरी का मुँह बहुत बड़ा है तथा तीसरी की नाक बहुत बड़ी है!" मैं कभी एक को दूसरी से अलग न पहचान पाया। मेरा विश्वास है कि ये दैत्याकार मानव वास्तव में कुरूप नहीं थे। मैं यह कहकर उनके साथ न्याय ही करूँगा कि ये लोग सुन्दर जाति के हैं। विशेष रूप से मेरे मालिक का चेहरा, साठ फुट से मुझे सुन्दर प्रतीत हुआ। यद्यपि वह केवल एक किसान ही है।

भोजन समाप्त हो जाने के बाद मालिक अपने मजदूरों के पास चला गया। उसके संकेतों और भाषा से मुझे मालूम हुआ कि उसने मेरी देख-रेख के लिए अपनी स्त्री को कठोर आज्ञा दी है। मैं बहुत थक गया था और नींद भी आ रही थी। मालकिन ने यह देखकर मुझे अपने बिस्तर पर लिटा लिया और एक साफ रूमाल से मुझे ढक दिया। परन्तु यह रूमाल जहाज के मुख्य पाल से भी बड़ा और मोटा था।

मैं दो घंटे तक सोया। स्वप्न में मैंने देखा कि मैं अपनी स्त्री तथा बच्चों के पास घर में हूँ। जगने पर मेरा दुःख बहुत बढ़ गया। एक बड़े कमरे में, मैंने अपने को बिलकुल अकेला पाया। वह कमरा करीब दो या तीन सौ

फुट चौड़ा तथा दो सौ फुट ऊँचा था। वहीं मैं बीस गज चौड़े बिस्तरे पर लेटा हुआ था। मेरी मालकिन, कोई घरेलू काम करने के लिए बाहर चली गई थी और बाहर से ताला लगा दिया था। बिस्तर जमीन से आठ फुट ऊँचा था। यद्यपि मैं उतरना चाहता था परन्तु पुकारना उचित न समझा और यदि पुकारता भी तो बेकार ही होता क्योंकि मेरी जैसी आवाज उस कमरे से रसोईघर तक न पहुँचती। जब मैं इस परिस्थिति में था तभी दो चूहे मसहरी के पर्दे के भीतर घुस आये। और आगे पीछे सूँघ सूँघ कर वे मेरे निकट आ गये। उनमें से एक तो मेरे चेहरे के ही पास आ गया। मैं डरकर उठ बैठा। अपनी रक्षा के लिए मैंने तलवार निकाल ली। इन खतरनाक जानवरों को मेरे ऊपर हमला का साहस हो आया और उनमें से एक ने अपना अगला पैर मेरे कालर पर रख दिया। परन्तु उसकी शरारत के पहले ही मैंने उसका पेट फाड़ डाला। वह मेरे पैरों के पास गिर पड़ा। दूसरा चूहा अपने साथी का यह हाल देखकर जान बचाकर भागा। परन्तु भागते समय मैंने उसके भी एक घाव कर दिया। जिसमें से खून टपकने लगा। यह अदभुत कार्य करने के बाद मैं बड़ी देर तक, बिस्तर पर इधर-उधर टहलता रहा जिससे खोई हुई शक्ति लौट आयी और साँस ठीक से चलने लगी। ये चूहे बड़े कुत्ते के आकार के थे, परन्तु कुत्तों की अपेक्षा अधिक डरावने और फुर्तीले थे। यदि सोने के पहले मैंने अपनी पेटी उतार दी होती तो अवश्य ही मेरे टुकड़े-टुकड़े करके खा गये

होते। मैंने मरे हुए चूहे की पूंछ नापी तो वह दो गज से एक इंच कम लम्बी निकली। परन्तु उसी समय मेरे दिमाग में आया कि मैं बिस्तरे पर से यह लाश हटा दूं, क्योंकि उससे अब भी खून निकल रहा था। मैंने देखा कि अभी वह कुछ-कुछ जिन्दा है तो उसकी गरदन पर एक और वार करके मैंने पूरी तरह से उसका सफाया कर दिया।

इसके बाद ही मेरी मालकिन कमरे में आई। मुझे खून में लथपथ देख, दौड़कर उन्होंने अपने हाथ से मुझे उठा लिया। मैंने मरे चूहे की ओर इशारा किया तथा मुस्कराकर और संकेतों द्वारा बतलाया कि मेरे चोट नहीं लगी है। इस बात पर उसे बहुत खुशी हुई और नौकरानी को बुलाकर चिमटे से मरे हुए चूहे को खिड़की से बाहर फेंक देने के लिए कहा। इसके बाद उसने मुझे एक मेज पर बिठलाया। मैंने खून से सनी अपनी तलवार उसे दिखलाई। अपने कोट के लटके हिस्से से उसे साफ करके मैंने म्यान में रख लिया। मेरी इच्छा उस समय नहाने तथा सफाई करने की थी। अतः मैंने मालकिन को यह समझाने की कोशिश की, कि मुझे फर्श पर उतार दिया जाय। मेरी बेशरमी ने इससे अधिक मुझे कुछ न करने दिया कि कई बार झुककर मैंने दरवाजे की ओर इशारा किया। उस भली औरत को बड़ी मुश्किल से अंत में मेरी बात समझ में आई और थोड़ी देर के लिए उसने मुझे अकेला छोड़ दिया।

मुझे आशा है कि दयालु पाठक मुझे इस तरह के विवरणों के लिए क्षमा करेंगे। हो सकता है यह सब बातें, सामान्य मनुष्यों को निरर्थक और महत्त्वहीन मालूम हों, परन्तु वास्तव में एक विचारक के लिए यह सब बातें उसकी ज्ञान-वृद्धि करेंगी। तथा मैंने सदैव ही इन यात्राओं का वर्णन बिना किसी भाषा अथवा शैली अलंकरण के साथ किया है। परन्तु इस यात्रा का सारा दृश्य मेरे मस्तिष्क में इतना उतर आया है और मेरी स्मृति में इतना बस गया है कि उसका वर्णन करते समय मैं किसी भी विशेष घटना का उल्लेख करना भूल नहीं सकता।

---

(२)

मेरी मालकिन की नौ वर्ष की एक लड़की थी। अपने उम्र के हिसाब से वह बहुत चतुर थी। सीने-पिरोने के काम में अत्यन्त निपुण तथा छोटे भाई का पालन-पोषण और कपड़े पहनाने में बहुत जी लगाती थी। उसने तथा उसकी माँ ने मेरे लिए रात को लेटने का विशेष प्रबन्ध किया। बिस्तर एक दराजवाली आलमारी के एक छोटे खाने में लगाया गया था। चूहों के डर से वह छोटा खाना एक घूमती हुई आलमारी में रख दिया जाता था। जब तक मैं इन लोगों के साथ रहा मेरा बिस्तर इसी में लगता रहा। यद्यपि धीरे-धीरे मेरी सुविधा की और चीजों का भी जुगाड़ कर दिया गया था। इन लोगों की भाषा भी मैं अब धीरे-धीरे समझने लगा था और अपनी आवश्य-

कताओं के बारे में भी मैं अब उन्हें बतला देता था। यह लड़की इतनी चतुर थी कि थोड़े ही अनुभव के बाद वह मुझे कपड़े पहनाने के लिए तैयार रहती थी। फिर भी मैंने कभी उसे इस प्रकार का मौका नहीं दिया। उसने मेरे लिए सात कमीजें बनाईं। कमीजों का कपड़ा अच्छा था। जितना अधिक महीन कपड़ा वहाँ मिल सकता था उसी से मेरी कमीजें बनाई गई थीं। यह कपड़ा हमारे देश के मोटे कपड़े से भी कुछ दबीज था। मेरे कपड़े वह स्वयं अपने हाथों से धोती थी।

स्कूल की मास्टरनी की भाँति वह मुझे यहाँ की भाषा सिखलाती थी। जब मैं किसी वस्तु की ओर इशारा करता तो वह मुझे उसका नाम अपनी भाषा में बतलाती थी। इस तरह कुछ दिनों में मैं इस योग्य हो गया कि अपनी जरूरत की सब चीजें मैं स्वयं ही माँग लेने लगा। इस लड़की का स्वभाव बहुत अच्छा था। वह चालीस फिट से अधिक ऊँची न थी यद्यपि अपनी उम्र के हिसाब से वह कद में छोटी थी। उसने मेरा नाम गिल्ड्रिग रक्खा था। परिवार के लोग तथा अंत में सारा राज्य मुझे इसी नाम से पुकारने लगा।

गिल्ड्रिग शब्द का अर्थ है ("छोटा मनुष्य" अथवा "बौना") इस देश में मेरी देख-रेख तथा लालन-पालन का समस्त श्रेय इसी लड़की को प्राप्त है। मैं जब तक वहाँ रहा, हम कभी भी एक-दूसरे से अलग न हुए। मैं उसे अपनी

'ग्लैमडेलक्लिच' या छोटी नर्स कहा करता था। यदि मैं उसके लालन-पालन और प्रेम का वर्णन न करूँ तो मैं अत्यन्त कृतघ्नता का अपराधी होऊँगा।

इस बीच दूर-दूर तक धूम हो गयी कि मेरे मालिक को एक अजीब जीवधारी खेत में पड़ा हुआ मिला है जो 'स्पलेकनक'* के बराबर है तथा जिसका हर एक अंग ठीक आदमी की ही तरह का है। और अपने सब कामों को आदमी की ही तरह करता है। वह स्वयं अपनी धीमी भाषा में बोलता है और अब यहाँ की भी भाषा कुछ-कुछ सीखने लगा है। दोनों पैरों पर सीधे चलता है। वह भलामानुष और पालतू है। पुकारने पर वह आ जाता है। आज्ञा का पालन करता है। उसके शरीर की बनावट और अंग अच्छे हैं। उसका रंग मलेकर की तीनवर्षीय कन्या से भी अधिक सुन्दर है। एक दूसरा किसान मेरे मालिक के मकान के पास ही रहता था और उसका बड़ा दोस्त था। वह इस कहानी की सचाई का पता लगाने के उद्देश्य से आया। मैं तत्काल ही उसके सामने पेश किया गया और एक मेज पर रख दिया गया। आज्ञा के अनुसार मैं उस पर चलने लगा। तलवार निकाली और फिर उसे रख लिया।

अपने मालिक के अतिथि का मैंने अभिवादन किया। उसकी भाषा में ही मैंने उसकी कुशल-वार्ता पूछी तथा

*यहाँ स्पलेकनक नामक एक अति सुन्दर जानवर होता है जिसकी लम्बाई छः फुट होती है।

स्वागत किया, ठीक उसी तरह जैसे मेरी छोटी नर्स ने सिखाया था। यह आदमी बुड्ढा था और इसकी निगाह भी कमजोर थी। मुझे अच्छी तरह देखने के लिए उसने चश्मा लगा लिया। इसे देखकर मैं अपनी हँसी न रोक सका। क्योंकि उसकी आँखें पूर्णिमा की चन्द्रमा की भाँति चमक रही थीं। अपने लोगों को जब मेरी खुशी का कारण मालूम हुआ तो मेरे साथ वे लोग भी हँसने लगे। इस पर वह बेवकूफ बुड्ढा नाखुश होकर आपे से बाहर हो गया। वह बड़ा कंजूस था। मेरे दुर्भाग्य से उसने मेरे मालिक को बुरी सलाह दी कि मुझे नगर में बाजार के दिन, लोगों को दिखाया जाय। यह नगर हमारे घर से बाईस मील की दूरी पर था। जब मैंने देखा कि मेरा मालिक और उसका दोस्त बड़ी देर तक आपस में कानाफूसी करके बीच बीच में मेरी ओर इशारा भी करते जाते थे तो मैंने सोच लिया कि कोई चाल चली जा रही है।

दूसरे दिन प्रातःकाल मेरी छोटी नर्स ग्लमडेलक्लिच ने सारी बातें मुझे बतला दीं। उसने यह सब चालाकी से अपनी माँ से जान लिया था। उस बेचारी लड़की ने मुझे अपनी छाती पर लिटा लिया और शर्म तथा दुःख से रोने लगी। उसे डर था कि जाहिल देहाती लोगों के द्वारा कहीं मेरे ऊपर कोई आपत्ति न आ जाय। वे मुझे दबाकर भी मार सकते हैं या अपने हाथों में लेकर मेरे अंगों को तोड़ सकते हैं। उस लड़की ने मेरे स्वभाव, विनय तथा आत्म-

सम्मान की भावना की प्रशंसा करते हुए इस बात पर बड़ा दुःख प्रकट किया कि पैसे के लिए मेरा कितना तिरस्कार किया जा रहा है और मुझे गँवार तथा तुच्छ लोगों के सम्मुख जनता को दिखलाया जायेगा। उस लड़की ने यह भी बतलाया कि उसके पिता और माता ने यह वादा किया था कि ग्रिल्ड्रिग उसी का रहेगा परन्तु अब उसे मालूम हो गया है कि पिछली साल की तरह ही वे लोग उसे धोखा दे रहे हैं।

पिछले साल उन लोगों ने उसे एक भेड़ का बच्चा देने का बहाना किया। जैसे ही बड़ा होकर मोटा हो गया एक कसाई के हाथ उसे बेच दिया गया। मैं सच्चाई से कहता हूँ कि अपनी नर्स की अपेक्षा मैं कम चिन्तित था। मुझे यह पूर्ण आशा थी जो सदैव बनी रही कि एक दिन मुझे स्वतंत्रता अवश्य मिलेगी। और रही अपमान की बात, कि मुझे राक्षसों के पास ले जाया जायेगा तो मुझे इसकी कुछ भी चिंता न थी। क्योंकि यहाँ के लिए मैं पूरी तरह से अजनबी था; और यदि कभी मैं इँगलैंड लौटूँ तो इस तरह की दुर्घटना मेरे लिए कभी भी तिरस्कार का कारण न बनेगी। क्योंकि ग्रेट ब्रिटेन का सम्राट् भी यदि मेरी दशा में होता तो उसे भी यही मुसीबत उठानी पड़ती।

मेरा मालिक अपने दोस्त की सलाह के अनुसार लकड़ी के एक बक्स में मुझे रखकर पड़ोस के कस्बे की बाजार में ले गया। उसके साथ में उसकी छोटी लड़की, मेरी नर्स,

भी पीछे की गद्दी पर बैठी थी। वह बक्स चारों ओर से बन्द था केवल एक छोटा दरवाजा मेरे आने-जाने के लिए लगा था। हवा आने जाने के लिए कुछ सूराख बना दिये गये थे। वह लड़की मेरे बारे में इतनी सचेत रहती थी कि उसने बक्स में मेरे लेटने के लिए अपने छोटे भाई का गद्दा रख दिया था। यह यात्रा थी तो केवल आध ही घंटे की पर ऊबड़-खाबड़ मार्ग में हिचकोले खाकर मैं बहुत परेशान हो गया था। घोड़े की दुलकी चाल एक-एक कदम चालीस फुट का था। इसलिए मुझे उतनी व्याकुलता हो गई थी जितनी कि तेज तूफान में जहाज के हिलने-डुलने से होती है। ऐसी दशा कई बार हुई।

एक सराँय आ जाने पर मेरा मालिक उतर पड़ा। वह यहाँ अकसर आया-जाया करता था। सरांयवाले से कुछ देर तक सलाह करके मालिक ने कुछ तैयारियाँ भी कर लीं। उसने एक 'ग्रुल ट्रुड़' अर्थात् ढोल पीटकर सूचना देनेवाला कस्बे में यह प्रचार करने के लिए नियुक्त किया कि हरित गरुड नामक सराय में एक अजीब जानवर दिख-लाया जायगा जो 'सलैकनक' से अधिक बड़ा नहीं है। उसके सब अंग मनुष्यों से मिलते-जुलते हैं। वह कई शब्द बोल भी सकता है और सैकड़ों तमाशे और करतब दिख-लाता है।"

सराय के सबसे बड़े कमरे में, मैं एक मेज पर बिठा दिया गया। मेज तीन सौ फुट लंबी थी। मेरी छोटी नर्स

एक स्टूल पर मेज के नजदीक मेरी देख-रेख के लिए बैठी थी। भीड़ नियंत्रित रखने के उद्देश्य से मेरे मालिक एक बार में तीस से अधिक आदमियों को अंदर न आने देते थे। लड़की के संकेत के अनुसार मैं मेज पर इधर-उधर टहलता था। मेरी भाषा की पहुँच के अनुसार ही मुझसे सवाल पूछती थी और मैं उनका उत्तर शक्ति भर तेज आवाज में देता था। मैंने कई बार दर्शकों की ओर घूमकर उनका अभिनंदन किया और कहा कि उन सबका मैं स्वागत करता हूँ। इसके अलावा मैं और भी सिखाई हुई बातें कहता। मैंने शराब से भरा एक छोटा सा बर्तन उठाया जो असल में वहाँ के दर्जियों द्वारा उँगली पर पहननेवाली टोपी थी। ग्लमडेलक्लिच ने मुझे इसे प्याले की जगह पर दिया था। उन लोगों के स्वास्थ्य की कामना करते हुए मैंने उसे पी लिया। मैंने अपनी तलवार निकालकर, इँगलैंड के वीर सैनिक की भाँति कुछ करतब दिखाये। मेरी नर्स ने एक तिनके का टुकड़ा मुझे दिया जिससे मैंने बर्छी के तमाशे दिखलाये। यह कला मैंने युवावस्था में सीखी थी। उस दिन मैंने बारह शो दिखाये। मुझे वे तमाशे बार-बार करने पड़े। अंत में थककर अत्यंत व्याकुल हो गया।

मेरे करतब और तमाशे जिन लोगों ने देखे उन्होंने खबर दी थी कि भीतर आने के लिये लोग दरवाजे तोड़ने को तैयार हैं। मेरे मालिक ने अपने हित के लिए नर्स के अलावा किसी को भी मुझे छूने तक की अनुमति न दी

थी। खतरे से बचाने के लिए मेज के चारों ओर इतनी दूर तक बेंचें लगा दी गई थीं कि मैं उन लोगों की पहुँच तक न आ सकूँ।

फिर भी एक शैतान स्कूली लड़के ने मेरे सिर पर जैतून का एक फल फेंक ही दिया परन्तु मैं बाल-बाल बच गया। नहीं तो वह इतनी तेजी से आया था कि निश्चय ही मेरा भेजा निकाल देता। वह बीज कद्दू से भी बड़ा था। परन्तु यह देखकर मुझे संतोष हुआ कि उस शरारती लड़के को पीटकर कमरे से बाहर निकाल दिया गया।

मेरे मालिक ने जनता को यह बतला दिया कि अब दूसरी बाजार के दिन मुझे फिर दिखलाया जायगा। इसी बीच में उसने मेरे लिए एक सुविधाजनक गाड़ी बनवा ली थी। क्योंकि बुद्धिमान् होने के कारण वह जान गया था कि पहली यात्रा में मैं कितना अधिक थक गया था। और लगातार आठ घंटों तक इन लोगों को तमाशा दिखाते रहने के कारण मुश्किल से अपने पैरों पर खड़ा हो सकता था। तीन दिन तक मेरी थकावट न गई। घर पर भी मुझे आराम न बदी थी। सौ सौ मील तक की दूरी से पास-पड़ोस के भलेमानुस मेरी ख्याति सुनकर मालिक के मकान पर मुझे देखने के लिए आते थे। प्रतिदिन प्रायः तीस मनुष्य अपनी स्त्रियों और बच्चों के साथ आते थे। इस देश की जनसंख्या बहुत काफी है। मेरा मालिक जब कभी मुझे घर पर दिखाता था तो पूरे तमाशे की फीस

की माँग करता था। यह यद्यपि वे लोग एक ही परिवार के होते थे। इस तरह कुछ दिनों तक केवल बुधवार उनकी पूजा का दिन छोड़कर घर पर भी मुझे बहुत थोड़ी चैन मिली।

मेरे मालिक को जब यह मालूम हुआ कि मैं कितना कीमती और लाभदायक हूँ तो उसने मुझे साम्राज्य के प्रसिद्ध-प्रसिद्ध नगरों में ले जाने का विचार किया। अतः लम्बी यात्रा के लिए सब जरूरी चीजें एकत्र कीं और घर का इंतजाम किया और अपनी स्त्री से बिदा लेकर १७ अगस्त १७०३ ई० को (मेरे यहाँ आने के दो महीने बाद) राजधानी के लिए प्रस्थान किया। राजधानी साम्राज्य के बीचोबीच अपने नगर से करीब तीन हजार मील की दूरी पर है। मालिक ने अपनी लड़की ग्लमडेलक्लिच को अपने पीछे बिठा लिया। उसने मुझे लकड़ी के बक्स में रखकर अपनी गोदी में ले लिया। बक्स उसकी कमर से बँधा था। उस लड़की ने वहाँ मिलनेवाला मुलायम से मुलायम कपड़ा बक्स के अन्दर चारों ओर लगा दिया था, नीचे गद्दे बिछाकर अपने भाई का बिस्तर बिछा दिया था। अपनी ताकत भर उसने मेरी सुविधा के लिए हर एक चीज रख दी थी। हम लोगों के साथ केवल घर का एक और लड़का था। जो हम लोगों के पास सामान के साथ बैठा था।

मेरे मालिक का इरादा रास्ते के सब नगरों में मेरा

प्रदर्शन करने का था। उसकी योजना थी कि पचास या सौ मील चलकर सड़क के किनारे के किसी गाँव या किसी प्रसिद्ध व्यक्ति के घर में रुक जाया जायगा। उसे आशा थी कि वहाँ अच्छी खासी आमदनी हो जायगी। हम लोगों ने १४० या १६० मील रोज से अधिक की यात्राएँ नहीं कीं क्योंकि ग्लमडेलक्लिच ने मुझे आराम देने के लिए बहाना किया कि घोड़े की दुलकी चाल के कारण वह बहुत थक गई है। मेरे कहने पर वह अकसर मुझे बक्स से निकाल लेती थी। मुझे आसपास के प्रदेश दिखलाती थी। परन्तु एक डोरी के द्वारा मुझे कसके पकड़े रहती थी। हम लोगों ने पाँच या छः नदियाँ पार कीं जो गंगा से कई गुनी गहरी और चौड़ी थीं। वहाँ की छोटी से छोटी नदी भी लंदन ब्रिज की टेम्स नदी से छोटी न थी। इस यात्रा में हम लोगों को दस हफ्ते लगे। अठारह बड़े-बड़े नगरों में मेरा प्रदर्शन हुआ। इसके अलावा मुझे बहुत से गाँवों और व्यक्तिगत परिवारों में भी दिखलाया गया।

२६ अक्टूबर को हम लोग राजधानी में पहुँच गये। यहाँ की भाषा के अनुसार इसे लोर बुल ग्रड अर्थात् 'विश्व का गौरव' कहते थे। मेरे मालिक ने शहर की मुख्य सड़क पर ही रहने के लिए एक मकान ले लिया। यह राजमहल से अधिक दूर न था। और पहले के ही तरह मेरे शरीर और अंगों का ठीक-ठीक वर्णन करके मालिक ने पर्चे बटवा दिये। तीन-चार सौ फुट चौड़ा एक बड़ा कमरा उसने किराये पर लिया। साठ फुट व्यास की एक मेज रखी गई

जिस पर मुझे अपना तमाशा दिखाना था। मेज के चारों ओर तीन फुट ऊँची चहारदीवारी मुझे गिरने से बचाने के लिए बनवाई गई। सब लोगों के संतोष के लिए मुझे दिन में दस बार दिखलाया जाता था। मैं यहाँ की भाषा आसानी से अच्छी तरह बोल न पाता था परन्तु जो कुछ भी मुझसे कहा जाता उसे आसानी से समझ लेता था। इसके अलावा मैंने इन लोगों की वर्णमाला भी सीख ली थी जिससे वाक्य की व्याख्या करते समय मैं शब्दों में हेर-फेर भी कर सकता था। घर में ग्लमडेलक्लिच मेरी शिक्षिका रह चुकी थी और यात्रा में आराम के समय भी वह मुझे पढ़ाती थी। अपने जेब में वह एक छोटी किताब रखती थी जो सेनसान की एटलस से बहुत बड़ी न थी। जवान लड़कियों के लिए यह एक साधारण पुस्तक थी जिसमें यहाँ के धर्म के बारे में संक्षेप से लिखा है। इसी पुस्तक से वह मुझे शब्द सिखाती थी और व्याख्या करना भी बतलाती थी।

---

(३)

प्रतिदिन बहुत मेहनत पड़ने के कारण मेरी तन्दुरुस्ती में काफी फर्क आ गया था। मेरे द्वारा मेरा मालिक जितना ही अधिक रुपया कमाता या उतनी ही अधिक उसकी तृष्णा भी बढ़ती ही जाती थी। मेरा पेट बिलकुल खराब हो गया था और मेरा शरीर हड्डियों का केवल एक ढाँचा मात्र रह गया था। किसान ने मुझे देखकर विश्वास कर लिया

कि मैं शीघ्र ही मर जाऊँगा अतः उसने इरादा कर लिया कि जितना अधिक रुपया मेरे द्वारा कमाया जा सके, कमाया जाय।

यह सब बातें अपने मन में सोच ही रहा था कि एक 'सरद्राल' या दरबार का कर्मचारी उसके पास आया। उसने आदेश दिया कि वह मुझे फौरन रानी तथा उसकी सहेलियों के दिल-बहलाव के लिए 'महल' ले जाय।

कुछ लोगों ने, जो मुझे पहले देख चुके थे, मेरी सुन्दरता, व्यवहार और अच्छी समझ की तारीफ कर दी थी। रानी तथा उसकी सहेलियाँ मेरे आचरण से अत्यन्त प्रसन्न हुईं। मैं घुटने के बल बैठ गया और रानी के पैर चूमने की इच्छा प्रगट की, परन्तु इस सुन्दर राजकुमारी ने अपनी छोटी उँगली मेरी ओर मेज के ऊपर जहाँ मैं बैठा था, बढ़ा दी। मैंने अपने दोनों हाथों से उस उँगली को पकड़ लिया। अत्यन्त आदर के साथ मैंने उँगली अपने ओठों पर लगा लिया। उसने मुझसे मेरे देश तथा यात्रा के बारे में साधारण सवाल किये जिसका जवाब मैंने थोड़े से शब्दों में साफ-साफ दे दिया। उसने मुझसे पूछा कि क्या दरबार में रहना मैं पसद करूँगा? मैं मेज के तख्ते की ओर नम्रता से झुक गया और अदब के साथ कहा कि मैं अपने मालिक का गुलाम हूँ परन्तु यदि मेरी इच्छा पर होता तो महारानी की सेवा में अपना जीवन अर्पित करने में बहुत

गौरव होता। इसके बाद उसने मेरे मालिक से पूछा कि क्या वह अच्छे दामों में मुझे बेचेगा।

मालिक को तो भय था ही कि मैं एक महीने से अधिक जिंदा नहीं रह सकता। इसलिए वह मुझे बेचने को तैयार हो गया और एक हजार सोने के सिक्कों की माँग की। उसी समय वहीं उसे रुपया दिये जाने का हुक्म दे दिया गया। हर एक सोने का सिक्का आठ सौ अशरफियों के बराबर था। परन्तु औसतन यहाँ की सभी चीजों की तुलना योरुप से करने पर और यहाँ सोने की तेजी देख कर वह धन राशि इँगलैंड में एक हजार गिनी से अधिक न थी। इसके बाद मैंने रानी से कहा कि 'अब मैं महा-रानी की अत्यन्त दीन और आश्रित प्रजा हो गया हूँ। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप ग्लमडेलक्लिच को भी अपनी सेवा में रख लीजिए। इस लड़की ने हमेशा मेरा लालन-पालन बड़ी दया और होशियारी से किया है और इस काम में वह बहुत ही निपुण है इसलिए मेरी यह इच्छा है कि वह मेरी नर्स और शिक्षिका बनी रहे।'

महारानी ने मेरी प्रार्थना मंजूर कर ली। उसके पिता किसान ने भी अपनी अनुमति आसानी से दे दी। वह अत्यन्त प्रसन्न हुआ कि दरबार ने उसकी लड़की की माँग की। बेचारी लड़की भी अपनी खुशी को छिपा न सकी। मेरे पुराने मालिक ने अपनी शुभाकांक्षा प्रगट करते हुए मुझसे बिदा ली और कहा कि वह मुझे अच्छी जगह छोड़े

जा रहा है। बिना कुछ उत्तर दिये हुए ही मैंने कुछ झुककर उसका अभिवादन किया।

रानी ने मेरी उदासीनता देख ली थी और जब वह कमरे से चला गया तो उसने मुझसे इसका कारण पूछा। मुझे यह बताने का साहस आ गया कि मेरे पुराने मालिक का मुझ पर केवल एक ही अहसान है कि अकस्मात् मुझ जैसे बेचारे निर्दोष जीव को एक खेत में पाकर उसने पटककर मार नहीं डाला। इस एहसान के बदले में उसने मुझे आधे साम्राज्य में दिखा-दिखाकर काफी रुपया कमा लिया है और अब मुझे बेचकर भी उसे अच्छी खासी रकम मिल गई है। इसने मुझसे इतना ज्यादा काम लिया है कि मुझसे दस गुने अधिक ताकतवाले जानवर को भी उतना काम मार डालने भर को काफी होता। दिन में हर समय अपने खेलों द्वारा उपद्रवी लोगों का मनोरंजन करते रहने के कारण मेरी तन्दुरुस्ती बहुत गिर गई है। और यदि मालिक को मेरे मर जाने का डर न होता तो आपका सौदा इतने सस्ते में न होता। परन्तु प्रकृति की भूषण, संसार की प्रिय, प्रजाजनों को आनंद देनेवाली, सृष्टि की अपूर्व कृति अत्यन्त महान् और सुन्दर महारानी की छत्र-छाया में आ जाने के कारण अब मुझे दुर्व्यवहार का भय बिल्कुल ही न था। मुझे अपने पुराने मालिक के भय निर्मूल मालूम हुए क्योंकि दयालु और तेजस्विनी रानी के प्रभाव से मुझमें एक नवीन प्रेरणा आ गई है।"

यह मेरे व्याख्यान का सारांश है जो मैंने बड़ी हिच-कचाहट और घबड़ाहट में दिया था। व्याख्यान के बाद का हिस्सा, वहाँ के लोगों की अजीब शैली के अनुसार ही था। मैंने कुछ मुहावरे तथा शब्द ग्लमडेलक्लिच से उस समय सीख लिये थे जब वह मुझे दरबार में लिये आ रही थी।

रानी ने, मेरी बोलचाल की गलियों पर कोई ध्यान न दिया। मेरे जैसे बहुत छोटे जीव में इतनी चतुरता और समझ देखकर उन्हें अत्यन्त आश्चर्य हुआ। मुझे अपने हाथ में लेकर वह राजा के पास गई जो उसी समय कमरे से लौटा था। गंभीर, शुद्ध और पवित्र आकृतिवाले महाराज ने पहली बार मुझे अच्छी तरह न देखकर रानी से पूछा कि वह कब से स्प्लेकनेक (छोटे जानवरों) की शौकीन हो गई है। मुझे मालूम होता है कि जब मैं छाती के बल महारानी के दाहिने हाथ पर लेटा हुआ था तो महाराज ने मुझे स्प्लेकनेक ही समझा था। परन्तु चतुर और व्यंगप्रिय रानी ने धीरे से मुझे खड़ा कर दिया। उसने मुझे आज्ञा दी कि मैं स्वयं ही अपने बारे में महाराज को बतलाऊँ। थोड़े शब्दों में मैंने सब कुछ बता दिया। ग्लमडेलक्लिच को मेरा वियोग एक क्षण भी न सुहाता था। वह दरवाजे के पास ही खड़ी थी। आज्ञा मिलने पर अंदर आकर उसने अपने पिता के पास मेरे पहुँचने की जो मुझ पर घटी हुई थीं सब बातें बतला दीं।

राजा अपने साम्राज्य के अन्य योग्य पुरुषों की भाँति ही था। उसे दर्शनशास्त्र की शिक्षा दी गई थी। और विशेषतया गणित का अध्ययन भी उसने किया था। परन्तु जब उसने मेरी शक्ल देखी और बोलने के पहले सीधे चलते देखा तो उसने सोचा कि वहीं के किसी योग्यतम कारीगर ने कोई छोटी घड़ी तैयार की है। यहाँ इस देश में घड़ी का व्यवसाय अत्यंत उन्नति पर है। परंतु जब उसने मुझे बोलते सुना और यह देखा कि जो कुछ मैं बोलता हूँ वह ठीक और विचारयुक्त है तो वह अपना आश्चर्य छिपा न सका। इस साम्राज्य में मैं किस प्रकार आ गया, यह बताने पर उसे संतोष न हुआ और उसने सोचा कि ग्लमडेल-क्लिच और उसके पिता ने मिलकर यह कहानी गढ़ ली है और मुझे अच्छे दामों में बेचने के लिए कुछ शब्द सिखा दिये हैं। यह सोचकर राजा ने कई और सवाल मुझसे पूछे परन्तु विचारयुक्त उत्तर ही उसे प्राप्त हुए। इन उत्तरों में उसे वही कमजोरियाँ मिलीं जो एक विदेशी के बोलने में होती हैं। किसान के घर पर रहकर मैंने जो टूटी-फूटी देहाती भाषा सीखी थी वह किसी भी हालत में दरबार में बोलने योग्य न थी।

तीन महान् विद्वानों की ड्यूटी सप्ताह भर महाराज के महल में लगी रहती है। इन लोगों ने मुझे बहुत अच्छी तरह देखा परंतु मेरे बारे में तीनों विभिन्न मत थे। वे सभी इस बात पर सहमत थे कि प्रकृति के शाश्वत नियमों

के अनुसार मेरी उत्पत्ति नहीं हो सकती क्योंकि मेरे अंदर इतनी ताकत नहीं है कि मैं पेड़ पर चढ़ सकूँ या जमीन में गड्ढे खोद सकूँ। उन लोगों ने मेरे दाँत देखे। बड़ी देर तक परीक्षा करने के बाद इस विचार पर आये कि मैं मांसाहारी जानवर हूँ। परन्तु अन्य चौपाये जानवरों, खेत के चूहों और दूसरे तेज भागनेवाले जानवरों से मेरी तुलना न हो सकने के कारण उन लोगों को यह विश्वास न हो रहा था कि मैं छोटे तथा अन्य कीड़े-मकोड़ों को खाये बिना कैसे जिन्दा हूँ। इसे सिद्ध करने के लिए उन लोगों ने बहुत से तर्कों के साथ मेरे सामने कीड़े-मकोड़े पेश किये परंतु मैं उनको न खा सका। एक विद्वान् ने कहा शायद मेरी उत्पत्ति समय से पहले ही हुई होगी। परन्तु अन्य दो विद्वानों ने मेरे सुन्दर और स्वस्थ अंग देखकर इस बात को मानने से इनकार कर दिया। खुर्दबीन से मेरी दाढ़ी देखने पर इन लोगों ने बताया कि मैं कई वर्ष का हूँ और मेरी उत्पत्ति समय से पहले नहीं हुई। विद्वानों के अनुसार मैं बौना भी नहीं हो सकता क्योंकि मैं हर हालत में बहुत ही छोटा था। महारानी का प्यारा बौना जो अपनी छोटाई के लिए सारे साम्राज्य में प्रसिद्ध था वह भी करीब तीस फुट ऊँचा था।

बहुत देर तक सोचने-विचारने के बाद आखिर वे सब इस नतीजे पर पहुँचे कि मैं केवल रेलप्लम स्केलकेथ ही था अर्थात् मैं जन्म से ही इसी रूप का हूँ। यह मत योरोप

के आधुनिक दर्शन-शास्त्र के अनुरूप है। इस मत के आचार्यों ने पुराने गुप्त कारणों का तिरस्कार करके बढ़ते हुए मानवीय ज्ञान के बारे में कुछ भी पता न लगा पाने पर सब कठिनाइयों का यही एक विचित्र हल निकाला है। इस बात से अरस्तू के मतावलंबियों ने बेकार ही अपनी अयोग्यता छिपाने का प्रयत्न किया है।

इस बात का निर्णय हो जाने के बाद मैंने प्रार्थना की कि मेरी भी बात सुन ली जाय। मैंने राज की ओर देखकर उसे विश्वास दिलाया कि मैं उस देश से आ रहा हूं जहाँ मेरी आकृति के करोड़ों स्त्री-पुरुष रह रहे हैं। वहाँ के जानवर, मकान और पेड़ सब उसी अनुपात से हैं। यहाँ की प्रजा की भाँति वहाँ भी प्रत्येक मनुष्य अपनी रक्षा और पालन-पोषण आसानी से कर सकता है। विद्वान् लोगों के तर्कों और मतों का उत्तर देने ही के लिए मैंने यह बातें कही थीं। इस बात पर हँसकर उन लोगों ने उत्तर दिया कि किसान ने मुझे बहुत अच्छी तरह सिखा-पढ़ा दिया है। बुद्धिमान् राजा ने विद्वानों को जाने की आज्ञा देकर किसान को बुला भेजा। सौभाग्य से वह अभी शहर से बहुत दूर नहीं जा पाया था। राजा ने पहले उससे एकांत में बात की और बाद में उसका और लड़की का मुझसे सामना करवाया। अब राजा को यह विश्वास होने लगा था कि हम लोगों ने जो कुछ बतलाया है वह सच भी हो सकता है। उसने रानी से यह इच्छा प्रगट की

कि मेरी देख-भाल अच्छी तरह की जाय। राजा की यह भी राय थी कि ग्लमडेलक्लिच को मेरे पालन-पोषण के लिए जरूर रखा जाय क्योंकि उसे यह मालूम हो गया था कि हम लोग एक दूसरे को बहुत प्यार करते हैं। दरबार में उसे एक सुन्दर और सुविधाजनक कमरा दिया गया। उसकी शिक्षा की देख-रेख के लिए एक अध्यापिका रखी गई। कपड़े पहनाने के लिए एक लड़की और दूसरे काम करने के लिए उसे दो और नौकर दिये गये। परन्तु मेरी देख-भाल करने का सारा भार केवल उसी पर था।

रानी ने अपने कारीगर को मेरे सोने के लिए एक सुंदर बक्स बनाने की आज्ञा दी। ग्लमडेलक्लिच और मुझसे नमूना देने के लिए कहा गया और कारीगर को यह भी बता दिया कि उसी नमूने के अनुसार ही बक्स बनेगा। यह बहुत अच्छा कारीगर था और मेरी इच्छा के अनुसार तीन ही हफ्ते में उसने सोलह फुट के आकार का एक सुंदर कमरा बना दिया जो बारह फुट ऊँचा था। लंदन के आराम कमरे की भाँति इसमें शीशे की खिड़कियाँ, एक दरवाजा और दो छोटे-छोटे कमरे भी थे। जिस तख्ते से बनी थी वह दो कब्जों के द्वारा ऊपर-नीचे उठाया जा सकता था। इसी के द्वारा महारानी का बिछौना समेटने-वाला नौकर मेरा बिस्तर लगाता था। इस बिस्तर को ग्लमडेलक्लिच धूप में सुखाने के लिए रोज बाहर निकाल लेती थी। इसे उसने स्वयं अपने हाथों बनाया था। रात

को इसे नीचे रखकर मेरे ऊपर की छत में ताला डाल देती थी। अनोखी चीजें बनानेवाले एक कारीगर को मेरे लिए दो कुर्सियां बनाने का काम दिया गया। कुर्सियों की पीठ और ढाँचा ऐसी चीज से बना था जो हाथीदांत से कम सुंदर न था। चीजें रखने के लिए दो खानेदार मेजें भी बनवाई गईं।

कमरे को चारों ओर से कई तहों में बनाया गया था। छत तथा फर्श भी इसी तरह कई परतों से बनायी गयी थी जिससे मुझे ले जानेवालों की असावधानी से बचाया जा सके या पालकी में जाने पर धक्के से मेरी रक्षा हो सके। चूहों तथा चुहियों को भीतर आने से रक्षा के लिए मैंने दरवाजे में ताला फिट करने का अनुरोध किया। बड़ी कोशिशों के बाद लोहार ने एक इतना छोटा ताला बनाया जैसे वहाँ पहले पहल कभी देखा तक नहीं गया था। मैं जानता हूँ कि इँगलैंड के किसी भलेमानुस के घर दरवाजे में इससे काफी बड़ा ताला लगाया जाता है। मैं ताले की कुंजी अपने पास ही रखता था कि ग्लमडेलक्लिच कहीं उसे खो न दे। इसी तरह रानी ने मेरे कपड़ों के लिए वहाँ मिलनेवाले महीन से महीन रेशम के लिए आज्ञा दी। यह रेशमी कपड़ा अँगरेजी कंबल से अधिक मोटा न था। जब तक कि मुझे उसके पहनने की आदत न पड़ गई मुझे बड़ी तकलीफ देता रहा। यह कपड़े राजधानी के फैशन के अनुरूप थे। कुछ-कुछ फारस और कुछ-कुछ चीनी कपड़ों से मिलते-जुलते थे।

रानी को मेरे ऊपर इतना अनुराग हो गया कि मेरे बिना वह खाना नहीं खा सकती थी। मुझको खानेवाली मेज के ऊपर ही बाईं कुहनी के पास मेरी मेज पड़ती थी और बैठने के लिए कुर्सी डाली जाती थी। मेरी देख-भाल और मदद करने के लिए ग्लमडेलक्लिच एक स्टूल पर खड़ी रहती थी। मेरे खाने की तश्तरियाँ और दूसरी जरूरी चीजें सभी चाँदी की थीं। रानी के बर्तनों से तुलना करने पर, मेरे बर्तन उन बर्तनों से अधिक बड़े न थे जैसे जो मैंने लंदन की खिलौनेवाली दूकान में बच्चों के सामान में देखे थे। ये बर्तन मेरी छोटी नर्स एक चाँदी के डिब्बे में बंद अपनी जेब में ही रखती थी। खाने के समय मेरे माँगने पर वह मुझे दे देती थी। वह हमेशा इन्हें खद ही साफ करती थी।

रानी के साथ केवल दो राजकुमारियाँ, सोलह वर्ष की बड़ी राजकुमारी तथा तेरह वर्ष की छोटी राजकुमारियों के अतिरिक्त कोई दूसरा व्यक्ति भोजन नहीं करता था। महारानी मांस का एक छोटा टुकड़ा मेरी तश्तरी में रख देती थी और उसी में से काटकर मैं धीरे-धीरे खाता था। मेरे द्वारा थोड़ा खाने से रानी को बड़ा मनोरंजन होता था क्योंकि वह (शायद जिसका हाजमा खराब था) एक कौर में इतना खाना लेती थी जितना एक दर्जन अँगरेज किसान अपने एक बार के खाने में खा सकते हैं। रानी के खाने का दृश्य देखकर मेरा तो जी मचलाने लगता था।

वह अपने दाँतों से एक बार में ही लवा पक्षी के पंख, हड्डियाँ और सब कुछ चबा जाती थी। यद्यपि यह लवा पक्षी एक पेरू मुर्गी से नौ गुना अधिक बड़ा होता था। बारह पेनी वाली दो रोटियों से अधिक बड़ा एक रोटी का कौर वह अपने मुँह में रखती थी। एक घूँट में सोने के कप में साढ़े बावन गैलन शराब पी जाती थी। यदि उसके चाकू मय हेंडिल के उन्हें सीधा खड़ा कर दिया जाय तो दो हँसियों के बराबर लम्बे थे। इसी अनुपात से उसके चम्मच, काँटे और सभी दूसरी चीजें थीं। मुझे याद है कि एक बार ग्लम डेल क्लिच मुझे दरबार की मेजें दिखाने ले गई थी। वहाँ एक साथ, इसी प्रकार के बहुत से चाकू और काँटे रखे हुए थे। उस समय से पहले मैंने कभी इतना भयानक दृश्य न देखा था।

यहाँ एक रीति है कि बुधवार (जो उनका पूजा का दिन है) को राजा, रानी तथा राजकुमार और राज-कुमारियाँ सभी महाराज के कमरे में एक साथ ही भोजन करते हैं। अब मैं इन सब लोगों का अत्यंत प्रिय हो गया था। ऐसे अवसरों पर मेरी छोटी मेज और कुर्सी वहीं डाली जाती थी। मेरे साथ बातचीत करने में राजा को बड़ा आनंद आता था। वह मुझसे योरप के रीति-रिवाज, धर्म, कानून, सरकार और साहित्य के बारे में पूछता था। मैं अपनी योग्यता के अनुसार उसे उचित उत्तर देता था। उसका दिल इतना साफ और निर्णय इतना न्यायपूर्ण होता

था कि जो कुछ भी मैं बतलाता था वह उस पर गंभीर विचार करता था। लेकिन मैं स्वीकार करता हूँ कि जब मैंने उसे अपनी प्यारी मातृभूमि, व्यापार, समुद्री तथा स्थल युद्धों, धर्म के विभिन्न मतों और राजनीतिक दलों के बारे में बहुत बातें बतलाई तो अपनी शिक्षा के प्रभाव में आकर उसने मुझे दाहिने हाथ से उठाकर दूसरे हाथ से धीरे से दवा कर हँसते हुए पूछा कि मैं ह्विग हूँ या टोरी हूँ? इसके बाद उसने अपने प्रधानमंत्री की ओर देखा जो पीछे सफेद कपड़े पहने अपने दल के साथ इंतजार कर रहा था। प्रधानमंत्री 'रायल सावरेन' जहाज के मुख्य मस्तूल के बराबर लंबा था। राजा ने कहा कि मनुष्य का अहंकार भी कितनी तुच्छ चीज है जिसकी हँसी मेरा जैसा छोटा जीव भी उड़ाता है। 'और उसपर भी' उसने कहा, 'मैं कह सकता हूँ कि इन छोटे जीवधारियों में भी आदर और पदों को प्राप्त करने की अभिलाषा रही है। ये लोग छोटे छोटे घोसलों और बिल बनाने का प्रबंध करते हैं। इन्हें ये लोग मकान और नगर कहते हैं। अच्छे अच्छे वस्त्रों से ये लोग अपने को सजाते हैं। ये लोग प्रेम करते हैं, लड़ते हैं और झगड़ा करते हैं एक दूसरे को धोखा और दगा भी देते हैं।" इसी भाँति वह बहुत-सी बातें कहता रहा परन्तु कला और शक्ति का अवतार, फ्रांस का हौवा, योरोप का अधि-नायक, दया-सत्य आदि सद्‌गुणों का केंद्र, महान् मातृभूमि का यह भारी अपमान सुनकर कई बार मेरा रक्त खौल उठा।

परंतु चूँकि मैं इस परिस्थिति में न था कि गुस्सा दिखाऊँ या कुछ कह सकूँ इसलिए विचार करने पर मुझे शंका होने लगी कि मेरी भावनायें कुचली गई हैं या नहीं ? यहाँ के लोगों के साथ कई महीने रहने के कारण, मैं यहाँ के दृश्यों और यहाँ के लोगों की बातचीत का अभ्यासी हो गया था। यहाँ की प्रत्येक वस्तु मुझे अनुपात से शानदार ही मालूम होती थी। मुझे इन लोगों के भारी शरीर देखकर भय होता था पर वह अब धीरे-धीरे कम होने लगा था। यहाँ तक कि अब यदि मैं इंगलैंड के सामन्त और उनकी स्त्रियों को उनके सुंदर वस्त्रों से सजे हुए, उनके जन्म-दिवस पर उन्हें दरबारी शान से झूमते और घूमते देखूँ तो यह सच है कि मैं उसी प्रकार से हँस पड़ूँगा जैसे कि यहाँ के राजा और उसके अमीर मुझे देखकर हँसे थे। इसके अलावा जब मुझे रानी अपने हाथ में लेकर शीशे की ओर देखती थी तो अपनी शकल देखकर मैं अपनी हँसी रोक न पाता था। हम दोनों की पूरी तस्वीरें उस समय शीशे में दिखलाई पड़ती थीं। दोनों की तुलना करने पर इससे अधिक हँसी का दृश्य मुझे और दिखाई ही न पड़ता था। उस समय मैं वास्तव में अपने को अपने आकार से भी कई गुना छोटा समझने लगता था।

रानी के बौने को देखकर मुझे बहुत ज्यादा गुस्सा और भय लगता था। देश भर में वह सबसे छोटा बौना था। मेरे हिसाब से वह तीस फिट के करीब ही लम्बा था।

अपने से काफी छोटे जीव को देखकर वह इतना धूर्त हो गया था कि जब कभी रानी के दालान से वह गुजरता था तो हमेशा इतरा इतरा कर चलता था। मेज पर खड़े होकर जब मैं सामंत या उनकी स्त्रियों से बात करता तो वह मेरी बुराई करने से कभी न चूकता। मैं उसे केवल 'भाई' कह-कर कुश्ती के लिए ललकारता था। दरबार के लड़कों की भाँति हम दोनों आपस में हँसी-मजाक भी करते थे।

एक दिन न मालूम क्यों छोटा बौना मुझसे इतना चिढ़ गया कि महारानी की कुर्सी पर चढ़कर उसने कमर पकड़ कर मुझे उठा लिया। मुझे विश्वास था कि वह मुझे कोई हानि न पहुँचायेगा। चाँदी के बड़े प्याले में मुझे फेंककर वह जोरों से भागा। प्याले में मक्खन था। मर और कान के बल मैं उस में जा गिरा। यदि मैं अच्छा तैराक न होता तो उस दिन बड़ी मुसीबत में फँस जाता। इस समय ग्लम-डेल क्लिच दूसरे कमरे में थी। रानी इस आकस्मिक घटना से इतना डर गई कि मदद देने के लिए उसे सोचने-विचारने की आवश्यकता पड़ी। परन्तु मेरी छोटी नर्स मदद के लिए दौड़ी और तुरन्त बाहर निकाल लिया। मैं उस समय तक करीब तीन पाव मक्खन पी चुका था। मुझे बिस्तर पर लिटा दिया गया। मेरे कोई भी चोट नहीं आई थी, केवल एक जोड़े कपड़े ही बरवाद हुए थे। उस बौने की कोड़ों से खूब मरम्मत की गई। दण्ड रूप में उसे सारा मक्खन पीना पड़ा। उसे दुबारा कभी रानी का अनुग्रह

प्राप्त न हुआ। उसने एक संभ्रान्त महिला को वह बौना दे दिया जिससे वह दुबारा मेरी आँखों के सामने न पड़े। इस बात से मुझे बहुत संतोष हुआ क्योंकि मैं नहीं कह सकता कि यह बौना मुझसे बदला लेने के लिए कितनी शरारत और करता।

इसके पहले भी इसने मुझसे भद्दी मजाक की थी। जिस पर रानी को हँसी आ गई थी। परन्तु इस घटना से रानी घबड़ा गई थी। यदि मैं प्रार्थना न करता तो वह उसी समय नौकरी से हटा दिया गया होता। एक बार महारानी की तश्तरी में एक हड्डी रक्खी थी। रानी ने उसका रस चूस कर उसे फिर उसी तरह खड़ी कर दिया। बौना इस मौके को देख रहा था। जब ग्लम डेल क्लिच बाहर चली गई तो वह स्टूल पर चढ़ गया। दोनों हाथों से उसने मुझे उठा लिया और पैरों को समेटकर कमर तक मुझे उस हड्डी में घुसेड़ दिया। मैं कुछ समय तक उसमें फँसा रहा। मेरी शक्ल बहुत विचित्र हो गई। अनुमानतः एक मिनट तक किसी को भी मेरी इस दशा का पता न चला। नीचे होने के कारण मैंने सोचा कि चिल्लाने से कुछ काम न चलेगा अन्त में छुटकारा मिला। महारानी कभी-कभी गोश्त गरम करवाती थी परन्तु मेरे पैर कभी न जले। मेरी प्रार्थना पर बौने को केवल कोड़ों से ही पीटने का दण्ड दिया गया।

अक्सर डर जाने पर रानी मुझसे पूछा करती थी कि

क्या मेरे देश में मेरी ही तरह सभी डरपोक हैं। गर्मी के मौसम में, राजधानी में मक्खियों की भरमार हो जाती थी। खाना खाते समय भयानक कीड़े मुझे चैन न लेने देते थे। वे लगातार मेरे कानों के पास ही मँडरा मँडरा कर भन-भनाया करते थे। कभी कभी वे मेरे खाने की चीजों पर बैठते, कभी नाक पर और कभी मस्तक पर बैठकर, बड़े जोरों से डंक मार देते थे। इन मक्खियों से एक प्रकार की बदबू निकला करती थी। मैं आसानी से कह सकता हूँ कि प्रकृति-विशेषज्ञों के अनुसार चिपचिपे पदार्थ के कारण ही यह मक्खियाँ अपने पैरों को ऊपर करके छत पर चलती हैं। इन घिनौने कीड़ों से बचने के लिए मुझे बहुत तकलीफ उठानी पड़ी। जब ये मेरे चेहरे पर छा जाते थे तो भोजन करना मुश्किल हो जाता था। स्कूली लड़कों की तरह बौने की यह आदत थी। मुझे डराने और रानी का ध्यान आकर्षित करने के लिए वह बहुत-सी मक्खियों को पकड़कर मेरी नाक के पास छोड़ देता था। हवा में उड़ती हुई इन मक्खियों को चाकू से काट डालने के अलावा मेरे पास कोई दूसरा चारा न था। मेरी इस बहादुरी की काफी तारीफ की जाती थी।

मुझे याद है कि एक दिन प्रातःकाल ग्लम डेल क्लिच ने मुझे मेरे बक्स में रखकर एक खिड़की में रख दिया था। साफ और खुले दिनों में मुझे हवा देने के लिए वह अक्सर ऐसा ही करती थी। कमरे की खिड़की खोल मैं अपनी मेज पर नाश्ते के लिए मीठी केक लेकर बैठा ही था कि

उसकी खुशबू से आकर्षित होकर बीस से अधिक बर्रें कमरे में घुस आईं। ये बर्रें शहद की मक्खियों से भी बड़ी थीं। मोर बाजे की तरह भिन-भिना रही थीं। कुछ बर्रों ने केक पर धावा बोल दिया और उसे लेकर उड़ गईं। दूसरी बर्रें मेरे सर तथा चेहरे के चारों ओर उड़-उड़कर अपनी भन-भनाहट से मुझे परेशान करने लगीं। इनके डंकों से मुझे बहुत डर लगता था। किसी तरह मुझमें खड़े होकर तलवार निकालने का साहस आ गया। मैंने उन पर हमला कर दिया। उनमें से चार को खत्म कर दिया। शेष मक्खियाँ उड़ गईं। मैंने तुरन्त खिड़की बंद कर दी। यह कीड़े तीतर के समान आकार वाले थे। मैंने उनके डेढ़ इंच लंबे और नुकीले डंकों को निकाल लिया। ये डंक सूइयों की तरह तेज थे। मैंने उन सब डंकों को बहुत सावधानी से रख लिया। योरुप के विभिन्न भागों में मैंने इन्हें अन्य कुतूहल वर्धक वस्तुओं के साथ दिखलाया। इंग्लैंड लौटने पर मैंने तीन डंक तो ग्रेशम स्कूल को दे दिये और चौथा अपने पास रख लिया।

---

(४)

अब इस देश का संक्षिप्त विवरण लीजिये। जिन प्रदेशों में, मैं घूमा वह राजधानी लारब्रुलग्रड से दो हजार मील के अंदर ही थे। मैं सदैव महारानी के साथ ही रहता था। वह राजा के साथ जाती थी किन्तु आगे कभी नहीं। जब

तक महाराज सीमांत प्रदेशों का दौरा करके वापस न लौटते वह वहीं ठहरी रहतीं। राजा का साम्राज्य करीब छः हजार मील लंबा और तीन हजार से लेकर पाँच हजार मील तक चौड़ा था। इससे यह मान्य हो जाता है कि योरोप के भूगोल तत्त्ववेत्ता यह सोचकर कितने भ्रम में हैं कि जापान और कैलीफोरनिया के बीच समुद्र के अलावा और कुछ है ही नहीं। मेरा तो सदैव यही मत रहा है कि टारटेरी ऐसे महाद्वीप के कारण उसकी बराबरी के लिए भूमि में भी काफी अंतर हो जायेगा। अतः उन लोगों को भूमि के इस बड़े भाग को, अमेरिका के उत्तरी-पश्चिमी भाग में शामिल करके अपने नक्शे ठीक कर लेने चाहिये। इस काम में, मैं उन्हें सहायता देने के लिए तैयार हूँ।

यह साम्राज्य चारों ओर पानी से घिरा है। उत्तरी पूर्वी सीमा पर तीस मील ऊँचे पर्वत हैं। चोटियों पर ज्वालामुखी होने के कारण ये पार नहीं किये जा सकते। बड़े-बड़े विद्वानों को भी यह नहीं मालूम कि इन पर्वतों के उस पार किस तरह के आदमी रहते हैं या वहाँ आबादी भी है अथवा नहीं। दूसरे यह तीन ओर से समुद्र से घिरा है। समस्त साम्राज्य में एक भी बंदरगाह नहीं है। समुद्र के किनारे जहाँ नदियाँ गिरती हैं नुकीली चट्टानें हैं। वह का समुद्र इतना खराब है कि छोटी-छोटी नावें भी ले जाने का कोई साहस नहीं करता। इस कारण यहाँ के लोग संसार के अन्य देशों से किसी प्रकार का व्यापार करने से

वंचित हैं। परन्तु बड़ी-बड़ी नदियाँ जहाजों से भरी रहती हैं। यहाँ नदियों में सुंदर मछलियाँ बहुतायत से पाई जाती हैं। किन्तु मिलती बहुत कम हैं क्योंकि योरप के समुद्रों की भाँति यहाँ भी इनका आकार ऐसा होता है कि ये पकड़ने के योग्य नहीं होतीं।

इसलिए स्पष्ट है कि प्रकृति केवल इसी देश में बड़े आकार के जीव-जन्तु और पेड़-पौधे उत्पन्न करने की शक्ति रखती है। इसके कारणों पर विचार करने का काम मैं दार्शनिकों पर ही छोड़ता हूँ। कभी चट्टानों से टकराकर आहत व्हेल मछली इन्हें मिल जाती है, जिसे ये लोग बड़ी प्रसन्नता से खाते हैं। यह मछलियाँ इतनी बड़ी होती हैं कि एक आदमी कठिनता से एक मछली को कंधे पर ले जा सकता है। कभी-कभी तो मुझे बड़ी उत्सुकता होती थी जब उन्हें पिटारों में रखकर लारब्रुलग्रड लाया जाता था। इनमें से एक को मैंने राजा के खानेवाली मेज पर, एक तश्तरी में देखा जो एक अपूर्व वस्तु थी परन्तु राजा इसका शौकीन न था। संभवत: उसके आकार से राजा को अनिच्छा हो गई थी। इससे भी बड़ी-बड़ी मछलियाँ मैंने ग्रीनलैंड में देखी हैं।

सारा देश अच्छी तरह बसा हुआ है। यहाँ इक्यावन शहर, सौ के करीब दीवारों से घिरे नगर और बहुत बड़ी संख्या में गाँव हैं। पाठकों की उत्सुकता दूर करने के लिए लारब्रुलग्रड का विवरण देना ही पर्याप्त होगा। सारा शहर

दो बराबर भागों में बँटा हुआ है। यह बीच से निकली हुई नदी के दोनों किनारों पर बसा है। यहाँ करीब अस्सी हजार मकान हैं और करीब छः लाख मनुष्य। लम्बाई में यह तीन ग्लोमग्लंग (अंग्रेजी में करीब चौवन मील) और चौड़ाई में ढाई ग्लोमग्लंग था। मैंने स्वयं शाही नक्शे में इसे नापा था। यह राजाज्ञानुसार बनवाया गया था। यह जमीन में सौ फुट की दूरी तक फैला पड़ा था। मैंने कई बार नंगे पैर चल कर पैमाने से सही सही उसकी लंबाई चौड़ाई नापी थी।

राजमहल कोई एक स्थायी भवन नहीं है परन्तु सात मील तक के भवनों का एक समूह है। मुख्य कमरे साधारणतया दो सौ चालीस फुट ऊँचे और इसी अनुपात से चौड़े थे। ग्लम डेल क्लिच और मुझे एक गाड़ी मिली थी। इसी गाड़ी पर उसकी देखभाल करनेवाली महिला उसे लेकर शहर देखने या दूकानों पर जाती थी। मैं सदैव इन लोगों के साथ ही बक्स में ले जाया जाता था। और मेरी इच्छा पर वह लड़की मुझे हाथ से पकड़कर बाहर भी कर देती थी। मैं आसानी से, सड़क पर गुजरनेवाले मनुष्यों और मकानों को देख सकता था। मेरा विचार है कि हम लोगों की गाड़ी वेस्ट मिनिस्टर के बराबर आकार की थी परन्तु उतनी ऊँची न थी। एक दिन उस महिला अध्यापिका ने गाड़ीवान को कई दूकानों पर रुकने का आदेश दिया। अवसर देखकर बहुत से भिखारी गाड़ी के चारों ओर इकट्ठा हो गये। इस तरह का भयानक दृश्य योरोप के

किसी भी मनुष्य ने न देखा होगा। वहाँ एक आदमी की गर्दन पर ऊन के पाँच बंडलों से भी बड़ी एक गिल्टी थी। परन्तु सबसे घिनौनी बात तो यह थी कि उनके कपड़ों पर कीड़े रेंग रहे थे।

उस बड़े बक्स के अतिरिक्त रानी ने मेरी यात्रा या मुझे ले जाने के लिए, करीब बारह फुट के चौकोर और दस फुट ऊँचे एक कमरे को उसी कारीगर के द्वारा बनवाया जिसका वर्णन मैं पहले कर चुका हूँ। पहले वाला कमरा ग्लम डेल क्लिच की गोद से कुछ बड़ा था। गाड़ी में भी इसे रखा जा सकता था। यह सफरी कमरा चौकोर था। तीन कोनों के बीच में खिड़की थी। जो लम्बी यात्राओं में दुर्घटनाओं से बचाने के लिए बाहर से लोहे के तारों से जड़ी थी। चौथी ओर जहाँ कोई खिड़की न थी दो मजबूत कुलाबे लगे हुए थे। जब कभी मेरा विचार घोड़े की पीठ पर जाने का होता तो जो आदमी मुझे ले जाता था वह इन कुलाबों या कुंडों में चमड़े की एक पेटी लगा देता था। पेटी को वह अपनी कमर से बाँध लेता था।

यह काम सदैव उसी विश्वासी मनुष्य को सौंपा गया था जिस पर मुझे विश्वास होता था। जब कभी मैं राजा रानी के साथ यात्रा पर या बाग की सैर के लिए अथवा किसी सम्भ्रांत महिला या राज्य-मंत्री से मिलने दरबार जाता था तो ग्लम डेल क्लिच के बीमार होने पर यह काम उसी विश्वासी आदमी को सौंपा जाता था। मुझे शीघ्र ही

मालूम हो गया कि बड़े-बड़े अफसरों से मेरा परिचय हो गया है। सब लोग मुझे आदर की दृष्टि से देखते हैं। मैं स्वीकार करता हूँ कि मेरा यह सम्मान मेरे व्यक्तिगत गुणों से नहीं वरन् महाराज की कृपा के ही कारण प्राप्त हुआ। गाड़ी की यात्राओं से जब मैं ऊब जाता था तो नौकर घोड़े की पीठ पर मेरे बक्स को सामने गद्दी पर रखकर बकसुआ लगा देता था। उस समय मैं तीनों खिड़कियों से देहात का पूरा आनंद उठाता था। इस छोटे कमरे में एक बिस्तर, छत से लटकता हुआ एक झूला, दो कुर्सियाँ तथा एक मेज थी। बड़ी सफाई से यह सब चीजें फर्श पर जड़ी हुई थीं। जिससे गाड़ी या घोड़ों के हिलने से धक्का लगने का भय न था। बड़ी-बड़ी समुद्री यात्राओं में भी वे धक्के मुझे बहुत अधिक परेशान न कर पाये थे।

जब कभी मेरी इच्छा शहर देखने की होती तो मैं सदैव उसी सफरी कमरे में जाता था। ग्लम डेल क्लिच मुझे गोद में लेकर खुली पालकी में जाती थी। यहाँ की रीति के अनुसार पालकी को चार आदमी ले जाते थे। उसके साथ रानी की वरदी के दो नौकर भी चलते थे। जिन लोगों ने मेरे बारे में कभी सुन रखा था वे सब बड़ी उत्सुकता के साथ पालकी के चारों ओर इकट्ठा हो जाते थे। दयालु लड़की पालकी ले जाने वाले आदमियों से रुक जाने को कहती और मुझे अच्छी तरह दिखाने के लिए अपने हाथ में ले लेती थी।

मुख्य मंदिर को देखने की मेरी बहुत इच्छा थी। विशेषतया मैं उसकी मीनार को देखना चाहता था जो साम्राज्य भर में ऊँची थी। एक दिन मेरी नर्स मुझे वहाँ ले गई परन्तु मैं सच कहता हूँ कि मुझे बहुत निराशा हुई क्योंकि जमीन से मंदिर की चोटी तीन हजार फुट से अधिक न थी। उन लोगों की उँचाई और हम योरोप निवासियों की उँचाई के अंतर को ध्यान में रखकर इसे कोई आश्चर्यजनक या कुतूहल की वस्तु नहीं माना जा सकता। मेरे विचार से वह मंदिर उन लोगों के लिए उतना ही ऊँचा था जितना हम लोगों के लिए सेल्सबरी का गिरजा घर। परन्तु मैं एक ऐसे देश की निंदा नहीं करना चाहता जिसके प्रति मुझे आजन्म आभारी रहना चाहिये। यह ठीक है कि यह प्रसिद्ध उँचाई में कम है परन्तु सुन्दरता और मजबूती में अद्वितीय है। इसकी दीवारें करीब सौ फुट मोटी पत्थरों की ईटों से बनी हैं। प्रत्येक ईट चालीस फुट चौकोर पत्थर की है। इस मंदिर के चारों ओर देवताओं और सम्राटों की मूर्तियाँ संगमरमर की बनी हुई हैं। इनमें से कुछ मूर्त्तियाँ मनुष्य के पूरे आकार की और कुछ आधी हैं। एक छोटी उँगली इन्हीं मूर्त्तियों से टूटकर नीचे कूड़े में गिर पड़ी थी। वह दिखाई नहीं पड़ रही थी। जब उसे उठाकर मैंने नापा तो वह चार फुट एक इंच लंबी निकली। ग्लम डेल क्लिच ने उसे एक रुमाल में बाँध लिया और जेब में रखकर घर ले गई। वह इस तरह के सस्ते आभूषणों को ढूँढ़-ढूँढ़कर रखने की शौकीन

थी। यहाँ इस उम्र के बच्चे साधारणतया इस तरह की वस्तुओं को रखने के शौकीन हैं।

राजसी भोजनालय का भवन अत्यंत सुंदर है। इसकी चोटी पर मेहराबें और गुम्बद बने हैं। यह भवन करीब छः सौ फुट ऊँचा है। यहाँ की बड़ी भट्टी सेंटपाल के गुम्बद से दस कदम से अधिक चौड़ी नहीं है। यहाँ से लौटकर मैंने इसी मतलब से सेंटपाल के गुम्बद की चौड़ाई नापी थी। परन्तु यदि मैं रसोई की अँगीठी की जाली, बड़ी-बड़ी केतली, बर्त्तनों, गोश्त भूननेवाले सिकचों और दूसरी वस्तुओं का वर्णन करूँ तो शायद मेरी बातों पर विश्वास नहीं किया जा सकता। कम-से-कम एक कटु आलोचक तो यही कहेगा कि मैं बहुत बढ़ा-चढ़ा कर बता रहा हूँ। अधिकतर यात्रियों पर यही आरोप लगाया जाता है। यदि मैं अपने वर्णन में कुछ कमी करता हूँ तो भय है कि मैं दूसरी ओर बहुत अन्याय करूँगा। यदि इस पुस्तक का अनुवाद बोब्डिगनेग (जो इस राजधानी का नाम है) की भाषा में करके वहाँ भेज दिया जाय तो वहाँ के राजा तथा प्रजा यह शिकायत जरूर करने लगेंगे कि मैंने वहाँ की वस्तुओं का झूठा और बहुत कम, वर्णन करके उनको आघात पहुँचाया है।

महाराज के अस्तबल में छः सौ से अधिक घोड़े कभी-कभी ही रक्खे जाते हैं। साधारणतया यह घोड़े चौवन से लेकर साठ फुट की उँचाई तक के हैं। परन्तु जब कभी वह विदेश जाता है तो राज्य की सेवा के पाँच सौ घोड़े

उसके साथ रहते हैं। मेरे विचार से वह दृश्य मैंने अपने जीवन भर में, अपूर्व ही देखा था। परन्तु उसकी सेना को देखकर तो मुझे और भी आश्चर्य हुआ। किसी दूसरे अवसर पर मैं इसके बारे में भी अपने विचार प्रगट करूँगा !

---

(५)

मैं इस देश में बड़े आनंद से रहा होता यदि छोटे होने के कारण मुझे अनेक मूर्खतापूर्ण और कष्टदायक दुर्घटनाओं का सामना न करना पड़ता। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं:—

ग्लमडेलक्लिच अक्सर मुझे छोटे बक्से में राजसी बाग ले जाती थी। कभी-कभी वह मुझे बाहर निकालकर हाथ में ले लेती थी, या मुझे चलने का अवसर देती थी। मुझे याद है कि रानी को छोड़ने से पूर्व, बौना एक दिन हम लोगों के पीछे पीछे बाग गया। मेरी नर्स ने एक छोटे सेव के पेड़ के नीचे मुझे बिठा दिया। मैं और बौना दोनों नजदीक ही थे। एक बेवकूफी के संकेत द्वारा उसके और पेड़ों के बीच मैंने अपनी चतुराई दिखाने की कोशिश की। वह ईष्यालु बदमाश, मौका देख ही रहा था। जब मैं एक पेड़ के नीचे टहल रहा था तो पेड़ को उसने ठीक मेरे सर के ऊपर हिला दिया। तोप के गोले के आकार के दर्जनों सेव मेरे कानों के पास लुढ़कने लगे। उनमें से एक

मेरी पीठ पर लगा क्योंकि मैं उस समय झुका हुआ था। पीठ के बल मैं जमीन पर गिर पड़ा। इसके अतिरिक्त मुझे दूसरी चोट न लगी। बौने को मेरी इच्छानुसार क्षमा कर दिया गया क्योंकि मैंने ही उसे ऐसा करने के लिए उकसाया था।

दूसरे दिन ग्लम डेल क्लिच ने मुझे घास के एक चिकने मैदान में मनोरंजन के लिए छोड़ दिया। अपनी अध्यापिका के साथ वह कुछ दूरी पर टहलने चली गई। इसी बीच एकाएक ओलों की बौछार होने लगी। बौछार इतनी तेज थी कि मैं जमीन में लोटने लगा। जमीन पर गिरने से मेरे शरीर में इतनी चोटें आईं कि मानों मुझे टेनिस की गेंदों से मारा गया हो। किसी तरह रेंगकर शरण लेने के लिए मैं किनारे के नींबू के पेड़ के नीचे आ गया और नीचा मुँह करके मैं वहीं लेट गया। ओलों की मार से सर से पैर तक मेरे इतनी चोटें आईं कि दस दिन तक मैं बाहर न निकल पाया। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं क्योंकि इस देश की प्रकृति भी अन्य वस्तुओं की भाँति उसी अनुपात से अपने काम करती है। यहाँ का ओला योरप के ओले से करीब अट्ठारह सौ गुना अधिक बड़ा होता है। यह बात मेरे अपने अनुभव की है क्योंकि उत्सुकता को दूर करने के लिए मैंने उसे तौला था।

इसी बाग में एक और दुर्घटना घटी। एक बार मेरी छोटी नर्स ने मुझे एक सुरक्षित स्थान पर छोड़ दिया।

मैं उससे बहुधा ऐसा करने के लिए प्रार्थना करता था जिससे मुझे विचार करने का अवसर मिल जाय। बक्स ले जाने में कठिनाई देखकर उसने उसे वहीं छोड़ दिया था। अपनी अध्यापिका और दरबार की कुछ दूसरी महिलाओं के साथ वह बाग के दूसरी ओर चली गई। उसकी अनुपस्थिति में जब कि वह मेरी आवाज भी न सुन सकती थी, बाग के मुख्य माली का एक छोटा झबरा कुत्ता वहाँ घुस आया। खुशबू पाकर वह सीधे मेरे पास आया। मुँह में दाबकर वह मुझे अपने मालिक के पास ले गया। पूँछ हिलाकर उसने धीरे से मुझे जमीन पर रख दिया।

सौभाग्य से उसे इतनी अच्छी शिक्षा दी गई थी कि दाँतों से दाबकर लाये जाने पर भी मुझे तनिक भी चोट न आयी। यहाँ तक कि मेरे कपड़े भी न फटे। परन्तु माली जो मुझे अच्छी तरह जानता था इस दृश्य को देखकर बहुत डर गया। इसके हृदय में मेरे लिए बहुत दया थी। दोनों हाथों से उसने मुझे धीरे से उठा लिया और पूछा कि मेरा क्या हाल है। परन्तु आश्चर्य और हाँफने के कारण मैं एक शब्द भी न बोल पाया। कुछ मिनटों में ही मैं होश में आ गया। वह मेरी छोटी नर्स के पास मुझे ले गया। इस समय तक वह उस स्थान पर लौट आई थी जहाँ उसने मुझे छोड़ा था। उसकी पुकार पर जब मैं न बोला और न दिखायी ही पड़ा तो वह बहुत भयभीत हो गई। कुत्ते के कारण उसने माली की कई बार भर्त्सना की।

परन्तु इस बात को यहीं दबा दिया गया। दरबार में किसी को भी इसके बारे में कुछ भी न मालूम हो सका। लड़की रानी के क्रोध से बहुत डरती थी। सच तो यह है कि मेरा आदर इसी में था कि यह कहानी बाहर न फैले।

इस दुर्घटना के बाद ग्लमडेलक्लिच ने तय कर लिया था कि भविष्य में अब कभी वह मुझे बाहर अपनी आँखों से ओझल न करेगी। उसके इस निश्चय से मैं बहुत दिनों तक काफी डरता रहा। इसलिए मैं उसकी अनुपस्थिति में हो जानेवाली छोटी-छोटी दुर्घटनाओं को उससे छिपाया करता था। एक बार बाग में मैं बिल्कुल अकेला था। एक चील वहाँ मँडरा रही थी। वह मुझ पर झपटी। मैंने फौरन् तलवार निकाल ली और यदि एक फलवाले पेड़ की रोक वाली मोटी शाखा के नीचे न आ गया होता तो अवश्य ही मुझे वह पंजे में दबाकर उड़ा ले गयी होती। एक बार मैं एक ताजी बाँबी के ऊपर टहल रहा था। अकस्मात मैं उसमें गिर पड़ा। सारे कपड़े बरबाद हो गये। इसी तरह एक बार बेचारे इँगलैंड के विषय में सोचते हुए मैंने अपनी दाहिनी पिंडली फोड़ ली थी।

मैं नहीं कह सकता कि मुझे खुशी या आश्चर्य है जब कि छोटी छोटी चिड़ियाँ मुझसे बिल्कुल नहीं डरतीं। परन्तु कीड़े या खाने की दूसरी चीजों की तलाश करते समय वे मुझसे एक गज की दूरी पर मँडराया करती थीं। वे इतनी निश्चिंतता से उड़तीं कि मानो उनके पास कोई है ही

नहीं। मुझे याद है कि एक बार एक तोता मेरी केक छीन ले गया जो मुझे ग्लमडेलक्लिच ने नाश्ते के लिए दी थी। जब कभी मैं इन चिड़ियों को पकड़ने का प्रयत्न करता तो वे बहादुरी से मेरे ऊपर हमला करने को तैयार हो जातीं। मेरी अंगुलियों को काट ले जाने की कोशिश भी करतीं। कभी भी मुझे इन चिड़ियों की पहुँच तक हाथ बढ़ाने का साहस न होता था। इसके बाद वे चुपचाप पहले की तरह कीड़े या घोंघों की तलाश करने लगतीं। परन्तु एक दिन मैंने एक मोटा डंडा उठाकर गानेवाली चिड़िया के ऊपर पूरी ताकत से फेंक दिया। सौभाग्य से वह नीचे आ गिरी। दोनों हाथों से उसकी गर्दन पकड़कर अपनी जीत की खुशी में मैं उसे लेकर नर्स के पास दौड़ आया। उस चिड़िया के केवल चोट ही लगी थी। होश में आने पर उसने पंखों से मुझ पर बहुत सी चोटें कीं। किन्तु मैं उसे मजबूती से पकड़े हुए था। मैंने कई बार सोचा कि इसे छोड़ दूँ। परन्तु मुझे जल्दी ही इससे छुटकारा मिल गया। हमारे एक नौकर ने उसकी गरदन मरोड़ दी। दूसरे दिन रानी की आज्ञानुसार उसे भोजन में परोसा गया। मेरा विचार है कि वह चिड़िया करीब करीब अँगरेजी हंस के बराबर थी।

कभी-कभी राजकुमारियाँ भी ग्लमडेलक्लिच को आमंत्रित करती थीं। यह इच्छा करती थीं कि वह अपने साथ मुझे भी लाये। जिससे उन्हें मुझे देखने और छूने का

आनंद मिल सके । वे कभी कभी मुझे थपथपाकर हृदय से लगा लेती थीं। इससे मुझे अत्यंत निराशा होती थी, क्योंकि वस्तुतः उनकी खाल से एक अजीब तरह की बदबू आया करती थी। मैंने कभी इस बात का वर्णन उन सुंदर महिलाओं की मानहानि के डर से न किया । फिर भी मैं हर तरह से उनकी इज्जत करता था। परन्तु मेरे विचार से शरीर की छुटाई के अनुपात से मेरी बुद्धि काफी तीव्र थी। वहाँ के प्रसिद्ध मनुष्य अपने प्रेमियों या दूसरे लोगों के साथ इतने असिहष्णु न थे जितने कि हम इंगलैण्ड निवासी होते हैं। इसके अतिरिक्त मुझे मालूम हुआ कि इन लोगों के खाल की खुशबू इत्र से भी अधिक अच्छी थी। इत्र की खुशबू से तो मैं तत्काल बेहोश हो गया था। मैं भूल नहीं सकता कि एक बार जब मैं लिलीपुत में व्यायाम कर चुका तो मेरे एक मित्र ने शिकायत की कि मेरे शरीर से तेज बदबू आ रही है। लेकिन इसमें मेरे ऐसे छोटे आदमी का क्या दोष? मेरे विचार से उसकी सूँघने की शक्ति हम लोगों की ही तरह है। यदि मैं यह न बताऊँ कि मेरी मालकिन रानी और नर्स ग्लमडेलक्लिच इँगलैंड की किसी भी महिला से कम सुन्दर न थीं तो अन्याय हो होगा।

एक दिन मेरी नर्स की अध्यापिका का नवजवान भतीजा आया। उसने उन दोनों से एक अपराधी के प्राणदण्ड को देखने का आग्रह किया। इस अपराधी ने नवजवान भतीजे

के एक खास मित्र को मार डाला था। ग्लमडेलक्लिच को भी उन लोगों के साथ अपनी इच्छा के विरुद्ध जाना पड़ा। मेरी नर्स हृदय से बहुत ही उदार थी। मैं भी इस तरह के दृश्यों से डरता हूँ परन्तु नई चीज देखने की उत्सुकता को मैं भी न रोक पाया। अपराधी को फाँसी की कुरसी पर बिठाल दिया गया। चालीस फुट लम्बी तलवार के एक ही वार से उसका सिर उड़ा दिया गया। उसकी नसों और धमनियों से खून का फौवारा छूटने लगा। वर्सेलीज के महान् जेट ड्यू भी इसकी बराबरी नहीं कर सकते थे। यद्यपि मैं वहाँ से आधे मील दूर था तो भी उसका सर फाँसीघर की फर्श पर इतनी जोर से उछला कि मैं चौंक पड़ा।

कभी-कभी रानी मुझसे समुद्री यात्राओं की बातें भी सुना करती थी। मेरे उदास हो जाने पर वह हमेशा मेरा दिल बहलाने का प्रयत्न करती थी। वह मुझसे पूछती कि जहाज या पतवार चलाना मैं कैसे जान सका हूँ। नाव चलाने से मेरी तन्दुरुस्ती अच्छी नहीं रहेगी। मैंने जवाब दिया कि मैं इन दोनों को अच्छी तरह जानता हूँ। यद्यपि मैं जहाज का डाक्टर था तथापि अक्सर समुद्री डाकुओं से लूट लिये जाने पर साधारण नाविक की तरह काम करना पड़ता था। परन्तु मेरी समझ में यह बात नहीं आ रही थी कि यहाँ इस देश में यह काम कैसे किया जा सकता है जहाँ की छोटी से छोटी नाव भी हमारे अव्वल दर्जे के जहाज

के बराबर थी। इसके अतिरिक्त ऐसी नाव यहाँ की किसी भी नदी में रुक नहीं सकती। महारानी ने पूछा कि यदि मुझे आवश्यकता हो तो उसका बढ़ई एक नाव बना देगा और उसे चलाने के लिए स्थान का भी प्रबंध हो जायेगा। वह बढ़ई एक अच्छा कारीगर था। उसने दस ही दिनों में एक घूमने लायक बढ़िया नाव बना दी। उसमें मस्तूल आदि सभी चीजें लगी थीं। इस नाव में आठ योरोपियन आराम से बैठ सकते थे। नाव तैयार हो जाने पर रानी इतनी प्रसन्न हुई कि उसे गोद में लेकर वह राजा के पास गई।

राजा ने आज्ञा दी कि परीक्षा के लिए नाव को एक जलाशय में छोड़ा जाय। जलाशय में जगह कम होने के कारण मुझे अपनी कला दिखानी थी। परन्तु रानी ने पहले ही एक योजना बना ली थी। उसने बढ़ई को तीन सौ फुट लम्बा पचास फुट चौड़ा और आठ फुट गहरा लकड़ी का एक कठौता बनाने के लिए आज्ञा दे रक्खी थी। कठौते को अच्छी तरह कीलों से जड़ दिया गया था जिससे पानी बाहर न निकल पाये। महल के बाहरी कमरे की दीवार के पास, फर्श पर उसे रख दिया गया। गंदा पानी निकालने के लिए कठौते की पेंदी में एक टोंटी लगाई गयी। दो नौकर इसे आसानी से दो घंटे में भर सकते थे। मैं इस कठौते में बहुधा मनोरंजन के लिए नाव चलाया करता था। मेरे फुरतीलेपन और बुद्धिमत्ता देखकर सब लोगों को बहुत

आनंद आता था। कभी कभी मैं पाल हटा देता था। उस समय मेरा काम केवल नाव को खेना हो रह जाता था। महिलायें पंखों से मुझे हवा देती थीं। जब वे थक जातीं तो 'वस्त्र उठाने वाले लड़के अपनी साँस की हवा से मेरे पाल को आगे बढ़ाते थे। इच्छानुसार नाव को दाहिनी या बायीं ओर मोड़कर मैं अपनी कुशलता दिखाया करता था। ग्लमडेलक्लिच सदैव मेरी नाव सुखाने के लिए अपने कमरे की एक खूँटी पर टाँग दिया करती थी।

एक बार मैं एक दुर्घटना का शिकार हो गया। मैं अपनी जिंदगी से ही हाथ धो बैठा था। वस्त्र उठानेवाले एक लड़के ने मेरी नाव जलाशय में डाल दी। ग्लमडेल-क्लिच की अध्यापिका सावधानी से मुझे उठाकर नाव में रखने लगी परन्तु मैं उसकी उँगलियों से फिसल गया। मैं चालीस फुट की उँचाई से अवश्य ही गिर पड़ा होता यदि सौभाग्य से मुझे उस महिला के कपड़ों में लगी आलपीन ने फँसा न लिया होता। आलपीन का ऊपरी सिरा मेरी कमीज और पैजामे के जारबंद में फँस गया। बड़ी देर तक मैं बीच ही में लटकता रहा। थोड़ी देर में ग्लमडेल-क्लिच मेरी मदद के लिए आ गयी।

दूसरी बार पानी भरनेवाले नौकर की लापरवाही से एक बड़ा मेढक कुंड में आ गया। वह पानी में छिप गया। जब मैं अपनी नाव में बैठ गया तो आराम की जगह देखकर वह भी मेरी नाव पर चढ़ आया। उसके चढ़ आने से नाव

एक तरफ इतनी झुक गई कि उलट जाने के डर से मुझे अपनी सारी ताकत दूसरी ओर लगानी पड़ी। पहली बार कूदने में वह नाव के बीच में आ गया। दूसरी बार कूदने से वह मेरे सर के पास आ गया। कभी कूदकर वह आगे आ जाता और कभी पीछे। मेरा चेहरा उसके गंदे कीचड़ से सन गया। सारे कपड़े खराब हो गये। मैंने ग्लमडेलक्लिच से इच्छा प्रगट की कि मुझे इससे अकेले निपटने दिया जाय। मैंने एक डाँड से उसे खूब मारा। अंत में मजबूर होकर वह नाव से बाहर कूद गया।

सबसे अधिक डर मुझे यहाँ एक बंदर से लगता था। रसोई के एक नौकर ने इसे पाल रक्खा था। ग्लमडेलक्लिच किसी काम से बाहर गई थी। मुझे कमरे में बन्द करके उसने ताला लगा दिया था। मौसम बहुत गरम होने के कारण कमरे की खिड़की खुली थी। बड़े बक्स का दरवाजा और खिड़की भी खुली थी। सुविधाजनक और काफी बड़ा होने के कारण मैं अधिकतर इसी में रहा करता था। मैं अपनी मेज पर बैठा हुआ था कि एकाएक कमरे की खिड़की के पास उछलने-कूदने की आवाज सुनाई पड़ी। मैं बहुत डर गया। परन्तु साहस करके बाहर देखा। वहाँ मैंने इस शरारती जानवर को इधर से उधर कूदते पाया। अंत में वह मेरे बक्स के पास आया। खुशी और उत्सुकता से वह हर दरवाजे और खिड़की से झाँकने लगा।

मैं कमरे के दूरवाले कोने की ओर चला गया।

परन्तु बंदर ने मुझे इतना डरा दिया कि मैं बिस्तर में छिपने की सोचने लगा। आसानी से मैं ऐसा कर सकता था। थोड़ी देर तक वह इधर उधर झाँकते हुए खो खो करके खीसें निकालता रहा। अंत में उसने मुझे ढूँढ़ ही लिया। जिस तरह एक बिल्ली एक चूहे को अपने पंजे में लेकर खेलाती है उसी तरह उसने अपना पंजा दरवाजे के अंदर डाल दिया। यद्यपि मैंने बचने का बहुत प्रयत्न किया तथापि उसने कोट पकड़कर मुझे बाहर खींच ही लिया। देशी रेशम का बना होने के कारण मेरा कोट मोटा और बहुत मजबूत था। संभवतः बंदरिया थी। अगले पैरों पर उसने मुझे बिठाल लिया। ऐसा मालूम होता था कि नर्स की तरह वह मुझे अपना दूध पिलाने जा रही हो। योरोप में मैंने जानवरों को ऐसा करते देखा है। मैंने पहले उससे लड़ने का प्रयत्न किया परन्तु उसने मुझे इतनी जोर से दबाया कि आत्मसमर्पण में ही बुद्धिमानी जान पड़ी। वह बंदरिया मुझे अपना ही बच्चा समझ रही थी। दूसरे पंजे से कभी कभी वह मेरे चेहरे को सहलाती थी।

एकाएक दरवाजे पर आवाज सुनाई पड़ी। उसका ध्यान भंग हो गया। ऐसा मालूम होता था कि कोई दरवाजा खोल रहा है। वह तुरन्त उसी खिड़की पर कूद गयी जिसमें से वह यहाँ आयी थी। तीन पैरों से लँगड़ाती और लड़खड़ाती हुई वह भाग रही थी। चौथे पैर से वह मुझे पकड़े हुए थी। धीरे धीरे पास के मकान की छत पर

वह मुझे लिए हुए चढ़ गई। बाहर आते समय मैंने ग्लमडेल-क्लिच की चिल्लाहट सुनी। वह बेचारी बहुत डर गयी थी। राजमहल में अच्छा खासा हंगामा मच गया। नौकर सीढ़ियाँ लेने दौड़े। मकान के टीले पर बैठे हुए सैकड़ों दरबारियों ने बंदरिया को देखा। मुझे वह अपने बच्चे की तरह पकड़े थी। मुँह से खाने का सामान निकाल कर, वह मेरे मुँह में लगाकर खिलाने का प्रयत्न कर रही थी। मेरे न खाने पर उसने मुझे प्यार से थपथपाया। यह देखकर नीचे के कुछ लोग हँसी न रोक सके। मेरे विचार से इस में उन लोगों का कोई दोष भी न था क्योंकि यह तो निर्विवाद है कि मेरे अतिरिक्त वह दृश्य सभी के लिए काफी मनोरंजक था। बंदरिया को भगाने के लिए पत्थर फेंकना चाहते थे। परन्तु इस पर रोक लगा दी गई। इस से मेरा सर फट जाने का पूरा भय था।

सीढ़ियाँ लगाकर कई नौकर ऊपर चढ़े। बंदरिया ने इन लोगों को देखा। जब उसे यह मालूम हो गया कि अब वह मुझे नहीं ले जा सकती तो मुझे एक खपरैल पर छोड़ कर वह भाग गयी। मैं कुछ देर तक वहीं बैठा रहा। जमीन से पाँच सौ गज की उँचाई पर बैठा मैं किसी भी समय हवा के झोंके से नीचे गिर सकता था। मैं घबड़ाहट के कारण खपरैल से लुढ़कनेवाला ही था कि मेरी नर्स का एक ईमानदार लड़का खपरैल पर चढ़ आया और अपने पैजामे की जेब में रखकर वह मुझे नीचे उतार लाया।

उस बंदरिया ने जबरदस्ती गंदी चीजें मेरे मुँह म ठूँस दी थीं। मेरा दम घुटने लगा परन्तु प्यारी नर्स ने उन गंदी चीजों को सूई की सहायता से बाहर निकाल लिया। कै हो जाने से मुझे बड़ा आराम मिला। बंदरिया के इस खेल से मेरे शरीर में काफी चोटें लग गयी थीं। पन्द्रह दिनों तक मुझे बिस्तर पर पड़े रहना पड़ा। महाराज, महारानी और दरबार के अन्य लोग मेरी कुशल-क्षेम जानने के लिए प्रतिदिन आदमी भेजते थे। महारानी तो स्वयं कई बार मुझे देखने आईं। उस बंदरिया को मार डाला गया। राजा ने आज्ञा दी कि राजमहल के आसपास इस तरह के जानवर न आने पावें।

स्वास्थ्य ठीक हो जाने पर जब मैं राजा को धन्यवाद देने पहुँचा तो उन्होंने मुझसे इस घटना के बारे में मनोरंजक बातें पूछीं। उसने पूछा कि बंदरिया के चंगुल में फँसने पर मेरी क्या दशा थी? उसकी दी हुई खाने की चीजें मुझे कैसी लगीं? उसके खिलाने-पिलाने का तरीका मुझे पसंद आया या नहीं? उसने यह भी पूछा कि छत की ताजी हवा लगने से मुझे भूख लग आई होगी? राजा ने यह भी जानना चाहा कि यदि मेरे देश में ऐसी घटना हो जाती तो क्या होता? मैंने बतलाया कि योरोप में बंदर नहीं पाये जाते। मनोरंजन और उत्सुकता के लिए कुछ बंदर बाहर से लाये जाते हैं। परन्तु वहाँ के बंदर बहुत छोटे होते हैं। ऐसे दर्जनों बंदरों से निपटने के लिए

मैं अकेला काफी हूँ। यदि मैं डर न जाता तो उस विशाल-काय बंदरिया को तलवार का मजा जरूर चखाता। ऐसा कहते समय मेरी आकृति भयंकर हो गयी और हाथ तलवार की मूँठ पर चला गया। यह बात मैंने बड़े जोर से कही। उस समय ऐसा मालूम होता था कि मानों मेरे साहस को चुनौती दी गई हो।

परन्तु मेरे भाषण का प्रभाव केवल इतना ही पड़ा कि वे लोग जोर से हँस पड़े। महाराज के आदर भाव से वे लोग और कुछ न कह सके। अतएव मैंने सोचा कि अन्य लोगों से आदर प्राप्त करने की आशा करना बिल्कुल व्यर्थ है। वापस आने पर मैंने देखा कि दुष्ट और नीच मनुष्य भी अपने को विशेष महत्त्व देता है। जन्म से ही निम्न श्रेणी, साधारण ज्ञान या व्यक्तित्व वाले मनुष्य भी अपनी तुलना साम्राज्य के बड़े से बड़े मनुष्य से करते हैं।

मैं प्रतिदिन दरबार में कोई न कोई हँसानेवाली कहानी सुनाता था। ग्लमडेलक्लिच मुझे बहुत प्यार करती थी। परन्तु वह इतनी चतुर थी कि मेरी भूलों को सुना कर रानी का मनोरंजन किया करती थी। एक बार इस लड़की की तबियत खराब हो गई इसलिए उसकी अध्यापिका हवा खिलाने के लिए उसे शहर से तीस मील दूर ले गई थी। गाड़ी से उतरकर ये एक खेत की मेड़ पर बैठ गई। ग्लमडेलक्लिच ने मेरा सफरी बक्सा भी नीचे उतार लिया। मैं बाहर निकला। रास्ते में कूड़े का छोटा-

सा एक ढेर था। ताकत आजमाने के लिए मैंने उसे फाँदना चाहा। मैंने एक छलाँग ली परन्तु दुर्भाग्य से पूरा ढेर न फाँद सका। बीचोबीच कूड़े में घुटने तक मैं गड़ गया। बड़ी कठिनता से मैं उसमें से निकल सका। एक नौकर ने रुमाल से मुझे साफ किया। कूड़े की गंदगी से मेरा सारा शरीर सन गया। घर लौट न आने तक नर्स ने मुझे बक्स में बन्द रक्खा। महारानी को इस घटना से बहुत आनंद आया। नौकर के बताने पर दरबार में कई दिन तक हँसी-मजाक का वातावरण बना रहा।

---

(६)

मैं सप्ताह में एक या दो बार राजसभा जाया करता था। प्रायः मैंने राजा को नाई के पास बाल बनवाते देखा। वास्तव में वह दृश्य बहुत भयानक था। नाई का उस्तरा साधारण हँसिये से करीब करीब दुगना था। देश की रीति के अनुसार सप्ताह में एक बार महाराज दाढ़ी बनवाते थे। एक बार नाई से मैंने साबुन का झाग माँगा। चालीस या पचास बालों के टुकड़े मैंने इसमें से बीन लिए। फिर ग्लमडेलक्लिच की सबसे छोटी सुई लेकर मैंने लकड़ी के एक टुकड़े में थोड़ी थोड़ी दूर पर कई छेद कर लिए। बालों को चाकू से नुकीला बनाकर और उस लकड़ी के टुकड़े में उन्हें लगाकर मैंने एक अच्छा खासा कंघा बना लिया। फिलहाल कुछ समय तक इससे मेरा काम चल

सकता था। मेरे अपने कंघे के दाँत टूट जाने से वह करीब करीब बेकार हो गया था। इसके अतिरिक्त मैं किसी अच्छे कारीगर को जानता भी न था जो मुझे दूसरा कंघा बना देता।

मनोरंजन की मुझे एक और बात सूझी। मेरे आराम के अनेक घंटे इसी में गुजरने लगे। महारानी की नौकरा-नियों से मैंने कहा कि वे मेरे लिए कंघी करते समय, रानी के टूटे हुए बालों को इकट्ठा करती रहें। कुछ समय में ही मेरे पास काफी बाल इकट्ठा हो गये। बढ़ई मित्र को मैंने दो कुर्सियों के ढाँचे बनाने का आदेश दे दिया। बढ़ई को मेरे छोटे मोटे काम कर देने के लिए पहले से ही आज्ञा मिल चुकी थी। उससे मैंने कुर्सी की गद्दी और पीठ की तरफ सूजे से महीन छेद करने के लिए भी कह दिया। इँगलैंड की बेंतवाली कुर्सियों की भाँति मैंने रानी के मजबूत बालों से उन्हें बिन दिया। इन कुर्सियों के तैयार हो जाने पर मैंने उन्हें महारानी को भेंट के रूप में दे दिया। उसने अपने कमरे में इन कुर्सियों को रख लिया। एक अनोखी वस्तु की भाँति वह सभी को ये कुर्सियाँ दिखलाती थीं। वास्तव में प्रत्येक दर्शक के लिए यह विलक्षण वस्तु थी। रानी ने मुझसे एक कुर्सी पर बैठने के लिए कहा। परन्तु मैंने उसकी इस आज्ञा का विरोध किया और बतलाया कि इस कुर्सी पर बैठने की अपेक्षा मैं हजार बार मर जाना अधिक अच्छा समझता हूँ। इन कुर्सियों में बेत की जगह

उन बालों का प्रयोग किया गया है जो कभी महारानी के सिर की शोभा बढ़ा रहे थे।

महारानी के इन्हीं सुंदर बालों से मैंने पाँच फुट लम्बी एक उत्तम छोटी थैली बनाई। सुनहरे अक्षर से महारानी का नाम भी उस पर लिखा गया था। रानी की इच्छा से मैंने यह थैलो ग्लमडेलक्लिच को दे दिया। वास्तव में यह थैली इस्तेमाल करने की न होकर दिखाने के लिए ही थी। वह इतनी मजबूत न थी कि उसमें भारी सिक्के रक्खे जा सकें। इसलिए वह इस थैली में छोटे छोटे खिलौने ही रखती थी।

राजा को संगीत से प्रेम था। उसके दरबार में प्रायः संगीत गोष्ठियाँ होती रहती थीं। कभी कभी इन गोष्ठियों में मुझे भी ले जाया जाता था। मेरे बक्स को एक मेज पर रख दिया जाता था जिससे मैं भी संगीत का आनन्द ले सकूँ। परन्तु वहाँ इतना शोर होता था कि मेरे लिए गानों की धुन पहचानना असंभव सा हो जाता था। मुझे विश्वास है कि यदि शाही फौज के सभी नगाड़े और तुड़ही बजायी जायँ तो भी संगीत गोष्ठियों की बराबरी नहीं हो सकती। हमारे कान वहाँ की तेज आवाज को सह न सकते थे। ऐसे अवसरों पर मैं अपना बक्स संगीत में भाग लेने वालों के बैठने के स्थान से दूर हटवा लेता था। बक्स की सभी खिड़कियों और दरवाजों को बंद कर,

में ऊपर से पर्दा खींच लेता था। उसके भीतर से मुझे इन लोगों का संगीत बुरा नहीं लगता था।

युवावस्था में मैंने वीणा बजाने का कुछ अभ्यास किया था। ग्लमडेलक्लिच के कमरे में एक वीणा रक्खी थी। सप्ताह में दो बार एक संगीतज्ञ उसे वीणा सिखाने आता था। मैं इसको वीणा ही पुकारूँगा क्योंकि इस बाजे और वीणा में काफी समता थी। इसके अतिरिक्त वीणा की ही तरह इसे बजाया भी जाता था। मैंने सोचा कि महाराज तथा महारानी को एक अँगरेजी धुन सुनाकर, उनका मनोरंजन करूँ। परन्तु यह बात असंभव मालूम हुई। वह वीणा करीब साठ फुट लंबी थी। उसकी खूँटियाँ भी एक एक फुट की थीं। हाथ उठाकर भी मैं पाँच खूँटियों के ऊपर नहीं पहुँच सकता था। इन्हें नीचे करने और साने के लिए मुझे मुटठी का सहारा लेना पड़ता था परन्तु यह काम मेरी ताकत के बाहर था। इसलिए मैंने दो साधारण गोल छड़ियाँ तैयार करवाईं। छड़ी का एक सिरा दूसरे से मोटा था। मोटे सिरे को मैंने चूहे की खाल से ढक दिया जिससे चाभियों को घुमाने से न तो उनके सिरे ही खराब हों और न आवाज में ही कोई अंतर पड़े। उस बाजे के सामने और खूँटियों के नीचे चार फुट लम्बी एक बेंच डाल दी गई। मुझे उस पर खड़ा कर दिया गया। अपनी ताकत भर इधर-उधर बेंच पर दौड़कर छड़ियों से मैंने खूटियों को ठीक किया और अंगरेजी नाच की एक धुन सुनायी।

महाराज तथा महारानी को काफी संतोष हुआ। अपने जीवन में मैंने कभी इस तरह की वीणा नहीं बजायी थी। परन्तु फिर भी मैं उसकी सोलह खूँटियों से अधिक को न छू सका। अन्य संगीतज्ञों की भाँति अँगरेजी 'बास' और ट्रेबेल नाच की मिली-जुली धुन, मैं न बजा सका। मेरे तमाशे में यह एक बड़ी कमी रह गयी थी।

राजा अत्यंत विद्वान् और विचारशील था। प्रायः वह मुझे अपने कमरे में बुलवाता था। मेरे बक्स को एक मेज पर रखवा कर, उसमें से मेरी कुरसी निकलवाता था। कमरे की छत से तीन गज नीचे बैठ जाने का मुझे आदेश दिया गया। इस तरह मैं उसके बराबर पहुँच जाता था। इस भाँति मैंने कई बार राजा से वार्त्तालाप किया। एक बार मैंने पूछा कि वह योरुप और दूसरे देशों से घृणा क्यों करता है? महाराज सरीखे मानसिक गुणों से युक्त और प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति के लिए यह बात शोभा नहीं देती। ऐसे महान् और विशालकाय व्यक्ति के लिए इस प्रकार के क्षुद्र विचार उचित नहीं प्रतीत होते। इसके विपरीत मेरे देश में साधारणतया विशालकाय मनुष्य विद्वान् नहीं होते। चींटी और मक्खी आदि छोटे-छोटे जीव बड़े जानवरों की अपेक्षा अधिक परिश्रमी, कुशल और चतुर माने जाते हैं। राजा ने मुझे इतना छोटा समझा था कि मैं केवल उसके गुप्तचर विभाग में ही नौकरी करने के योग्य था। राजा ने बड़े ध्यान से मेरी बातें सुनी। मेरे बारे में अब उसकी

धारणा पहले से काफी अच्छी हो गयी थी। राजा ने इच्छा प्रगट की, कि मैं उसे इँगलैंड की सरकार के बारे में बतलाऊँ। दूसरे राजाओं की भाँति यह भी अपने देश की रीति-रिवाजों और परम्पराओं का पोषक था। परन्तु अब वह प्रसन्नता से दूसरे देश की अच्छी परम्पराओं और रीति-रिवाजों को अपनाने के लिए तैयार हो गया।*

दयालु पाठक स्वयं सोच सकते हैं कि उस समय डेमोस्थनीज पर सिसरो भाषा सीखने की मेरी अभिलाषा कितनी प्रबल थी, क्योंकि इन्हीं भाषाओं के द्वारा, मैं यहाँ की शैली और भाषा के अनुरूप अपनी प्यारी मातृभूमि का गुणगान कर सकता था।

---

*इस यात्रा का राजनैतिक महत्त्व इसी अध्याय में वर्णित किया गया है। ऐसा मालूम होता है कि राजा से बातचीत करने के लिए ही इस कथा को विस्तारपूर्वक बतलाया गया है। गुलीवर इँगलैंड और वहाँ की संस्थाओं की प्रशंसा यहाँ के लोगों के सम्मुख करता है। इन सब बातों को यहाँ के लोग कोई महत्त्व नहीं देते। राजा के तुलनात्मक प्रश्नों से लज्जापूर्ण सत्य का आभास मिलता है।

जब लेखक इस अध्याय को समाप्त करता है तो अन्त में राजा के द्वारा अपना मत प्रगट करता है कि "अँगरेज लोग घृणित छोटे कीड़े और अपकारी जाति के हैं।" ऐसा मालूम होता है कि लेखक को इतने से ही संतोष हो गया था। उसने समझ लिया कि उसका श्रम व्यर्थ नहीं गया। इस यात्रा को छापने के समय लेखक ने पोप को लिखा था कि "इस पुस्तक के लिखने का मेरा ध्येय मनोरंजन की अपेक्षा संसार को उद्विग्न और पीड़ित करने का है।

राजा से मैंने बतलाया कि मेरे देश में दो प्रायद्वीप हैं। एक ही सम्राट् के अधीन तीन राज्य हैं। इसके अतिरिक्त हम लोगों के उपनिवेश अमेरिका में भी हैं। अपने देश की उपजाऊ मिट्टी, जलवायु तथा तापमान के बारे में राजा को बतलाया। अँगरेजी पार्लियामेंट (संसद) का भी विशद वर्णन किया। पार्लियामेण्ट के प्रसिद्ध व्यंग हाउस आफ पियर्स (सामंतों की सभा तथा पैतृक सम्पत्तिवाले लोगों का प्रतिनिधित्व होने का परिचय दिया। मैंने उसे बतलाया कि इस वर्ग के लोगों की शिक्षा, कला तथा शस्त्र-विद्या आदि में, विशेष ध्यान दिया जाता है। राजा तथा साम्राज्य के सभासद अधिकांशतः इसी वर्ग के होते हैं। यह लोग कानून बनाने में भी भाग लेते हैं और न्याय की सर्वोच्च अदालत के सदस्य भी होते हैं। इनके द्वारा दिये गये निर्णयों की अपील दुबारा नहीं सुनी जाती। सम्राट् और देश की रक्षा के लिए ये लोग सदैव वीरता और स्वामिभक्ति से तैयार रहते हैं। यही वर्ग साम्राज्य का आभूषण और रक्षक है। यह लोग प्रसिद्ध प्राचीन पूर्वजों के अनुयायी हैं। गुणों के कारण ही इस वर्ग के लोगों का आदर और सम्मान किया जाता है। इन गौरवशाली पूर्वजों की संतानों ने कभी भी प्राचीन सिद्धांतों का उल्लंघन नहीं किया।

इस वर्ग के अतिरिक्त कुछ दूसरे पवित्र लोग भी इस मभा के सदस्य होकर सम्मिलित होते हैं। इन पवित्र आत्माओं को बिशप के नाम से पुकारा जाता है। इनका एकमात्र

विचित्र कार्य है, धर्म की देखभाल करना। इसके अतिरिक्त यह पवित्र आत्माएँ धार्मिक शिक्षकों को शिक्षा भी प्रदान करते हैं। राजा तथा उसके बुद्धिमान् मंत्री लोग इन पवित्र आत्माओं की खोज करते हैं। इनका निर्वाचन उन पादरियों में से होता है जो अपनी पवित्रता और विशद ज्ञान के लिए प्रसिद्ध होते हैं। वास्तव में यह लोग पादरियों और जनता के आध्यात्मिक पिता होते हैं।

पार्लियामेंट की दूसरी सभा को हाउस आफ कामन्स कहते हैं। इस सभा के सभी सदस्य सम्भ्रांत व्यक्ति होते हैं। योग्यता, देशप्रेम और सेवा आदि विशेष गुणों के आधार पर जनता इन लोगों का निर्वाचन करती है। समस्त राज्य के बुद्धिमान् लोगों का इसमें प्रतिनिधित्व होता है। इन दोनों सभाओं को मिलाकर योरुप की एक गौरवशाली सभा का निर्माण होता है। सम्राट् को परामर्श से सारा कानून बनाने का काम, इसी सभा को सौंप दिया जाता है।

इसके बाद मैंने न्यायालयों के बारे में भी बतलाते हुए कहा कि इन न्यायालयों में योग्य और विद्वान् न्यायाधीश नियुक्त किये जाते हैं। ये लोग, मनुष्यों के अधिकार, सम्पत्ति के झगड़े, अपराधियों को दण्ड और निर्दोषों की रक्षा करने का काम करते हैं। राजा से मैंने खजाने के सुप्रबंध, जल तथा स्थल सेनाओं की वीरता और विजयों के बारे में भी बतलाया। गिनकर मैंने करोड़ों लोगों की जनसंख्या का परिचय भी दिया। विभिन्न धार्मिक राजनैतिक दलों, खेलों

और मनोरंजन के साधनों की चर्चा करना भी मैं न भूला। इसके अलावा मैंने कोई भी ऐसी बात राजा को बताने से न छोड़ी जिससे मेरी समझ में मेरे देश का आदर हो सकता था। मैंने इंगलैण्ड की गत सौ वर्षों की घटनाओं और दूसरी बातों को भी सारांश में बताकर अपनी बात समाप्त की।

यह वार्तालाप पाँच बैठकों में खत्म हुआ। हर एक बैठक कई कई घंटे तक चलती थी। राजा ने बहुत ध्यान से मेरी सब बातें सुनीं। कभी-कभी वह मेरी कही हुई बातों को सारांश में लिख भी लेता था। इसके अलावा जो प्रश्न वह मुझसे पूछना चाहता था उन्हें भी लिखता जाता था।

जब मेरी यह सब लंबी बातें खत्म हो गईं तो छठी बैठक में सम्राट् ने अपने नोट्स देखकर मुझसे कई प्रश्न पूछे और अनेक शंकाएँ तथा प्रतिवाद प्रगट किये। उसने पूछा कि हमारे यहाँ के कुलीन नवयुवकों के मस्तिष्क तथा शरीर के विकास के लिए किस प्रकार की शिक्षा प्रदान की जाती है? शिक्षा-काल में इन लोगों को किस प्रकार के कार्य बतलाये जाते हैं? कुलीन वर्ग के सदस्यों की मृत्यु के पश्चात् उसके रिक्त स्थान की पूर्ति किस प्रकार की जाती है? नये लार्ड्स (सदस्य) बनने के लिए क्या-क्या योग्यताएँ रक्खी गई हैं? क्या कभी राजकुमार बनने के लिए, प्रधान मंत्री या दरबारी महिला को रुपया दे देने से, जनमत के विरुद्ध, दल को शक्तिशाली बनाने के हेतु इस

राज्य-सभा के सदस्य चुन लिये जाते हैं? अपने देश के लिए कानून बनाने में इन सामंतों का क्या हाथ रहता है? इन लोगों को अपने साथियों की सम्पत्ति के झगड़ों को अंतिम रूप से निपटाने के लिए क्या करना पड़ता है? क्या ये लोग सदैव पक्षपात, आवश्यकता और लालच से मुक्त रहते हैं या किसी प्रकार की बेईमानी इन लोगों में नहीं पाई जाती? या जिन पवित्र सामंतों के बारे में मैंने राजा को बतलाया वे सदैव अपने पद पर, धार्मिक योग्यता और पवित्र जीवन के कारण ही नियुक्त किये जाते हैं? क्या ये सदस्य चुन लिये जाने के बाद अपनी पुरानी स्थिति और समय को भूल जाते हैं और भ्रष्ट पादरियों या साधारण पुजारियों या उनके मालिक किसी सामंत के मत का प्रतिपादन विधान-सभा में नहीं करते हैं? इसके बाद राजा ने मुझसे इच्छा प्रगट की, कि मैं बतलाऊँ कि लोक-सभा के सदस्यों को चुनने में किन-किन बातों का ध्यान रक्खा जाता है। क्या देहाती जनता, किसी अनजाने मालदार आदमी को, अपने ज़मींदार या पड़ोस के भले आदमी की अपेक्षा नहीं चुन लेती है?

इसका क्या कारण है कि लोग इस सभा के सदस्य बनाये जाने के लिए जोर लगाते हैं। मेरे मत से तो इसमें बहुत परेशानी और खर्च होता है। तथा कुटुम्बों का सर्वनाश हो जाता है क्योंकि इसमें कोई तनख्वाह या पेन्शन भी मिलती है! सम्राट् को इसमें शंका है कि इस सभा

के सदस्य सदैव जनता के शुभचिंतक ही बने रहते हैं क्योंकि इन लोगों के कार्य के लिए विशेष गुणों और जनता के सम्पर्क की आवश्यकता रहती है। राजा ने यह भी जानने की इच्छा प्रगट की, कि क्या इस प्रकार के द्वेषी लोग, किसी कमजोर और अत्याचारी राजा के अनुसार भ्रष्ट मंत्रिमंडल से मिलकर जनता के हितों पर कुठाराघात नहीं करते हैं? उसने अपने प्रश्न काफी बढ़ा दिये और ऊपर लिखी प्रत्येक बात पर विभिन्न-विभिन्न अनगिनत सवाल पूछे और शंकाएँ प्रगट कीं परन्तु मैं उन सब बातों को फिर दोहराना उचित और सुविधाजनक नहीं समझता।

न्यायालयों का जो वर्णन, मैंने सम्राट् को दिया उससे उन्हें संतोष हुआ। इन सब बातों को मैंने बहुत अच्छी तरह बताया था क्योंकि चांसरी के एक लम्बे मुकदमे ने तो मुझे तबाह ही कर दिया था। जिसमें मय खर्चे के मेरे विरुद्ध डिगरी हो गयी थी। उसने पूछा कि सत्य और असत्य के निर्णय में कितना समय लगता है और कितना खर्च बैठता है। क्या वकील और वक्ता लोगों को स्वतंत्रता है कि वे खुले तौर पर बेईमान, शोषित और पीड़ित लोगों का पक्ष ले सकें। क्या दल, धर्म और राजनीति में न्याय का कोई महत्त्व है? क्या उन वकीलों और वक्ताओं को न्यायशास्त्र के सिद्धांत की शिक्षा दी जाती है? या केवल प्रांत राष्ट्र या दूसरे नगरों के कानून ही बतलाये जाते हैं। क्या कभी वकील या जज उन कानूनों को लिख भी लेते

हैं जिन्हें वे कानून की व्याख्या और टीका करते समय प्रयोग में लाते हैं। क्या कभी ये लोग एक ही वस्तु पक्ष और विपक्ष में विरोधी मतों को प्रगट करने के लिए प्राचीन प्रमाण प्रस्तुत करते हैं? क्या साधारणतया ये लोग अमीर या गरीब हैं? अपने मत को प्रगट करने या वकालत करने के लिए क्या इन्हें कुछ पैसा मिलता है और विशेष रूप से क्या कभी इन लोगों को लोकसभा में सम्मिलित कर लिया जाता है?

इसके बाद राजा खजाने के प्रबंध के ऊपर आया और उसने कहा कि उसकी समझ से मेरी याद करने की शक्ति नष्ट हो गई है क्योंकि मैंने गिनती करके पाँच या छः करोड़ वार्षिक कर बतलाया और जब मैं उसे लाभ के बारे में बतलाने लगा तो उसने समझा कि मैं दुगने से भी अधिक धन बतला रहा हूँ। जो नोट्स उसने ले रक्खे थे वे मुख्यतः इसी के बारे में थे। उसे आशा थी कि इस बात की जानकारी हो जाने से उसे बड़ा लाभ होगा। और उसे कभी धोखा नहीं हो सकता। परन्तु मैंने जो कुछ भी उससे बतलाया था यदि वह सच भी होता तो भी वह नहीं समझ पा रहा था कि राष्ट्र का शासन एक व्यक्तिगत कुटुम्ब की भाँति कैसे चल सकता है? उसने मुझसे पूछा कि हम लोगों को कर्जा कौन देता है और उसे अदा करने के लिए कहाँ से धन मिलता है? हम लोगों के खर्चीले और बड़े युद्ध की बातों को सुनकर उसे बहुत आश्चर्य

हुआ और उसने समझा कि हम लोग वास्तव में बहुत लड़ाकू हैं या हमारे पड़ोसी बहुत बुरे हैं अथवा हमारे सेनापति राजाओं से भी अधिक धनवान् होने चाहिए। उसने यह भी पूछा कि हमारे देश में क्या व्यापार होता है और व्यापार अथवा संधि या अपने समुद्री किनारों की रक्षा का क्या सम्बन्ध है? इन सब बातों के अतिरिक्त उसे यह जानकर बहुत आश्चर्य हुआ कि हम लोग शान्ति के समय स्वतंत्र लोगों के बीच भी अपनी फौजें रखते हैं। उसने कहा कि यदि हम लोग अपनी राय से ही अपने प्रतिनिधियों द्वारा शासित होते तो मैं सोच भी नहीं सकता था कि हम लोगों को किससे डर है और किसके विरुद्ध हमें लड़ाई लड़ना है? और इस बारे में वह मेरी राय विशेष रूप से जानना चाहता था कि क्या एक आदमी अपने घर बच्चे तथा कुटुम्ब की रक्षा स्वयं नहीं कर सकता? आधा दर्जन गुंडों को थोड़ी मजदूरी पर सड़क से भर्ती कर लिया जाता है। ... इन लोगों को यहाँ के निवासियों के गले काटने के लिए सैकड़ों गुना अधिक धन प्राप्त होता है।

मेरे विचित्र गणित पर वह हँसा क्योंकि मैंने अपने देशवासियों की गणना धर्म और राजनीति के दलों के अनुसार की थी। उसने कहा कि उसकी समझ में यह बात नहीं आ रही है कि जो जनता के मतों के पक्षपाती हैं उन्हें अपना मत बदलने के लिए क्यों बाध्य किया जाता है या

उसे छुपाने के लिए क्यों कहा जाता है। प्रत्येक सरकार में पहली चीज के लिए कहना अत्याचार माना जाता था और इसलिए दूसरे को लागू न करना कमजोरी है। क्योंकि एक आदमी को अपनी जेब में जहर रखने की अनुमति दी जा सकती है परन्तु उसे बेचने की अनुमति नहीं दी जा सकती।

मैंने जनता और सामंत लोगों के मनोरंजन का वर्णन करते समय जुए के बारे में भी बतलाया था। उसने यह जानने की इच्छा प्रगट की कि साधारणतया किस उमर में लोग इस खेल से अपना मनोरंजन करना प्रारम्भ करते थे। उन लोगों का कितना समय इसमें लगता था। क्या कभी वह ऐसे भी खेल खेलते थे कि जिससे उनकी सम्पत्ति पर प्रभाव पड़े। क्या तुच्छ और दुष्ट प्रकृति के लोग इस खेल में कुशलता प्राप्त करके अधिक धन पैदा नहीं कर लेते? क्या वे कभी सामंत लोगों को अपने आश्रित कर उन्हें बुरी सोहबत में रहने के अभ्यासी बना लेते हैं? उनके अनुसार इनकी दिमागी उन्नति रुक जाती है और धन नष्ट हो जाने से मजबूरन ये लोग भी जुए की घृणित चालें और कुलशता का प्रयोग दूसरे लोगों पर करने लगते हैं।

जब मैंने उससे पिछली शताब्दी की ऐतिहासिक घटनाओं का विवरण दिया तो उसे अत्यंत आश्चर्य हुआ और उसने विरोध करते हुए कहा कि यह तो केवल षड्यंत्रों, विद्रोहों, कत्लों और देश से निकाले जानेवालों की कहानियों का समूह है। यह सब लालच, विरोध, छल, पाखण्ड, विश्वास-

घात, कठोरता, क्रोध, पागलपन, घृणा, ईर्ष्या, द्वेष, वासना, डाह और अभिलाषा या आकांक्षा के बुरे से बुरे परिणाम हैं ।

महाराज ने एक दूसरी बैठक में मेरी अब तक की बातचीत का सिंहावलोकन करने का कष्ट किया था। अपने प्रश्नों और मेरे उत्तरों की तुलना भी की थी। इसके बाद उसने मुझे हाथों में उठाकर धीरे से दबाकर ये शब्द कहे जिनको मैं कभी भूल नहीं सकता और न उसके कहने के ढंग को ही भूल सकता हूँ—"ए मेरे छोटे मित्र, ग्रिल-ड्रिग, तुमने अपने देश का गुणगान अत्यंत प्रशंसनीय शब्दों में किया है। तुमने यह स्पष्ट रूप से सिद्ध कर दिया है कि अज्ञानता, सुस्ती और बुराइयाँ एक विधान-सभा के लिए आवश्यक और उचित योग्यताएँ हैं। उन लोगों के द्वारा कानून की व्याख्या की जाती है और वे लोग ही उन्हें लागू कराते हैं जिनका हित कानूनों को उलटने अथवा गलत व्याख्या करने या वास्तविक अर्थ को छिपा देने में रहता है। मैं तुममें उसी संस्था की वह बातें देखता हूँ जो उस समय ही सहन करने के योग्य थीं परन्तु अब ये समाप्तप्राय और भ्रष्टाचार से मलिन और दूषित हैं। जो कुछ भी तुमने मुझसे बतलाया उससे यह नहीं मालूम होता कि तुम्हारे समाज का एक आदमी किस तरह सम्पूर्णता को प्राप्त करके विशिष्ट स्थान प्राप्त कर सकता है। यह अवश्य कहा जा सकता है कि तुम्हारे यहाँ लोग बहुत कुछ अपने

गुणों के कारण ही आदर प्राप्त करते हैं। पादरियों तथा धर्माधिकारियों को उनकी दया और ज्ञान के कारण सम्मान प्राप्त है। सिपाही अपने आचरण और वीरता के लिए, न्यायाधीश अपनी बुद्धिमत्ता और विधान-सभा के सदस्यों को अपने देशप्रेम तथा सलाहकारों को अपनी तीव्र बुद्धि के कारण ही विशेष सम्मान प्राप्त है।

"जहाँ तक तुम्हारी बात है राजा कहता गया" तुमने अपने जीवन का अधिकांश समय यात्राओं में व्यतीत किया है। इसलिए मुझे पूर्ण आशा है कि तुम्हारे देश के तमाम अवगुण तुमसे छूट गये। परन्तु तुम्हारे व्यक्तिगत संपर्क में आने से तथा तुम्हारे उत्तरों से मैंने बड़ी मुश्किल से इस बात का पता लगाया है कि तुम्हारे यहाँ के अधिकांश निवासी अत्यंत घृणित जाति के निकृष्ट छोटे कीड़े-मकोड़े हैं। संभवतः सृष्टि में इस प्रकार के घृणित कीड़े कभी पृथ्वी की किसी सतह पर उत्पन्न नहीं हुए।

(७)

सत्य का पुजारी होने के कारण ही मैं अपनी इस कथा को छिपाने में असमर्थ रहा। मेरे क्रोध का आभास ढूंढ़ पाना व्यर्थ ही सिद्ध हुआ क्योंकि वह सदैव उपहास में बदल जाया करता था। किन्तु जब मेरी महान् और प्यारी जन्मभूमि के प्रति इस प्रकार का अनुचित और कष्टदायक व्यवहार होता था तो मुझे बाध्य होकर सन्तोष करना ही

पड़ता था। मुझे उतना ही हार्दिक दुःख है जितना कि [illegible] अवसर आने पर प्रत्येक पाठक को होगा। परन्तु राजा इतना इच्छुक और प्रत्येक नई बातें जाननेवाला था कि जो भी संतोष मैं उसे देने के योग्य था उससे इनकार कर देने से न तो मैं धन्यवाद का पात्र ही बन पाता और न मुझे सभ्य ही कहा जाता। परन्तु इतना तो कहा ही जा सकता है कि मैंने अपनी ओर से राजा के कई प्रश्नों को बड़ी चतुराई के साथ टाल दिया और उसके हर सवाल का जवाब अपने हित के अनुसार ही सच्चाई की परिधि के अन्दर ही दे दिया। क्योंकि मैं सदैव डिओनी सियस हेलीकार्नेसेनीसस की भाँति सदैव अपने देश का शुभ-चिंतक और पक्षपाती रहा। एक इतिहासकार के लिए जितनी निष्पक्षता और न्याय वांक्षित है उसका प्रयोग मैंने किया। मैंने, अपनी राजनैतिक मातृभूमि माँ के दोषों और अवगुणों को छिपाया और उसकी विशेषताओं तथा सुन्दरताओं का बढ़ा-चढ़ाकर पक्षपातपूर्ण वर्णन किया। राजा के साथ इस वार्तालाप का मेरा मुख्य ध्येय यही था किन्तु दुर्भाग्यवश मैं इसमें असफल रहा।

परन्तु एक राजा से जो समस्त संसार से पूरी तरह पृथक् है कुछ रियायत मिलनी ही चाहिए। ऐसा व्यक्ति अवश्य ही दूसरे देशों के अधिकांश रीति-रिवाजों से पूर्ण-रूपेण अनभिज्ञ होता है। इस कमी के कारण अवश्य उसमें कुछ पक्षपात हो जाता है और उसके विचारों में संकीर्णता

आ जाती है। किन्तु हम योरुप के उदार निवासी इन बातों में सर्वथा मुक्त हैं। वास्तव में यह उचित न होगा कि इतने दूर देश के राजा के गुणों और अवगुणों के मापदण्ड से समस्त मनुष्य जाति के स्तर को नापा जाय।

अभी जो कुछ मैंने कहा है उसके समर्थन तथा उनकी संकुचित शिक्षा के दयनीय परिणामों को दिखाने के लिए मैं कुछ पंक्तियाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ। जो कठिनता से विश्वास के योग्य समझी जायेगी। राजा का और अधिक अनुग्रह प्राप्त करने की आशा से मैंने उससे तीन-चार सौ वर्ष पूर्व के एक आविष्कार का वर्णन किया। मैंने उससे बतलाया कि एक प्रकार का पाउडर होता है जिसके ढेर पर्वत के समान ही क्यों न हों, क्षण भर में ही आसमान में उड़ जाता है और बिजली की गरज से भी अधिक घनघोर आवाज होती है। इस पाउडर को यदि लोहे या पीतल के खोखले गोले में उसके आकार के अनुसार से भर दिया जाय तो वह लोहे या धातु का गेंद हवा में इतनी जोर से उड़ेगा कि कोई भी शक्ति उसकी गति को रोकने में समर्थ न होगी। इस प्रकार का बहुत बड़ा गेंद छोड़ने पर वह केवल सम्पूर्ण फौज को समाप्त करने में ही नहीं वरन् बड़ी बड़ी शक्तिशाली दीवारों को भी क्षण मात्र में धराशायी कर देने में समर्थ होगा।

वह गोला हजारों आदमियों से भरे हुए जहाजों को समुद्र के तल में डुबो देगा। या जो जहाज पंक्ति में जा

रहे होंगे तो उनके मस्तूलों को नष्ट-भ्रष्ट करके सैकड़ों लोगों को बीच से अलग कर देगा और अपने चारों ओर सर्वनाश कर देगा। प्रायः हम लोग इस पाउडर को लोहे के एक बड़े खोखले में भरकर एक इंजिन की सहायता से उस नगर पर छोड़ते हैं जिस पर हम लोग घेरा डाले होते हैं। वह पटरियों को उड़ा देता है। मकानों के टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं। शीशे के टुकड़े चारों ओर छिटक जाते हैं। जो लोग निकट आने का साहस करते हैं उनके मस्तिष्क के टुकड़े-टुकड़े कर देता है। मैंने उससे बतलाया कि मैं उस पाउडर की चीजों को जानता हूँ। वह बहुत सस्ती और साधारण है। उन सबको मिलाने का तरीका भी जानता हूँ और कारीगरों को उनके बनाने का आदेश दे सकता हूँ जिससे कि लोहे के गोले बनाये जा सकें। यहाँ की हर एक वस्तु के बड़े आकार के अनुरूप ही एक बहुत बड़ा यंत्र बनाया जायगा जो सौ फुट से अधिक लम्बा न होगा। जिसमें पाउडर के बने हुए बीस या तीस गोले उचित परिमाण के रख दिये जायेंगे। इस यंत्र के द्वारा आप अपने साम्राज्य के शक्तिशाली नगर की दीवारों को घंटों ही में धराशायी कर सकते हैं। समस्त राजधानी को यदि वह आपकी आज्ञा का पालन नहीं करती है तो कुछ ही क्षणों में नष्ट-भ्रष्ट किया जा सकता है। यह प्रस्ताव मैंने महाराज से अत्यंत नम्रता के साथ, उसके द्वारा दी गई सुरक्षा और अनुग्रहों से उऋण होने के लिए ही रक्खा था।

जब मैंने राजा से भयानक इंजिनों का वर्णन और गोला बनाने का प्रस्ताव रक्खा तो वह भय से आश्चर्यचकित हो गया। उसे अचंभा हुआ कि मेरे जैसा निर्बल और नीच कीड़ा (यही उसके शब्द थे) किस तरह इस प्रकार के अमानुषिक विचार रख सकता है। वह इस प्रकार सरलता से बोला कि मानों मेरे द्वारा बतलाई हुई इन मशीनों से सर्वनाश और खून खराबी का कोई भी प्रभाव उस पर न पड़ा। इसके बाद उसने कहा कि इसका प्रथम आविष्कारक अवश्य ही एक कुटिल, कुशल कारीगर और मनुष्य जाति का भीषण शत्रु रहा होगा। अपने बारे में उसने कहा कि वह इसका विरोध करता है। यद्यपि कला और प्रकृति के क्षेत्र में नवीन आविष्कारों को देखकर उसे प्रसन्नता हुई है परन्तु इस रहस्य में गुप्त रूप से भाग लेने की अपेक्षा अपने आधे साम्राज्य को छोड़ देना वह अधिक पसन्द करता है। और उसने मुझे आज्ञा दी कि यदि मुझे प्राणों का मोह हो तो मैं दुबारा उससे ऐसी बातों की चर्चा भी न करूँ।

संकीर्ण विचारों और सिद्धांतों का विचित्र प्रभाव एक राजा जो अपने साम्राज्य की अधिकांश जनता का आदर-प्रेम-सत्कार प्राप्त किये हो, जिसके अन्दर बुद्धि और अथाह ज्ञान हो तथा जो प्रशंसनीय गुणों से विभूषित हो, जो अपनी प्रजा के द्वारा पूजा जाता हो ऐसे अवसर को अपने हाथ से जाने न देगा क्योंकि इससे वह अपनी समस्त प्रजा के जीवन, स्वतंत्रता और सम्पत्ति का पूर्ण रूप से

स्वामी बन सकता है? मैं ऐसे उत्तम राजा के गुणों पर पर्दा नहीं डाल रहा हूँ। परन्तु मैं उन लोगों के इस दोष को मानता हूँ कि उन लोगों ने अपने को अज्ञान से काफी ऊपर उठा लिया है और राजनीति के महत्त्व को एक विज्ञान की भाँति कम नहीं किया है। जैसा कि योरुप में अत्यंत चतुराई के साथ किया गया है मुझे अच्छी तरह याद है कि अपनी बातचीत के सम्बन्ध में जब मैंने उससे यह बतलाया कि हम लोगों के राज्य करने की कला पर हजारों पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं (मेरे विचार के बिल्कुल विपरीत) तो इस बात से उसने हम लोगों के ज्ञान को तुच्छ मान लिया। उसके विचार से किसी राजा या मंत्री को सदैव रहस्य, षड्यंत्र और तड़क भड़क से घृणा और द्वेष रखना चाहिए। वह यह नहीं बता सका कि जब राज्य का कोई शत्रु या दूसरा प्रतिद्वंद्वी ही नहीं तो सरकार के रहस्यों का क्या प्रश्न हो सकता है। इसके अनुसार शासन करने की कला को साधारण ज्ञान और तर्क से अत्यंत सीमित कर देना है। इसके विचार से राजा को केवल न्याय, दया, फौजदारी तथा दीवानी के मुकदमों को जल्दी तय करना और दूसरे साधारण कार्य करना चाहिए। उसने अपना मत बतलाया कि जो आदमी एक खेत में पहले से दुगना अन्न और चारा उत्पन्न कर सकता है समाज में उसी का आदर और सम्मान होना चाहिए। ऐसा एक व्यक्ति अपने देश की सेवा, समस्त राजनीतिज्ञों की सम्मिलित जाति से कहीं अधिक कर सकता है।

यहाँ के लोगों का ज्ञान और योग्यता की सीमा केवल नैतिकता, इतिहास, कविता और गणित तक ही सीमित है। लोगों को इन्हीं विषयों में निपुणता प्राप्त करनी चाहिए। परन्तु सबसे अंतिम और आवश्यक विषय जो जीवन में अत्यंत लाभदायक सिद्ध हो सकता है वह है खेती तथा यंत्र-सम्बन्धी कलाओं में सुधार और प्रगति। हम लोगों में इस प्रकार की योजनाओं को कोई आदर और महत्त्व नहीं दिया जा सकता किन्तु जहाँ तक उनके विचारों, सत्ता, अस्तित्व, आदर्श और अत्युत्तम बातों का प्रश्न है मैं उन लोगों के दिमाग से कुछ भी न हटा सका।

उस देश के किसी भी कानून को वहाँ की वर्णमाला के अक्षरों से अधिक बढ़ना नहीं चाहिए। यहाँ की वर्णमाला में केवल बाईस शब्द हैं। परन्तु शायद ही उनमें से कोई इस वर्णमाला के अक्षरों से अधिक बढ़ता हो। यहाँ के कानूनों को अत्यंत साफ और साधारण रूप से प्रगट किया जाता है जिससे यहाँ के चतुर और विवेकी लोग भी इन कानूनों की एक से अधिक व्याख्या नहीं कर पाते हैं। किसी भी कानून की आलोचना करना यहाँ घोर अपराध है। जहाँ तक अपराधियों के विरुद्ध दीवानी के मुकदमों के निर्णयों या कार्यवाहियों का प्रश्न है इन लोगों के यहाँ पहिले के न्याय इतने थोड़े हैं कि उनकी योग्यता पर ये लोग कभी भी गर्व नहीं कर सकते। यहाँ के लोग चीनी लोगों की भाँति छापने की कला को भी जानते हैं। इन लोगों

के पुस्तकालय बड़े नहीं हैं सबसे बड़ा पुस्तकालय राजा का है। इसमें एक हजार से अधिक पुस्तकें नहीं हैं। यह बारह सौ फुट लम्बी एक गैलरी में रक्खी हुई हैं। मुझे स्वतंत्रता थी कि इच्छानुसार मैं इसमें से कोई भी पुस्तक ले सकूं। रानी के बढ़ई ने ग्लमडेलक्लिच के एक कमरे में लकड़ी की एक मशीन सी बनाई थी जो पच्चीस फुट ऊँची एक सीढ़ी की भाँति थी। उस सीढ़ी में पाँच पाँच फुट की दूरी पर डंडे लगे थे। वास्तव में यह एक, चलती-फिरती सीढ़ियों का एक जोड़ा था जिसका निचला हिस्सा कमरे की दीवाल से दस फुट की दूरी पर रक्खा था। जिस किताब को मैं पढ़ना चाहता था वह दीवार के सहारे झुका कर रख दी जाती थी। मैं सीढ़ी के पहले वाले डंडे पर चढ़ता था और किताब की ओर अपना मुँह करके पन्ने के सिरे पर निगाह डालता और पंक्ति की लम्बाई के अनुसार आठ या दस कदम दाहिने या बायें चलता था। जब मैं अपनी आँखों के नीचे दूसरी लाइन पा जाता था तब धीरे-धीरे नीचे उतरकर पन्ने की आखिरी लाइन पर आ जाता था। इसके बाद मैं दुबारा सीढ़ी पर चढ़ता था और उसी तरह से पन्ने को पढ़ता था और पन्ने को पलटता था। मैं आसानी से दोनों हाथों के द्वारा पन्ने को उलट लेता था, क्योंकि एक पन्ना एक साधारण चिपकानेवाले पोस्टर की तरह कड़ा और मोटा था। बड़ी से बड़ी किताब में भी कोई पन्ना अट्ठारह या बीस फुट से अधिक लम्बा न था।

इन लोगों की शैली स्पष्ट, पुरुषवत् चिकनी है परन्तु

उसमें प्रवाह नहीं है क्योंकि ये लोग बेकार के शब्दों और विभिन्न प्रकार के मुहाविरों और भावों से भाषा को बोझिल नहीं करते हैं। मैंने इन लोगों की कई पुस्तकों, मुख्यतः इतिहास और नीति-शास्त्र का अध्ययन किया है। नीति-शास्त्र-सम्बन्धी एक छोटी पुस्तक ने मेरा ध्यान अधिक आकर्षित किया था जो कि ग्लमडेलक्लिच के सोनेवाले कमरे में हमेशा रक्खी रहती थी। यह पुस्तक उसकी शिक्षिका की थी जो एक गंभीर और वृद्ध भली महिला थी। इसको नीति और भक्ति से बड़ा प्रेम था। इस पुस्तक में आदमियों की कमजोरियों का वर्णन है। औरतों और गुंडे लोगों को छोड़कर बहुत कम लोगों को यह पुस्तक अच्छी लगती है। मुझे यह देखने की बड़ी उत्सुकता थी कि इस देश के लेखक इस प्रकार के विषय पर क्या विचार रखते हैं। इस लेखक ने योरपीय नीति शास्त्रज्ञों की भाँति साधारणतया सभी विषयों पर अपने विचार प्रगट किये थे और यह दिखलाया था कि स्वयं मनुष्य का स्वभाव पहले ईर्ष्यालु और कद छोटा था। वह बेचारा निस्सहाय प्राणी था!! वायुवेग की भयंकरता तथा जंगली जानवरों के क्रोध से अपनी रक्षा करने में वह असमर्थ एवं अयोग्य था। किसी जीवधारी से शक्ति में कभी वह आगे था तो दूसरे से उसकी गति तेज थी। इसी प्रकार तीसरे से दृष्टि और चौथे से कला-कौशल में अगुणी था। लेखक ने यह भी बतलाया था कि अब संसार में मनुष्य जाति पतित होने लगी है। वह प्राचीन

काल की तुलना में अब केवल छोटे छोटे जीवधारियों को ही जन्म दे सकते हैं।

उसके अनुसार यह सोचना ठीक ही है कि प्राचीन काल के प्रारम्भिक समय में मनुष्य जाति बहुत लम्बी होती थी। वस्तुतः कहना तो यह चाहिए कि मनुष्य राक्षस के आकार के होते थे। परम्परा और इतिहास से भी ऐसा सिद्ध हो चुका है। इस देश के कई स्थानों की खोदाई में जो बड़ी बड़ी हड्डियाँ और खोपड़ियाँ मिली हैं उनसे यह सिद्ध हो चुका है कि आजकल की साधारण पतित तथा निकृष्ट मानव जाति से बहुत अधिक श्रेष्ठ और उन्नत थी। उसने इस बात का भी विवेचन किया कि प्राकृतिक नियमों की आवश्यकता के अनुसार प्रारम्भिक काल में हम लोग बहुत ही रोबीले और बड़े आकार के बनाये गये थे। और इस योग्य न थे कि छोटी दुर्घटनाओं जैसे खपरैल गिरने से हम लोग नष्ट हो जायँ या किसी लड़के के हाथ के द्वारा फेंके गये पत्थर या छोटे से तालाब में डूबकर मर जायँ। ऐसी बातों की चर्चा करते हुए लेखक ने बहुत सी नीति की बातों का वर्णन किया था जो जीवन में नैतिक आचरण तथा शारीरिक विकास के लिए लाभदायक थीं परन्तु उनको यहाँ दुहराना बेकार है।

जहाँ तक मेरा अपना विचार है मैं ऐसा सोचने से अपने को न रोक सका कि यहाँ सभी लोग नैतिकता पर भाषण देने की क्षमता रखते हैं। वास्तव में यह मामला

असंतोष और पश्चात्ताप का है कि हम लोग प्रकृति से संघर्ष करते हैं। मैं बहुत छान-बीन के बाद इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि वे संघर्ष अनुचित और आधारहीन दिखाये जाते हैं जैसा कि हम लोगों के बीच हुआ करता है।

जहाँ तक फौज का मामला है ये लोग गर्व करते हैं कि इनके राजा के पास छिहत्तर हजार एक सौ पैदल सेना है और बत्तीस हजार घोड़सवार हैं। परन्तु क्या हम इसे फौज कह सकते हैं जिसमें कई शहरों के व्यापारियों और देहात के किसानों को भर्ती कर लिया गया हो, जिसके सेना-पति केवल सामंत और सम्भ्रांत व्यक्ति ही हों ? जिन्हें वेतन या पुरस्कार के बिना ही रक्खा जाता हो? शायद इन लोगों को काफी अच्छी सैनिक शिक्षा दी जाती होगी और कड़े अनुशासन में रक्खा जाता होगा अन्यथा मैंने उनमें और कोई भी योग्यता न देखी। जहाँ प्रत्येक किसान अपने जमींदार के अधीन है, जहाँ प्रत्येक नागरिक अपने शहर के प्रमुख व्यक्ति के अधीन है जिसका चुनाव वेनिस की तरह गुप्त मतदान शलाका पद्धित से होता है। वहाँ इसके अलावा और हो ही क्या सकता था?

मैंने प्रायः लोरब्रुलग्रड की फौज को शहर के पास बीस मील लम्बे-चौड़े बड़े मैदान में कवायद करते हुए देखा है। ये लोग पच्चीस हजार पैदल और छः हजार घुड़सवारों से अधिक न थे परन्तु इन लोगों की गिनती करना बिल्कुल असम्भव था क्योंकि ये लोग इतनी जगह घेरे थे कि उसका

देखना तक मेरे लिए असंभव था। एक बड़े घोड़े पर चढ़ा हुआ सिपाही नब्बे फुट के करीब रहा होगा। मैंने इन घुड़-सवारों को आज्ञा मिलने पर अपनी तलवार फौरन निकाल-कर हवा में घुमाते हुए देखा है। इतने महान् अद्भुत और आश्चर्यजनक दृश्य के बारे में विचार एवं कल्पना भी नहीं की जा सकती। उस समय ऐसा मालूम हो रहा था कि मानो आकाश के प्रत्येक कोने से हजारों बिजलियाँ चमक कर आँखों को चकाचौंध कर रही हैं।

मुझे यह जानने की बड़ी उत्सुकता थी कि ऐसे राजा को जिसका सम्बन्ध किसी अन्य देश से नहीं है फौज रखने या अपने लोगों को सैनिक अनुशासन में रखने का विचार कैसे आ गया। परन्तु मुझे जल्दी ही उनकी बातचीत और इतिहास से मालूम हो गया कि कई युगों के दौरान में यहाँ के लोगों को भी उसी बीमारी का शिकार होना पड़ा जिसका कि सम्पूर्ण मानव जाति हो चुका है। बहुधा नवाब शक्ति के लिए, जनता स्वतंत्रता के लिए और राजा पूर्ण उपनिवेशों के लिए स्पर्धा किया करते थे, परन्तु देश के नियमों के अनुसार इन सब दलों का सामंजस्यपूर्ण मेल हो जाता था। कभी-कभी ये दल दूसरे के भड़काने से लड़ बैठते थे और कई बार तो गृह-युद्ध तक की नौबत भी आ गई थी परन्तु सबसे आखिरी गृह-युद्ध को राजा के बाबा ने अत्यंत वीरता, सरलता और प्रसन्नता से अंत कर दिया था। इसके बाद ही सब लोगों की राय से सार्वजनिक फौज को अत्यंत अनुशासित ढंग से रखना प्रारम्भ कर दिया गया।

(८)

मेरे हृदय में यह आशा सदैव विद्यमान रहती थी कि किसी समय मैं स्वतंत्र अवश्य हो जाऊँगा यद्यपि यह सोचना बिल्कुल बेकार सा था कि स्वतंत्रता मिलने का साधन अथवा योजना किस प्रकार की होगी। जिस जहाज के द्वारा मैं यहाँ तक आया था वह पहली बार ही यहाँ के समुद्री तट पर देखा गया था। राजा ने यह कठोर आज्ञा दे रक्खी थी कि यदि उसी तरह का कोई जहाज दूसरा किसी भी समय दिखाई पड़ जाय तो उसे किनारे पर लाया जाय और उसके सब यात्रियों और सामान को ठेले पर लादकर लोरब्रुलग्रड लाया जाय। मेरे साथ तो बहुत दया का बर्ताव किया गया। मैं एक महान् राजा तथा रानी का मुँहलगा और सारे दरबार को आनन्द देनेवाला मनुष्य था परन्तु यह भी ऐसी स्थिति में था कि मनुष्य जाति के गौरव को कम और बदनाम करनेवाला ही था। अपने घर में किये हुए वादों को मैं कभी नहीं भूल पाता था। मैं उन लोगों के साथ रहना चाहता था जिनके साथ मैं सड़कों या खेतों में निश्चित होकर घूम सकूँ न कि पिल्ले या मेढक की भाँति कुचल जाने का भय लेकर भ्रमण करूँ, परन्तु आशा के विपरीत मेरे छुटकारे का समय बहुत जल्दी ही आ गया और वह भी इस तरीके से आया कि उसे बहुत साधारण भी नहीं कहा जा सकता है। इस घटना की पूरी कहानी मैं सही-सही और स्वामिभक्ति के साथ बतलाऊँगा।

इस देश में आये हुए मुझे दो वर्ष व्यतीत हो चुके थे और तीसरे वर्ष की शुरुआत थी। राजधानी के दक्षिणी समुद्री किनारे की एक यात्रा में मैं और ग्लमडेलक्लिच महाराज तथा महारानी के साथ थे। पहले की तरह मुझे सफरी बक्स में ले जाया जा रहा था। जैसा कि मैं पहले बता चुका हूँ कि बारह फुट चौड़ा यह कमरा अत्यंत सुविधाजनक था। जब नौकर मुझे लिए हुए घोड़े की पीठ पर जा रहा था तो मैंने हुक्म दिया था कि रेशमी डोरियों के द्वारा कमरे में एक झूला डाल दिया जाय जिससे मैं धक्के से बच सकूँ। जब कभी मेरी इच्छा होती थी तो सड़क पर जाते समय मैं झूले में सो जाता था। अपने कमरे की छत में झूले के बीच से कुछ हटकर मैंने एक फुट का छेद बनाने का हुक्म बढ़ई को दे दिया था। गर्मी के मौसम में इस छेद के द्वारा मैं सोते समय साँस लेता था। इस छेद को इच्छानुसार कभी-कभी बन्द भी कर देता था। एक तख्ता उस छेद के ऊपर लगा था जो नाली से आगे पीछे हट जाता था।

जब हम लोगों की यात्रा समाप्त हुई तो राजा ने फ्लेनफ्लोश्नक शहर के एक महल में कुछ दिन रहने का विचार किया। यह शहर समुद्र के किनारे से १८ (अंग्रेजी) मील दूरी पर बसा था। ग्लमडेलक्लिच और मैं बहुत थक गया था। मुझे सर्दी लग गई थी परन्तु बेचारी लड़की इतनी बीमार हो गई थी कि वह कमरे से निकलती ही न

थी। समुद्र को देखने की मेरी तीव्र अभिलाषा थी। क्योंकि इसी के द्वारा अवसर मिलने पर मैं यहाँ से भाग सकता था। मैंने बहुत अधिक बीमार होने का बहाना किया और एक लड़के के साथ जो मेरा प्रिय और विश्वासपात्र था समुद्र की ताजी हवा लेने की अनुमति माँगी। मैं कभी नहीं भूल सकता कि कितनी अनिच्छा से ग्लमडेलक्लिच इस बात पर राजी हुई थी। उस लड़के को मेरा भार सौंपते समय उसकी आँखों में आँसुओं की बाढ़ सी आ गई थी। ऐसा मालूम होता था कि आगे जो कुछ होनेवाला है उसका इसे आभास हो गया था। उस लड़के ने मेरे बक्स को उठा लिया और आध घण्टे में समुद्र के किनारे की चट्टानों के पास आ गया। मैंने उसे हुक्म दिया कि वह मुझे बिठाल दे। कमरे की एक खिड़की के परदों को उठाकर मैंने निराशा से समुद्र को कई बार देखा। मेरी हालत उस समय कुछ ठीक न थी। मैंने लड़के से बतलाया कि मेरी इच्छा झूले में सोने की है। क्योंकि इससे मेरे स्वस्थ हो जाने की आशा है। मैं भीतर चला गया। लड़के ने खिड़की बन्द कर दी जिससे मुझे सर्दी न लगे। मैं जल्दी ही सो गया और मेरे विचार से वह लड़का मेरे सोने के समय संभवतः किसी प्रकार का भय न देखकर चिड़ियों के अण्डे ढूँढ़ने चट्टानों में चला गया होगा क्योंकि इसके पहले मैंने अपनी खिड़की से उसे अंडा ढूंढ़ते और एक या दो अंडों को चट्टानों की दरारों से उठाते देखा था। मैं अपने कमरे के ऊपर के जोर के धक्के

से जग गया। ले जाने की सुविधा के लिए यह मेरे कमरे के ऊपर लगाई गई थी। मुझे ऐसा मालूम हुआ कि बक्स बहुत ऊँचाई पर उठ आया है और बड़ी तेज गति से आगे उड़ा जा रहा है। पहले धक्के से मैं अपने झूले पर काँप गया, परन्तु धीरे-धीरे अब हिलना काफी कम हो गया था। मैंने अपनी ताकत भर कई बार बड़े जोरों से आवाज लगाई परन्तु उसका कुछ नतीजा न हुआ। मैंने अपनी खिड़कियों की ओर देखा, परन्तु आसमान और बादलों के अलावा कुछ भी दिखाई न पड़ा। मैंने अपने सर के ठीक ऊपर पंखों के फड़फड़ाने की सी आवाज सुनी और इसके बाद अपनी दयनीय दशा के बारे में सोचने लगा कि किसी बड़ी चील ने मेरे बक्स को अपनी चोंच से उठा लिया है और शायद उसकी इच्छा है कि घोंघेवाले कछुए की तरह मुझे किसी चट्टान पर पटककर बक्स के टूट जाने पर वह मुझे खा जायगा। यद्यपि मैं दो इंच चौड़े लकड़ी के तख्ते में छिपा हुआ था तो भी पक्षी ने अपनी तेज बुद्धि तथा सूँघने की शक्ति से बहुत दूर से खोज लिया था।

कुछ समय के बाद मुझे ऐसा मालूम हुआ कि पंखों की फड़फड़ाहट बहुत बढ़ गई है और मेरा बक्स, तेज हवा चलनेवाले दिन में पत्ते की भाँति ऊपर-नीचे घूम रहा है। मैंने कई आवाजें मारने या पीटने की सी सुनी। मेरा विचार है कि मार उस चील पर ही पड़ी थी जो मेरे बक्स को अपनी चोंच में लिये जा रही थी। इसके बाद एकाएक मैं

सीधे एक मिनट तक नीचे गिरता रहा। मेरे नीचे गिरने की चाल इतनी तेज थी कि मेरे होश ठिकाने न रहे। एकाएक बड़े भयंकर छपाक की आवाज के साथ मेरा नीचे गिरना समाप्त हुआ। उस समय नियागरा झील से भी अधिक तेज आवाज पैदा हुई थी। इसके बाद करीब एक मिनट तक मैं बिल्कुल अँधेरे में रहा और फिर उसके बाद मेरा बक्स इतना ऊपर उठा कि खिड़कियों के सिरों से मुझे रोशनी दिखाई पड़ने लगी। मैं समुद्र में गिर पड़ा था। मेरा बक्स, शरीर और दूसरा सामान तथा लोहे की चौड़ी पट्टियों (जो मजबूती के लिए चारों कोनों पर लगाई गई थीं) आदि के भार से करीब पाँच फीट गहरे पानी में मैं उतर रहा था। जिस समय वह चील मुझे लिये उड़ी जा रही थी दो या तीन और चीलों ने उसका पीछा किया था और उसे बाध्य होकर, दूसरी चील से अपनी रक्षा करने के लिए मुझे छोड़ देना पड़ा था। लोहे की बहुत मजबूत तख्तियों ने जो बक्स के फर्श पर लगी थीं, समुद्र में गिरने के समय बक्स को टूटने और उलटने-पलटने से बचा लिया। कमरे का हर जोड़ बहुत मजबूती से बनाया गया था। दरवाजा कब्जों से नहीं वरन् पटरों की भाँति ऊपर-नीचे खुलता था। इससे मेरा कमरा इतना कसा था कि बहुत कम पानी वहाँ आ सका था। बड़ी मुश्किल से मैं अपने झूले से उतर पाया और सबसे पहले मैंने अपने कमरे की छत की खिड़की को जिसके बारे में मैं पहले बता चुका हूँ खोला जिससे

हवा भीतर आ सके। हवा की कमी से मेरा दम घुटा सा जा रहा था।

उस समय मैंने कई बार प्यारी ग्लमडेलक्लिच के साथ होने की इच्छा महसूस की। एक घंटे में ही मैं उससे कितनी दूर हो गया था। मैं सच कहता हूँ कि उस मुश्किल के समय में भी उस बेचारी नर्स पर मुझे तरस आ रहा था। मेरे खो जाने पर उसे कितना दुख उठाना पड़ेगा। रानी उससे रुष्ट हो जायगी और उसकी तो तकदीर ही फूट जायगी। संभवतः बहुत से यात्रियों को मेरी ऐसी दशा में अनेक मुसीबतों और दुख का सामना करना पड़ा होगा। हर समय यही डर लगा रहता था कि मेरे बक्स के कहीं टुकड़े-टुकड़े न हो जायँ। किसी तूफान या उठती हुई लहर से मेरा बक्स उलट न जाय। शीशे की एक किरच टूटने का मतलब मेरी तत्काल मृत्यु थी। यात्रा के समय दुर्घटना से बचने के लिए खिड़कियों में बाहर से तारों की मजबूत जाली लगी थी। मैंने देखा कि कई छेदों से धीरे-धीरे पानी निकल रहा है यद्यपि वे छेद बहुत छोटे थे तथापि अपनी सामर्थ्य भर मैंने उनको बन्द करने का प्रयत्न किया। मैं अपने कमरे की छत को ऊपर उठाने के योग्य न था नहीं तो अवश्य मैंने वही किया होता और उसके सिरे पर बैठा होता जहाँ बैठकर उस बंद कमरे से कुछ घंटे अधिक अपनी जिन्दगी का अंतिम समय व्यतीत कर सकता। यदि मैं इन खतरों से एक या दो दिन बच भी जाता तो ठंढ और

भूख के मारे दयनीय दशा में होकर मर जाता । मैं चार घण्टे तक इसी दशा में रहा और हर एक क्षण को अपना अंतिम क्षण समझता रहा ।

मैं पाठकों को यह पहले बता चुका हूँ कि मेरे बक्स में जिस तरफ कोई खिड़की नहीं थी दो मजबूत हुक लगे हुए थे । इन्हीं दोनों हुकों में चमड़े की पेटी फँसाकर नौकर घोड़े की पीठ पर बैठकर मुझे ले जाता था । पेटी को वह अपनी कमर में बाँध लेता था । इसी निराश दशा में मैंने हुकोंवाली तरफ से एक आवाज सुनी और जल्दी ही मुझे ऐसा मालूम होने लगा कि बक्स समुद्र में ढकेला जा रहा है । क्योंकि उस समय मुझे खींचे जाने की सी आवाज सुनाई पड़ रही थी और इसके कारण लहरें उठकर मेरी खिड़कियों के पास आ रही थीं । मैं कुछ समय तक करीब-करीब अँधेरे में रहा । असमर्थ होते हुए भी मुझे मदद मिलने की थोड़ी सी आशा हुई । मैंने यह सोचकर अपनी एक कुर्सी के पेंचों को ढीला करने का साहस किया । मेरी सब कुर्सियाँ फर्श में जड़ी हुई थीं ? उस कुर्सी को मैं ढकेल कर छेद के ढक्कन के ठीक नीचे ले आया । इस ढक्कन को मैंने अभी ही खोला था । मैं कुर्सी पर चढ़ा और अपनी ताकत भर मुँह को छेद के निकट ले जाकर मदद के लिए सभी भाषाओं में बड़ी जोर से आवाजें लगाईं । इसके बाद मैंने अपना रुमाल एक छड़ी (जिसे मैं साधारणतया लिए रहता था) में फँसाकर छेद के बाहर निकालकर कई बार

हवा में हिलाया जिससे पास-पड़ोस की नाव या जहाज के आदमी यह जान जायँ कि कोई दुखी आदमी इस बक्स में बन्द है।*

जो कुछ भी मैंने किया उसका कुछ भी प्रभाव मुझे दिखाई न पड़ा। परन्तु मुझे यह साफ दिखाई पड़ा कि मेरा कमरा और आगे बढ़ रहा है और एक घंटे या उससे कुछ अधिक देर के बाद मुझे मालूम हुआ कि हुकोंवाले कमरे का सिरा, जिस तरफ कोई खिड़की न थी एक कड़ी चीज से टकराकर चिपक सा गया है। मैंने इसे एक चट्टान समझा और अपने को पहले से भी अधिक बुरी हालत में अनुभव किया। अपने कमरे के ढक्कन के पास मैंने तार की साफ आवाज सुनी जो कमरे के ऊपर लगी घंटी से रगड़ कर पैदा हो रही थी। धीरे-धीरे मैंने अपने को पहले से तीन फीट ऊपर उठते पाया। इस पर मैंने फिर दुबारा अपने रूमाल को छड़ी में बाँधकर मदद के लिए जोर से तब तक शोर मचाता रहा जब तक कि मेरी आवाज कड़ी और भारी न हो गई। इसके जवाब में मैंने तीन बार जोर-जोर से आवाजें सुनी। उस समय मुझे जो आनन्द हुआ वह केवल वही अन्दाजा लगा सकते हैं जो उसके बारे में सोच सकते हैं। मैंने अब अपने सर के ऊपर चलने-

---

*अरेबियन नाइट्स इन्टरटेनमेन्ट का पहला अंग्रेजी अनुवाद गुलीवर के बाईस वर्ष पूर्व १७०४ में प्रकाशित हुआ था। यहाँ ऐसा मालूम होता है कि स्विफ्ट महोदय ने संभवतः चीलवाली घटना 'सिंदबाद दि सेलर' से ली है।

फिरने की आवाज सुनी। तेज आवाज से कोई आदमी अंग्रेजी भाषा में कह रहा था कि यदि कोई नीचे आदमी हो तो बोले। मैंने उत्तर दिया कि मैं एक आभागा अंग्रेज हूँ। दुर्भाग्य-वश बड़ी मुसीबत में पड़ गया हूँ। मेरे समान किसी दूसरे जीवधारी ने ऐसी तकलीफें नहीं उठाई होगी। और फिर बड़ी नम्रता से प्रार्थना की कि मुझे इस काल-कोठरी से मुक्त कर दीजिए। उस आवाज ने उत्तर दिया कि मैं सुरक्षित हूँ और मेरा बक्स जहाज से बाँध दिया गया है। बढ़ई जल्दी आ गया और उसने बहुत बड़ा छेद देखा जिससे वह मुझे बाहर खींच लेना चाहता था। किन्तु मैंने यह जवाब दिया कि यह बेकार है। इसमें बहुत समय लगेगा। वहाँ और अधिक काम नहीं करना था। मल्लाहों के जत्थे में से एक ने अपनी उँगली कमरे की ऊपर वाली घंटी में डालकर उसे समुद्र से जहाज में ले आया और इसके बाद कप्तान के कमरे में ले आया। कुछ लोग मुझे जल्दी-जल्दी बात करते देखकर यह सोचने लगे कि मैं पागल हूँ। दूसरे लोग भी हँस रहे थे। उस समय वास्तव में मेरे दिमाग में यह बात नहीं आयी थी कि अब मैं अपनी ही तरह की आकृति और शक्तिवाले लोगों के बीच में आ गया हूँ। बढ़ई आया और कुछ मिन्टों में उसने चार फुट वर्गाकार का एक रास्ता बना दिया। एक छोटी सीढ़ी उसमें डाल दी गई, मैं उस पर चढ़ा और फिर मुझे कमजोरी की हालत में जहाज पर लाया गया।

नाविकों को अत्यन्त आश्चर्य था। वे मुझसे हजारों प्रश्न पूछने लगे जिनका उत्तर देने की मेरी बिल्कुल इच्छा नहीं थी। मैं इतने छोटे-छोटे बौनों को देखकर स्वयं स्तम्भित हो रहा था। बड़े-बड़े दानवाकार मनुष्यों के साथ रहकर वे उन्हें देखने के अभ्यासी होने के कारण मैंने इन लोगों को बौना ही समझा। परन्तु जहाज के कप्तान श्री थामस विलकाकस एक अत्यंत ईमानदार और योग्य व्यक्ति थे। आप शार्प शायर के निवासी थे। जब उन्होंने देखा कि मैं बेहोश हो जाने के करीब हूँ तो वह मुझे अपने कमरे में ले गये। उन्होंने मेरी बड़ी आवभगत की और मुझे दिलासा दिया। अपने बिस्तर के पास ले जाकर मुझे कुछ देर तक आराम करने की सलाह दी। मेरे लिए उस समय इसकी बहुत आवश्यकता थी। सोने के पूर्व मैंने उसे समझाया कि बक्स में मेरा लकड़ी का कुछ कीमती सामान है जो योंही देने योग्य नहीं है। एक सुन्दर झूला, एक मैदान का बिस्तर, दो कुर्सियाँ, एक मेज और एक छोटा बक्सा उसमें रक्खा है। मेरा कमरा चारों तरफ से ढका हुआ है और रेशमी तथा सूती कपड़े से चारों तरफ तकिया लगी है। यदि कोई मल्लाह उस बक्स को इस कमरे में ले आये तो मैं अपनी सब चीजें उसे दिखा दूँ। कप्तान मुझे इस तरह की बेवकूफी की बातें करते देखकर इस नतीजे पर पहुँचा कि मैं बक रहा हूँ। किसी तरह (शायद मुझे शांत करने के लिए) उसने मुझसे वादा किया कि मेरी इच्छानुसार ही आज्ञा दे दी जायगी। डेक

पर जाकर उसने कुछ आदमियों को मेरे कमरे के अन्दर घुसने के लिए भेजा। मुझे बाद में पता चला कि उन लोगों ने मेरा सारा सामान उसमें से बाहर निकाल लिया और चारों तरफ लगे गद्दों को भी उखाड़ लिया परन्तु कुर्सी अलमारी और विस्तर जमीन में जड़े होने के कारण, मल्लाहों की बेवकूफी के कारण काफी बरबाद हो गई थी। उन लोगों ने इन सब चीजों को ताकत से खींचकर उखाड़ लिया था। जहाज के इस्तेमाल के लिए उन लोगों ने कुछ तख्तों को भी उखाड़ लिया। अपनी इच्छानुसार दूसरी वस्तुओं को निकालकर उन लोगों ने बक्स के ढाँचे को समुद्र में फेंक दिया, पेंदी तथा किनारों पर कई छेद हो जाने के कारण वह डूब गया। वास्तव में मैं बहुत प्रसन्न था कि मेरे सामने ही यह सब नहीं किया गया था। इन सब बातों ने मुझे अवश्य ही प्रभावित किया होता। मैं तो उन बातों को करीब-करीब भूल ही जाना अधिक पसंद करता था।

मैं कुछ घंटों तक सोता रहा परन्तु छूटे हुए देश के सपनों से मैं घबड़ा गया। स्वप्न में मैंने उन खतरों को भी देखा था। जिनसे बचकर मैं भाग निकला था। किसी तरह जागने के बाद मैंने अपने को अच्छी हालत में पाया। इस समय रात के करीब आठ बजे थे। कप्तान ने फौरन शाम के भोजन के लिए आदेश दिया। उसने सोचा कि मैं अरसे से भूखा हूँ। अतः अत्यंत दयालुता के साथ उसने मेरा

सत्कार किया। उसने यह भी देखा अब मैं जंगलियों की तरह न तो इधर उधर ताकता हूँ और न बिना रुके हुए बात ही करता हूँ। जब हम केवल दो ही लोग रह गये तो उसने मेरी यात्रा तथा किस कारण और किस तरह मैं इस लकड़ी के अजीब बक्स में बन्द करके बहा दिया गया आदि बातें जानने की इच्छा प्रकट की। दोपहर में करीब बारह बजे जब कि वह चश्मे के द्वारा समुद्र को देख रहा था तो कुछ दूरी पर उसे एक चीज दिखाई पड़ी। उसने उसको एक नाव समझा। यह उसके रास्ते से बहुत दूर न थी। उस के बिस्कुट खत्म हो चले थे अतः खरीदने के लिए वह उसके नजदीक जाना चाहता था। नजदीक आने पर अपनी गलती मालूम हुई किन्तु उसने यह पता लगाने के लिए कि वह क्या चीज है, अपनी एक बड़ी नाव भेजी। उसके आदमी भयभीत होकर वापस लौट आये। उन्होंने बताया कि एक तैरता हुआ मकान देखा है। इन लोगों को बेवकूफी की बात सुनकर वह हँसा और अपने आदमियों को मजबूत तार ले आने की आज्ञा दी और स्वयं नाव पर उन आदमियों के साथ गया। मौसम शांत होने के कारण उसने मेरे चारों ओर कई चक्कर लगाये और मेरी खिड़कियों तथा उनकी रक्षा के लिए लगी तार की जाली को देखा। उसने एक ओर दो हुक लगे देखे। पूरा मकान लकड़ी के तख्तों से बना था। रोशनी जाने के लिए कोई रास्ता भी न था। इसके बाद उसने अपने आदमियों को उस तरफ जाने की

आज्ञा दी। और एक हुक में तार फँसाकर उन लोगों को मेरा बक्स जहाज की ओर खींच ले चलने की आज्ञा दी। जब वह वहाँ पहुँच गया तो उसने आज्ञा दी कि दूसरे हुक से ढक्कन में लगे छल्ले से दूसरा तार डालकर गिर्रियों के द्वारा बक्स को ऊपर उठाया जाय। सब मिलकर भी उसे दो या तीन फुट से अधिक ऊपर न उठा सके। उसने बतलाया कि छेद के ऊपर उसने मेरी छड़ी और रूमाल को निकले हुए देखा था और यह अंदाजा लगाया था कि अवश्य कोई दुखी आदमी इस खोल में बन्द कर दिया गया है। मैंने उससे पूछा कि क्या उसने या उसके आदमियों ने पहली बार बक्स देखने के समय बड़ी चीलों को उड़ते देखा था? इस पर उसने उत्तर दिया कि मेरे सो जाने पर उसने इस बारे में अपने आदमियों से बातचीत की थी। उनमें से एक ने बतलाया था कि उसने उत्तर की ओर तीन चीलों को उड़ते देखा था। परन्तु साधारण चीलों की आकृति से बड़ी होने की कोई बात नहीं बतलाई। मेरे विचार से अधिक ऊँचाई और दूरी पर उड़ने के कारण वह उनके बड़े होने की बात को नहीं देख पाया। इसके बाद मैंने कप्तान से पूछा कि पृथ्वी से वह कितनी दूर है। उसने अपनी समस्त योग्यता से हिसाब लगाकर उत्तर दिया कि हम लोग एक सौ लीग पृथ्वी से दूर हैं। परन्तु मैंने उसे समझाया कि वह आधे की गलती पर है, क्योंकि जिस देश से मैं आया हूँ उसे मैंने समुद्र में गिरने से दो घंटे पहले छोड़ा था। इस पर उसने सोचा कि मेरा दिमाग ठिकाने नहीं है। और सलाह

दी कि उसके द्वारा दिये गये कमरे में मैं आराम करूँ। मैंने उसे बतलाया कि उसके द्वारा किये गये सुन्दर सत्कार से मैं अब बिल्कुल ठीक और प्रसन्नचित्त हो गया हूँ। अब मेरी हालत, होश-हवाश सभी अच्छे हैं। इसके बाद वह अत्यंत गम्भीर हो गया और मुझसे यह जानने की इच्छा प्रकट की कि क्या किसी घोरतम अपराध करने के कारण किसी राजा ने मुझे इस तरह का दण्ड देकर मुझे इस तरह कमरे में बंद कर दिया? दूसरे देशों में बड़े अपराधियों को ही छेदवाली नावों में बिठलाकर बिना भोजन-पानी दिये हुए ही समुद्र में छोड़ दिया जाता है। उसने कहा कि उसे अत्यंत दुख है, उसने ऐसे अपराधी को जहाज में रख लिया है। उसने निश्चय कर लिया है कि सबसे पहले आने-वाले बन्दरगाह पर वह मुझे सुरक्षित उतार देगा। उसने बतलाया कि उनकी शंकाएँ उस समय बहुत बढ़ गई थीं जब मैंने पहले मल्लाहों से और बाद में अपने कमरे के बारे में बेवकूफी की बातें की थीं। सायंकाल का खाना खाते समय भी मेरा व्यवहार और हाव-भाव उसे अत्यंत विचित्र मालूम हुए थे।

मैंने उससे धैर्यपूर्वक अपनी कहानी सुनने के लिए प्रार्थना की जिसको मैंने बड़ी ही सच्चाई और स्वामिभक्ति से इंग्लैंड छोड़ने से लेकर उस समय तक की कहानी सुनाई, जब उसने मुझे इस दशा में खोज निकाला था। विचारवान् पुरुषों को सत्य बहुत जल्दी प्रभावित कर लेता है। अतः

उस योग्य ईमानदार भलेमानुस को मेरी सच्चाई और दयनीय दशा पर फौरन विश्वास हो गया। यह आदमी बहुत समझदार और विद्वान् था। परन्तु जो कुछ भी मैंने बतलाया है उसकी सत्यता के प्रमाण के लिए मैंने उससे प्रार्थना की कि वह मेरा बक्स ले आने की आज्ञा अपने नौकरों को दे। उसकी चाभी मेरे पास जेब में है। क्योंकि उसने मुझे पहले ही बता दिया था कि नाविकों ने किस तरह मेरे कमरे की अन्त्येष्टि क्रिया कर दी है। मैंने उसकी उपस्थिति में उस बक्स को खोला और अपने द्वारा उस देश की बनाई हुई अनोखी चीजों को दिखाया। एक कंघा जिसे मैंने उस देश के राजा की दाढ़ी के बालों से बनाया था, एक दूसरा कंघा जो इसी चीज का बना हुआ था मैंने, इस बक्स से निकाला। इसका पिछला भाग महारानी के अँगूठे के नाखूनों से बनाया गया था। उस बक्स में कुछ सूइयों और आलपीनों का संग्रह था जो एक फिट से लेकर एक गज तक लंबी थी। बर्रों के चार डंक बढ़ई की डोरी की तरह के थे। महारानी के बालों के द्वारा बनाये गये कुछ और कंघे थे। सोने की एक अँगूठी भी थी। एक दिन रानी ने मुझे यह अँगूठी उपहार रूप में अपनी छोटी उँगली से निकालकर अत्यंत आदर के साथ मेरे सर में माला की तरह डाल दी थी। मैंने इच्छा प्रगट की कि कप्तान महोदय यह अँगूठी उपहार तथा सत्कार के लिए मेरी तरफ से उपहार के रूप में स्वीकार कर लें। परन्तु उसने साफ इन्कार कर दिया। इसके बाद मैंने उसको एक छल्ला दिखाया

जो केंट देश के सेब के बराबर था। इसे मैंने स्वयं लड़की के पैर के अँगूठे से निकाला था। और वह इतना सख्त था कि मैंने इंगलैंड लौटकर उससे एक चाँदी का कप और टी सेट बनवाया था। अन्त में मैंने उसे अपना पैजामा जो पहने था, दिखलाया। वह चूहे की खाल का बना हुआ था।

मेरे बहुत कहने पर भी उसने मेरी कोई भी चीज केवल एक आदमी के दाँत को छोड़कर, लेने को तैयार न हुआ। मैंने देखा था कि वह उस दाँत को उत्सुकता के साथ गौर से देख रहा था जिससे मुझे मालूम हो गया कि वह उसे पसंद है। उसने उस छोटी और मामूली वस्तु को धन्यवाद देकर ले लिया। यह दाँत एक नौसिखिया डाक्टर के द्वारा गलती से ग्लमडेलक्लिच के एक आदमी के मुँह से निकाला गया था। उसे दाँत का दर्द बहुत जोरों से सता रहा था। परन्तु दाँत अन्य दाँतों की तरह बिल्कुल ठीक था। मैंने इसे साफ किया था और अपने बक्स में रख लिया था। यह दाँत एक फुट लम्बा और चार इंच वृत्ताकार था।

कप्तान को मेरी बताई हुई सारी बातों पर पूर्ण संतोष तथा विश्वास हो गया। उसने कहा कि इंगलैंड लौटने पर यदि मैं इस यात्रा को लिखकर जनता के सम्मुख लाऊँ तो सारा संसार मेरा कृतज्ञ होगा। मैंने उत्तर दिया कि हम लोगों के पास यात्रा की पुस्तकों की भरमार है फिर इसमें कोई बात भी नहीं जो अद्भुत और विशेष हो। मैंने शंका की

कि कुछ लेखक सत्यता की अपेक्षा अपने घमंड और अहंभाव या अज्ञानी पाठकों के मनोरंजन की अधिक परवाह रखते हैं। मेरी कहानी में केवल कुछ साधारण घटनायें होंगी और उसमें अजीब पेड़-पौधों, चिड़ियों और दूसरे जानवरों या असभ्य लोगों के रीति-रिवाज या उनकी मूर्तिपूजा के बारे में नीरस शब्दों में बिना किसी अलंकार के सब बातें लिखी होंगी। आजकल अधिकांश लेखक इन्हीं बातों के विषय में लिखते हैं। फिर भी मैंने उसकी उत्तम सलाह के लिए उसे धन्यवाद दिया और उससे वादा किया कि इसके बारे में विचार करूँगा।

उसने कहा कि उसे इस बात का बहुत ताज्जुब है कि मैं इतनी जोर से क्यों बोलता हूँ? जिस देश में मैं रहा था क्या वहाँ के राजा तथा रानी कुछ ऊँचा सुनते थे? मैंने उससे बतलाया कि पिछले दो सालों से मैं इसी बात का अभ्यासी हूँ और यहाँ तक कि अब मैं उसके और उसके साथियों को केवल फुसफुसाते ही समझता हूँ। यद्यपि मैं उन सब लोगों की बात ठीक तरह से समझ लेता हूँ। तथापि जब मैं उस देश में बोलता था तो ऐसा मालूम होता था कि एक आदमी सड़क पर एक मीनार की चोटी से दूसरे आदमी से बात कर रहा है। या जब तक मुझे किसी मेज पर बिठला न दिया जाय या कोई आदमी मुझे अपने हाथ में न ले ले, कोई यह नहीं कह सकता था कि दो आदमी बात कर रहे हैं। मैंने उससे बतलाया कि जब मैं

पहले जहाज पर लाया गया तो जो नाविक और मल्लाह मेरे चारों ओर खड़े थे मैंने उनको अत्यंत घृणित, छोटे-छोटे जीवधारी समझा जिन्हें मैंने पहले कभी नहीं देखा था। वास्तव में जब तक मैं इस राजा के देश में रहा हूँ कभी भी मुझे आईना देखने का मौका नहीं मिला और मेरी आँखें तो दानवाकार मनुष्यों को देखने की अभ्यस्त थीं। दोनों की तुलना करने से मुझे अपने बारे में बहुत धोखा हो गया। कप्तान ने भी मुझे बतलाया कि जिस समय हम लोग सायंकाल का भोजन कर रहे थे उसने मुझे सारी चीजों को ताज्जुब से देखते हुए पाया था। और मुश्किल से वह अपनी हँसी को रोक पा रहा था। उसे उस समय यह मालूम न हो सका कि मेरा हाल ऐसा क्यों है; परन्तु उसने यह अंदाज लगाया कि मेरे दिमाग में कुछ खराबी है। मैंने उत्तर दिया कि यह बिल्कुल सही है और ताज्जुब है कि मैं उसकी चाँदी के तीन पैसेवाले सिक्के की आकार की तशतरी केवल एक ही कौर के बराबर, हंस के पैर का गोश्त नारियल की गरी के बराबर के एक प्याले को देखकर अपने को रोक कैसे सका। इसी तरह मैंने उसके घर के बाकी और सामान के बारे में भी बतलाया जब कि मैं महारानी की नौकरी में था। जरूरी सामान बहुत छोटे आकार के बनवा दिये थे तथापि अपने चारों ओर लगे हुए सामान को देखकर मेरे विचार भी उसी तरह के हो गये थे। जैसे लोग दोषों को देखते हैं उसी तरह मैं भी अपनी छोटाई पर विशेष ध्यान देता था।

कप्तान ने मेरी दिल्लगी को भली भाँति समझ लिया। उसने खुश होकर एक अंग्रेजी कहावत के साथ उत्तर दिया कि शायद मेरी आँखें मेरे पेट से बड़ी हैं। क्योंकि वह मेरा इतना अच्छा पेट नहीं देख सका जब कि मैं दिन भर का भूखा था। अपनी हँसी-मजाक को बढ़ाते हुए उसने बतलाया कि यदि उसे चील अपनी चोंच में मेरा कमरा लिए हुए दिख जाती या उसके बाद इतनी उँचाई से कमरा समुद्र में गिरता दिखाई पड़ जाता तो उसने खुशी से सौ पौंड दे दिये होते। वास्तव में वह दृश्य बहुत आश्चर्यजनक होता। वह दृश्य इस योग्य होता कि उसका वर्णन करके आगे आनेवाली सन्तानों के लिए छोड़ दिया जाता। फेटन (Phaeton) के साथ बिना मेरी तुलना किये वह न माना फिर भी मुझे यह मिथ्या विचार पसंद न आया।

कप्तान टोक्विन होकर इँगलैंड लौट रहा था परन्तु मेरे जहाज पर आ जाने के दो दिन बाद एक यौमरिक हवा मिल गई। एक लम्बे अर्से तक हम लोग दक्षिण की ओर चलते रहे। न्यू हालैंड के किनारे-किनारे चलकर हम लोगों ने केप आफ गुड होप को पार कर लिया। हम लोगों की यह यात्रा अत्यंत समृद्धिशाली रही, परन्तु मैं पाठकों को इसके बारे में बतलाकर उन्हें कष्ट न दूँगा। कप्तान ने एक दो बन्दरगाहों पर रुककर अपनी बड़ी नाव को पीनेवाले पानी और दूसरा सामान लाने के लिए भेजा। परन्तु मैं कभी भी जहाज छोड़कर न गया। जब तक कि हम लोग

डाउन्स न आ गये। अपने छुटकारों के करीब नौ महीने बाद हम लोग ३ जून १७०६ को यहाँ पहुँचे। किराया देने के लिए मैंने अपना सामान गिरवी रखने के लिए कप्तान से कहा। परन्तु कप्तान ने इसका विरोध किया और कहा कि वह एक पैसा नहीं लेगा। हम लोगों ने एक दूसरे से आनन्दपूर्वक बिदाई ली। और मैंने उससे वादा ले लिया कि वह मेरे घर रेड्रिफ आयेगा। पाँच शिलिंग में मैंने एक घोड़ा और रास्ता बतानेवाला किराये पर लिया। यह रकम मैंने कप्तान से ले ली थी।

जब मैं रास्ते पर जा रहा था तो मकानों, पेड़ों, जानवरों और आदमियों की छोटाई को देखकर सोचने लगा कि मैं लिलीपुट आ गया हूँ। मुझे डर लगा रहता था कि जो यात्री मुझसे मार्ग में मिलता है कहीं कुचल न जाय और अक्सर तो मैं उनसे चिल्लाकर कहता था कि वे रास्ते से हट जायें।

मुझे अपने घर के बारे में पूछना पड़ा। एक नौकर ने दरवाजा खोला। मैं कलहंस चिड़िया की तरह सर झुकाकर दरवाजे से निकला कि कहीं मेरा सर न टकरा जाये। मेरी स्त्री आलिंगन करने के लिए दौड़ी, परन्तु मैंने उसे कुहनी तक ही यह सोचकर रोक लिया कि वह कभी भी मेरे मुँह तक नहीं पहुँच सकती। मेरी लड़की आशीर्वाद लेने के लिए झुकी; परन्तु मैं उसे उस समय तक न देख

पाया जब तक कि वह उठकर खड़ी नहीं हो गई। अभी तक मैं अपना सर और आँखें साठ फुट की ऊँचाई पर टिकाये हुए था और इसके बाद मैंने एक हाथ से कमर पकड़कर उसे उठा लिया। मैं नौकरों को बहुत घृणा से देख रहा था। घर के एक या दो मित्रों को मैंने ऐसे देखा कि मानो वे बौने हैं और मैं एक देव या राक्षस हूँ। मैंने अपनी स्त्री से कहा कि वह बहुत कंजूस हो गई है और बिना किसी कारण अपने तथा लड़की को भूखों रखकर दुबला कर डाला है। जब इन लोगों ने मेरे इस व्यवहार को देखा तो इन लोगों की धारणा भी कप्तान के मत की तरह हो गई; और इस नतीजे पर पहुँचे कि मेरे होश-हवाश गुम हो गये हैं।

थोड़े ही समय में मेरे कुटुम्बवालों और मित्रों को सही बात मालूम हो गई। इस प्रकार मैं अपनी दुर्भाग्यपूर्ण यात्राओं का दूसरा भाग समाप्त कर रहा हूँ।
